SHRI CHARITRAVIJAYJI MEMORIAL BOOK SERIES
Vol No 19

SHREE

BRIHAD DHARNA YANTRA.

સહાયક
શ્રીયુત્ દોશી નાગરદાસ પ્રેમજી
શ્રી પોરબંદરવાળા
DOSHI NAGARDAS PREMJEE
C/o HARKISHANDAS NAGARDAS
1 Nurmal Lohia Lane Calcutta

SECOND EDDITION 500

BY

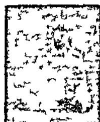
MUNI SHRI DARSHANVIJAYAJI

Published by
MAFATLAL MANEKCHAND
Hony Secretary
S C M B S
Viramgam

Printed by
A S PATEL
at
The Bombay Fine Art Printing Works
56 1, Canning Street,
CALCUTTA

श्री चारित्र स्मारक ग्रंथमाला पु० नं० १६

श्रीबृहद् धारणायंत्र ।



संपादक
मुनि ज्ञानविजय ।

प्रकाशक
श्री चारित्र स्मारक ग्रंथमाला ।
मु॰ वीरमगाम (गुजरात)

मूल्य ८ आणा

वीरनिर्वाणाब्द २४५७
विक्रमाब्द १९८७

कमलधारिवाब्द १३
विष्ववद १९३१

किंचिद्वक्तव्यं

नम श्रीयशोविजयवाचकपादेभ्यः

इहहि जयतिजैनशासनं व्याकरण न्याय साहित्यसिद्धान्त ज्यो प्रमुख विषयाकीर्णग्रन्थैर्वर्तमानसमयेऽपगमेष्य । नतत्रापि काचित् तथापि जिनशासन गौरवाय शासनाभ्युदये 'शुभे यथाशक्ति यतनी- श्रीसंघचरणेषु समुपदा क्रियते धारणागतिर्देशकोयमपि यन्नोऽयं ।

ननु यत्रचित् कादित् काले सरस्वती—सूरिशेखर श्रीगु- प्रमुखाचार्यैः विरचिता परस्परविरुद्धा गहना विद्वद्भोगम्या धारणागति प्राप्यते । न तया निश्चयाऽऽत्मकं ज्ञानं लाभं भवति धाऽनेनाचार्येणायं जिन प्रतिष्ठाप्य इति" ।

सतोऽप्यधि धारणागतिर्दुष्करेति पश्यन्ति सन् दक्षिणद्वेन पा । तदपिमहताऽऽयासेनाधिककालक्षेपेण ॥

एवमेतत्कष्ट प्रयत्नसाध्य विचिन्त्य तेषामेवसूरिपुङ्गवानां वचना- रूपया मुग्धबोधकर सरलो ग्रन्थो वृद्धधारणाम मत्समर्पितो मुनिदर्शनविजयेन ॥

ग्रन्थेऽस्मिन्किं किमस्ति तत्तु ग्रन्थादेवावलोकनीयं विद्वद्भिः ॥

अनेनसर्वोलोक सुखं धारणागतिमवाप्य स्वामोत्सवपूर्वकं जिनं स- वांछितवन्प्राप्स्यति । तदेवमुक्तम ग्रन्थेऽपि — पृष्ट ११

ग्रन्थात् ज्ञानं विधिवद् प्रतिष्ठार्चासुदर्शनम् ।
भास्वरणं नैजर्ध्यं, कमशो भवतु नृणाम् ॥ ११७ ॥

इति

अयं गुर्जरधरायां (गुजरात) वोरसद्ग्रामे श्रीचारित्रस्मारकग्रन्थमाला- क्रमेण मुद्रित एकोनविंशतितमो १९ ग्रन्थश्चिरं नन्दतात् । वितनोतु कल्याणं ॥

महावीर निर्वाणतो २४५७
तस्मिन्वर्षे श्रावणशुक्ल प्रतिपदि शुक्रवारे
महानगरी

इति निवेदयति,
श्रीयशोविजयजैनगुरुकुलस्थ
श्रीचारित्रविजय-चर
मुनि ज्ञानविजय

अंजलि ।

श्रीसिद्धाचलतीर्थराज तिलके, श्रीपादलीप्ते पुरे,
शिष्योपकृतिक यशोविजयजी नामाङ्कितं येन सत्,
श्रीमद्गुणालनिवर्धन गुरुकुल, जैन वर स्थापितम्,
स श्रीसयतपुङ्गवो विजयता, चारित्रराजेश्वर ।

तेषाम्

श्री सिद्धक्षेत्र यशोविजय जैन गुरुकुल

संस्थापकानां मुनिपुङ्गवानां

शासनोद्धारसैन्याद्देशकीनां

मम

दर्शन ज्ञान-चारित्र जीवन दातृणां

आजन्म ब्रह्मचारिणां

श्रीमद् चारित्रविजय गुरुपादानां

चरण सरोजेषु

श्रीबृहद्धारणायंत्र-पुष्पाणि

सप्रेम सादर

समर्पयामि

स्वाहा

इति

श्री ——= शिष्य लेशो

दर्शन विजय

बृहद्धाणायत्र अ० ५ देखनेकी रीतियां।

—— ॰०० ——

अमुक गाव व आचार्य व गृहस्थको कौन सौ तीर्थंकर की प्रतिष्ठा (पूजा) करना चाहिये, सो अध्याय ५ (पृष्ट २१ से ६०) के कोठ से देखना। सो इनि प्रकार—

जिनके जीव देखना हुवे उसि का नाम के आदि अक्षरवाले पृष्ट को देखना जिसमें साधकाक्षर लीया है, जीनेमें २४ तीर्थंकरके नाम सात कर ८ बातेमें तारा नियोद का शुभाशुभ निर्देश कीया है, इनिमें अशुभ तारा, वाचिवैर-कुवैर वगरेह देनेकाविशोपक, अशुभगण गणवैर अशुभ राशि, शत्रु राशि, अनुमान राशि, नाडीवेध और नाडापादवेध अशुभ है। और स्वपानि मैत्रायोनि, योनि, वर्ग होने का विशोपक स्वगण, शुभ राशि, प्रीति, स्वराशि, श्रेष्ठ राशि, श्रेष्ठार व नाडावेध अत्यंत शुभ है उन्हि उत्तम व मध्यम योगवाले तीर्थंकरोकी प्रतिष्ठा करना चाहिये। इनि से जिन मूर्ति प्रभाववाली रहता है वहां से अधिष्ठान होती है चिरकाल तक पूजाती है। प्रतिष्ठापकको भी नाना प्रकार के लाभ होते है।

यद्यपि तीर्थंकरकी धारणामें तारावल महोयम् देखना ठीक है, किंतु गण राशि और नाडी का अवश्य देखना चाहिये, राशि की प्रतिकुलता हो अथवा नाडवेध हो उन्हि की प्रतिष्ठा हरगोज नहीं करना। कारण ! तारा योनि वर्ग किंवा गण राशि और नाडी का बल अधिक अधिक विशेष है। जो जितना योग ज्यादा बलवान् हो उन्हि प्रतिमा की प्रतिष्ठा (पूजा) कराना शुभ है। जैसा कि पृष्ट ३२ क महावीर, तारा, नाडी वर्ग वैर (अशुभ) २ विशोपक देना, देना, मध्यम गण श्रेष्ठतर राशि और वेध। इसिसे बलवत्ता+महावीर शुभ है

इस मुताबिक प्रत्येक कोठे का विचार करके जिन मूर्तिकी अनुकुलता का निर्णय करना।

पृष्ट के नीचे लीया हुए बाते दिशा—शास्त्र में उपयोगी है किंतु जिन प्रतिमा उपयोगी नहीं है। इति शांति।

वृहद्धारणायंत्र-अ० ५, समजवानी रीति

——•००——

अमुक गाम (सघ) स्थापक सूरि अथवा श्रावकने प्रतिष्ठा माटे (पूजा माटे) क्या तीर्थ कर अनुकुळ छे ते पृ० ७६ थी ६० ना कोष्टकथी तपासवु। ते आ प्रमाणे—

जेना माटे जोवु होय तेना नामनो आदिनो अक्षरलइ ते अक्षर वाळु पानु जोवु, तेमा उपर साधकाक्षर लखेल छे अने नीचे २४ तीर्थकरना नामो आपी तारा योनि विगेरे ८ खानामा शुभ अशुभना सकेतो करेल छे, जे पैकीना अशुभतारा योनि—वैर कुवैर वर्गवैर देणानाविश्वा अशुभगण गणवैर अशुभराशि शत्रुराशि अशुभतर राशि नाडीवेध तथा नाडी पादवेध अशुभ छे समानविश्वा मध्यमगण मध्यगराशि तथा राशि मैत्री थयेल मत्रे त्र मध्यम छे अने स्वायोनि मैत्री योनि, °योनि, °वर्ग, लेणाविश्वा स्वगण शुभराशि प्रीति स्वराशि श्रेष्ठराशि श्रेष्ठतर तथा वेध विनानो नाडी ए अत्यत शुभ छे। प्रतिष्ठामा अशुभ तीर्थ करो वर्ज्य छे मध्यम सकेतवाळा मध्यम छे अने अत्यंत शुभ तीर्थ करो सर्वथा अनुकुळ छे तो उत्तम अने मध्यम योगवाळा तीर्थ करोनो प्रतिष्ठा करवी जेथी जिन प्रतिमा प्रभावशाळी थते छे देवाधिष्ठीत रहे छे चिरकाळ पूजाय छे अने प्रतिष्ठापकने पण अनेकविध लाभ थाय छे।

अहीं याद राखवु के माटे भागे तीर्थकरो माटे ताराबळ जोवाना जरुर नथी एटले तारा बल कदाचज जोवाय छे ज्यारे गण राशि अने नाडी तो अवश्य जोवाज जोइए। राशिनी प्रतिकुलता अथवा नाडी वेध होयतो प्रतिष्ठापके ते तीर्थ करना प्रतिष्ठा कोइ रीते करवी नहीं केम के तारा—योनि—वर्ग—विश्वा—गण—राशि अने नाडी ए पछापछीना योगो वधारे वधारे बळवान छे। जे प्रतिमाना योगो वधारे बलवान होय ते प्रतिमानी प्रतिष्ठा करावची शुभ छे।

आ रीते दरेक बाबतनो विचार करीने तीर्थ करनी अनुकुळतानो निर्णय करवो।

* पानानी नीचे लखेल बाबतो दिक्षा-विवाह माटे उपयोगी छे पण तीर्थ कर माटे उपयोगी नथी इति शाति।

अनुक्रम ।

—०—

अध्याय १, राशाया

अध्याय २, तीर्थकरा

अध्याय ३, अक्षरा

अध्याय ४, अउओक

अध्याय ५, पूर्णभग

परिशिष्टाणि

॥ ॐश्रीसिद्धचक्राय नमः ॥

श्रीबृहद् धारणायंत्र ।

मंगलाचरण — श्रेयस्कर महावीरं वन्देजगत्पितामहं
लोक चक्षु पूर्ण पूर्ण केवल द्युति भास्कर १

स्तवीमि भारतीं ब्राह्मीं जगद्विज्ञानमातर
गौतम ज्ञानधातार ईडे श्रीगणनायक २

श्रीमच्चारित्र विजय गुरुकुल पितामह
प्रणमामि विशुध्याहं ज्ञानादि स्वात्म दायक ३

ग्रंथनाम — प्रणम्येत्य महत्पूज्यान् गुरुप्रेम प्रसादत
श्रीबृहद्धारणायंत्र करोमि जिनभक्तित ४

अध्याय १

उद्देश — साधकसाध्ययो रूप— पत्योस्थापक विषयो
शिष्यगुर्वोश्च दंपत्यो सुसंबंध समीक्ष्यते ५

जन्मर्क्षयो र्नाममयो न जन्मनामक्षयो
नामाद्याक्षरयो र्जातो योगो योगेन शुध्यति ६

नाम्निविशेष — देशे ग्रामगृहज्वर व्यवहृति द्यूतेषु दाने मनौ
सेवाकाकीणी वर्ग सगरपुनर्भूमेलके नामभ
जन्मर्क्ष परतो वधूपुरुषयोर्जन्मर्क्ष मेवस्यचेत्
ज्ञात सुप्तमितो त्रिलोकपथतपोर्नामक्षयोर्मेलक ॥ मू० ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
द्वारं :— भानुयोनि तारागण माहियेषा पृजिस्तु राशे युतिमध्यदूरौ
८ ९ १० ११ १२ १३
वश्यंच धण पनिजेश्यमैत्र्यौ प्राग्रा द्वयो वर्ग निशोपकास्च ७

नक्षत्राणि — अश्विनी भरणी चैव कृतिका रोहिणी मृग
आर्द्रा पूनर्वसू पुष्य स्ततोऽश्लेषा ततो मघा ८

पूर्वा फाल्गुनी तस्माच्चे—चोत्तराफाल्गुनी वर
चित्रा स्याति विशाखानु—राधा ज्येष्ठा मूल तथा ९

पूर्वाषाढोत्तरापाढा ऽभिच्छ्रवणं धनिष्ठिका
शत पूर्वोत्तराभाद्रौ रेवती भगण स्मृत १०

अक्षरा — अश्विन्याचुचेचोलास्यात् लीलुलेलो भरण्यथ
कृतिकास्याद्व आइउए रोहिणी ओवविवु च ११

मृगाशिर्षे वेवोकाकि आर्द्रा कुघङछं मता
पूनर्वसू केकोहाही हु हे हो डा चपुष्यम १२

अश्लेषाडिडूडेडोस्यात् ममिमुमे मघा भवेत्
भवेत् पु० फा० मोटटिटू उ० फा० टेटोपपि तथा १३

हस्तभस्यात् पुषणठ चित्रा पेपोररि भवेत्
स्याति रुरेरोत प्रोक्त नितुतेतो विशाखम १४

अनुराधा ननिनुने ज्येष्ठा नोयथियु भवेत्
येयोभभि मूलमुक्तं पूर्वाषाढा भूधफढं १५

अन्याऽऽषाढा भेभोजाजि जुजेजोखा तथाभिजीत्
श्रवणखिखुखेखोस्यात् धनिष्ठास्याद्व गगिगुगे १६

शततारा गोससीसु भाद्र सेसोददि सदत्
अन्यभाद्र दुथंझर्थ देदोचचि चरेवती १७

एकस्यरेदशमाशा भौदन्ता मही प्रलृक्षौ
ज झयो क ङयो रि ट्रो पेवर्ण स्यात् ह्रस्वदीर्घयो १८

योनिः —	अश्वगजौ मेषाही	सर्पः श्वा ओतुमेषमाजारा	
	आखुश्वाऽऽखुर्गाजौ	महिषव्याघ्रौ महिषव्याघ्रौच	१६
	मृगोमृग श्वानानर	नकुलौ नकुल कपिश्च सिंहाश्वौ	
	सिंहो गौश्च गजश्च	नक्षत्राणांहियोनिस्थानानि	२०
	हस्ति सिंह मश्वमहिषं	श्वाहरिणं कपिमेष महिनकुलं	
	गौर्व्याघ्र चाखोतु	वैर केश्चिन्मत वृथेति तत्	२१
तारा —	स्वमात् तारा नव प्रोक्ता	त्रिरार जन्म नामत	
	तृतिया पंचमी त्याज्या	सप्तमी साधकात् खलु	२२
	राशीपतिमैत्र्यामेक—	नाथेऽश्ये शुभेपिता	
	तारास्त्याज्या वरादिम्यो	नतुस्यापक्षीयो	२३
गण —	देवे ऽश्विनीमृगपुष्यं	स्वातिभ च पुनर्वसू	
	अनुराधाचश्रवण	हस्तरेवती स्याद् गणे	२४
	भरणी रोहिणी आर्द्रा	श्रोपूर्वा श्युत्तरा नरे	
	राक्षसेन्यानिमानि स्यु	कृतिकादीनि वा नव	२५
	स्वगणेप्रीतिश्चामर	नरयोर्मध्यमा मता	
	देवराक्षसयोर्वैर	मनुष्यरक्षसोमृति	२६
	सतिराशिकुटे शस्ते	सयोनौ ग्रहमैत्रके	
	मनुष्यगणसाम्यश्च तु	साधकस्योनदोषकृत्	२७
नाड़ी —	क्रमोत्क्रमेण अश्विन्या	त्रिनाड्या गतभ द्वयो	
	सर्वस्मिन्नशुभ प्रोक्त	शुभंतुगुरुशिष्ययो	२८
	राश्यादिशस्तभेदाना	नाडीवेधस्तुनाशकृत्	
	किंतुशिष्येगुरौवेध	दुर्योनिबलनाशक	२९
	प्रभु पण्यांगना मित्रं	देशोग्रामंपुर गृहं	
	पक्ताखीगतामव्या	अमव्या वेधवर्जिताः	३०

नक्षत्रयन्त्र

अङ्क	नक्षत्र	अक्षराः	योनिः	योनिवैर	तारा	गण	नाडी	युञ्जि
१	अश्विनी	चु चे चो ला	अश्व	महिष	१	देव	आद्य	पूर्वभागी
२	भरणी	लि लु ले लो	हस्ति	सिंह	२	मनुष्य	मध्य	
३	कृत्तिका	अ इ उ ए	छाग	वानर	३	राक्षस	अन्त्य	
४	रोहिणी	ओ वा वि वु	सर्प	नकुल	४	मनुष्य	अन्त्य	
५	मृगशिर	वे वो क कि	सर्प	नकुल	५	देव	मध्य	
६	आर्द्रा	कु घ ङ छ	श्वान	हरिण	६	मनुष्य	आद्य	
७	पुनर्वसु	के को ह हि	बिडाल	उन्दुर	७	देव	आद्य	
८	पुष्य	हु हे हो डा	छाग	वानर	८	देव	मध्य	
९	आश्लेषा	डि डु डे डो	बिडाल	उन्दुर	९	राक्षस	अन्त्य	
१०	मघा	म मि मु मे	उन्दुर	बिडाल	१	राक्षस	अन्त्य	मध्यभागी
११	पू फा	मो ट टि टु	उन्दुर	बिडाल	२	मनुष्य	मध्य	
१२	उ फा	टे टो प पि	गौ	व्याघ्र	३	मनुष्य	आद्य	
१३	हस्त	पु ष ण ठ	महिष	अश्व	४	देव	आद्य	
१४	चित्रा	पे पो र रि	व्याघ्र	गौ	५	राक्षस	मध्य	
१५	स्वाति	रु रे रो ता	महिष	अश्व	६	देव	अन्त्य	
१६	विशाखा	ति तु ते तो	व्याघ्र	गौ	७	राक्षस	अन्त्य	
१७	अनुराधा	न नि नु ने	हरिण	श्वान	८	देव	मध्य	
१८	ज्येष्ठा	नो य यि यु	हरिण	श्वान	९	राक्षस	आद्य	
१९	मूल	ये यो भ भि	श्वान	हरिण	१	राक्षस	आद्य	पश्चिमभागी
२०	पूर्वाषाढा	भु ध फ ढ	वानर	छाग	२	मनुष्य	मध्य	
२१	उ षा	भे भो ज जि	नकुल	सर्प	३	मनुष्य	अन्त्य	
२२	अभिजित्	जु जे जो खा	नकुल	सर्प	०	विद्याधर	०	
२३	श्रवण	खि खु खे खो	वानर	छाग	४	देव	अन्त्य	
२४	धनिष्ठा	ग गि गु गे	सिंह	हस्ति	५	राक्षस	मध्य	
२५	शतभिषा	गो स सि सु	अश्व	महिष	६	राक्षस	आद्य	
२६	पू भा	से सो द दि	सिंह	हस्ति	७	मनुष्य	आद्य	
२७	उ भा	दु थ झ ञ	गौ	व्याघ्र	८	मनुष्य	मध्य	
२८	रेवती	दे दो च चि	हस्ति	सिंह	९	देव	अन्त्य	पूर्व

गणमेलक यंत्र

साधक		साध्यदेव	साध्यमनुष्य	साध्य राक्षस
देव	अ मृ पु पु ह स्वा अ श्र रे	अतिप्रीति	मध्यमप्रीति	वैर
मनुष्य	भ रो आ पूर्वा॰३ उत्तरा॰३	मध्यमप्रीति	अतिप्रीति	मृत्यु (शुभ)
राक्षस	कृ श्ले म चि वि ज्ये मू ध श	वैर	मृत्यु	अतिप्रीति

द्वादशारपाद वेधयंत्र.

नक्षत्र	अ	आ	पु	उ	ह	ज्ये	मू	श	पू॰
आद्य नाडी	चु	छ	के	पि	पु	यु	य	सु	से १
	चे	ङ	को	प	ष	यि	यो	सि	सो २
	चो	घ	ह	टो	ण	य	भ	स	द ३
	ला	कु	हि	टे	ठ	नो	भि	गो	दि ४
नक्षत्र	भ	मृ	पु	पू	चि	अ	पू॰	ध	उ
मध्य नाडी	लि	कि	हु	डु	पे	ने	भु	गे	दु ५
	लु	क	हे	टि	पो	नु	ध	गु	श ६
	ले	वो	हो	ट	र	नि	फ	गि	झ ७
	लो	वे	डा	मो	रि	न	ढ	ग	थ ८
नक्षत्र	कृ	रो	श्ले	म	स्वा	वि	उ	श्र	रे॰
अन्त्य नाडी	अ	वु	डि	मे	रु	तो	भे	खो	दे ९
	इ	वि	डु	मु	रे	ते	भो	खे	दो १०
	उ	व	डे	मि	रो	तु	ज	खु	च ११
	ए	ओ	डो	म	त	ति	जि	खि	चि १२

एक नक्षत्रजाताना परेपाप्रीतिरुत्तमा
दंपत्योस्तुभवेद् हानि राशिभेदे नदोषहत् ३१

दुष्टो येषु नाडीवेधो राशिभेदे तुमध्यम
द्वादशनाडीचक्रे तु पादवेधोऽधमाऽधम ३२

युजि — षड्द्वादशनक्षभानां योग प्राग्मध्यपश्चिमश्चन्द्रे
लग्ने चाऽऽरेवतीना वरेःकनीसिद्धिकैश्वप्रेमकर ३३

राशय — मेषो वृषभो मिथुन कर्क सिंहश्च कन्यका तुला
वृश्चिको धनमकरौ कुंभो मीनश्च राशयो ज्ञेया ३४

राशिस्थापना — अश्विनी मघा मूलेभ्य प्रारम्भ राशयो क्रमात्
मेषसिंहधनाद्या स्यु सपादद्विभयो खलु ३५

अक्षरा — मेषे स्यु चुलआ वृषेऽथमताः युग्मेक्घडं छहा
कर्केहीड हरौमटा कनिपुणे टोरापणठ मता
तोलौरात अलीनतोय धनुर येमाधफढं मता
भोजाखागमृगे घटेगुसद वे मीन मीन दिशाभ्रयचा ३६

भउत्युति राशिकूट —सनेस्मात् द्विर्द्वादशक नेष्ट न नमपंचमं
षष्टमेत्रिषमाद्राशी मृत्यु समात्तथाष्टमे ३७

मकरसकेसरी मेष युवत्या तुरुहरमीन कुलिर घटाद्या
धनवृषवृश्चिकम मथयोगे वैरकरच षडष्टकमेतत् (ना०)
विसमाअट्ठमेपीई समाउ अट्ठमेरिऊ
सत्तुछट्ठम नाम रासीहिं परिवज्जए (दिनशुद्धि)
शत्रुषडष्टके मृत्युः कल्हो नवपंचमे
द्विद्वादशमेदारिद्य् शेषेषुप्रीतिरुत्तमा ३८

राशिक्रूरता — क्रूरस्थाकनिराशि शुभावराद्वनिकाञ्चप्रतिमायाः
धरतोनथमीपीष्टा मातृपितृमृतेचचैकस्मिन् ३९

राशि यंत्र.

अ०	राशि	पति	नक्षत्रपादा	अक्षरा
१	मेष	भोम	अ४ भ४ कृ०१	चु चे चो ला लि लु ले लो अ
२	वृषभ	शुक्र	कृ०३ रो०४ मृ०२	इ उ ए ओ व वि वु वे वो
३	मिथुन	बुध	मृ०२ आ०४ पु०३	क कि कु के को घ ङ छ ह
४	कर्क	सोम	पु०१ पु०४ आ०४	हि हु हे हो ड डि डु डे डो
५	सिंह	रवि	म४ पू४ उ१	ममि मु मे मो ट टि टु टे
६	कन्या	बुध	उ०३ ह०४ चि०२	टो प पि पु पे पो ष ण ठ
७	तुला	शुक्र	चि२ स्वा४ वि०३	र रि रु रे रो त ति तु ते
८	वृश्चिक	भोम	वि०१ अ०४ ज्ये०४	तो न नि नु ने नो य यि यु
९	धन	गुरु	मू०४ पु०४ उ०१	ये यो भ भि भु ध फ ढ भे
१	मकर	शनि	उ०३ श्र०४ ध०२	भो ज जि खु जे जो ख०५ ग गि
११	कुंभ	शनि	ध२ श४ पू०३	गु गे गो स सि सु से सो द
१२	मीन	गुरु	पू०१ उ०४ रे०४	द दि दु दे दो श झ थ च चि

अं	२-१२	५-९	६-८	जाति	वश्य राशि	वर्ण
१	वृ मी	सिं ध	कं वृ	पशु		क्ष
२	मि मे	क म	तु ध	पशु	मेष	व
३	क वृ	तु कु	वृ म	मनुष्य	विनाधनु विनासिंहसर्वे	शू
४	सिं मि	वृ मी	ध कु	कीट	०	ब्रा
५	क क	ध मे	म मो	पशु	विनाधनु विनावृश्चिकंसर्व	क्ष
६	तु सिं	म वृ	कु मे	मनुष्य	विनाधनु विनासिंहसर्वे	वै
७	वृ कं	कु मि	मी वृ	मनुष्य	पशुकीटजलजा विनासिंह	शू
८	ध तु	मी क	मे मि	कीट	सिंह	ब्रा
९	म वृ	मे सिं	वृ क	मनु (मि०)	सर्वे	क्ष
१०	कु ध	वृ क	मि सिं	पशु (मि०)	कर्क मीन	वै
११	मी म	मि तु	क क	मनुष्य	पशु कीट जलजाः विनासिंहं	शू
१२	मे कु	क वृ	सिं तु	जळ	०	ब्रा

ग्रह चक्रम्

सं०	ग्रह	स्वराशि	मित्र	मध्यस्थ	शत्रु	प० मैत्री	सन्ताप
१	रवि	सिंह	सो मं गु	बुध	शु० श	सो मं गु	बु २-३-१२-११-१०-स्थानस्थ तात्कालिकमैत्री
२	सोम	कर्क	र बु	मं गु शु श	०	र मं गु	
३	मंगल	मे, वृ	र सो गु	शु श	बु०	र सो गु	
४	बुध	मि, कं	र शु	मं गु श	सो	शु श रा	
५	गुरु	ध, मी	र सो मं	श	बु० शु	र सं मं	
६	शुक्र	वृ, तु	बु श	मं गु	र सो	बु श रा	
७	शनि	म, कु	बु शु	गुरु	र सो मं	बु शु रा	
८	राहु	०				बु शु श	
९	केतु	०					

राशिकूटचक्रम्

संकेतशब्दा—दे—श्रेष्ठतर, श्रे—श्रेष्ठ, शु—शुभ, म—मध्यम, अ—अशुभ, ने—नेष्ट अशुभतर, श—शत्रु, प्री—प्रीति, ०—सम, १—स्व

(१/१ २/१२ ३/११ ४/१० ५/९ ६/८ ० ७/७ ८/६ ९/५ १०/४ ११/३ १२/२)

	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
मेष	१	अ	शु	दे	शु	श	०	प्री	शु	श्रे	शु	श्रे
वृषभ	अ	१	श्रे	शु	श्रे	शु	प्री	०	श	शु	दे	शु
मिथुन	शु	श्रे	१	ने	शु	दे	शु	श	०	प्री	म	ने
कर्क	दे	शु	ने	१	अ	शु	श्रे	म	प्री	०	श	म
सिंह	शु	श्रे	शु	श्रे	१	शु	शु	दे	शु	श	०	प्री
कन्या	श	शु	दे	शु	शु	१	श्रे	शु	श्रे	म	प्री	०
तुला	०	प्री	शु	श्रे	शु	श्रे	१	अ	शु	दे	शु	श
वृश्चिक	प्री	०	श	म	दे	शु	अ	१	श्रे	शु	श्रे	शु
धन	शु	श	०	प्री	शु	श्रे	शु	अ	१	अ	शु	दे
मकर	श्रे	शु	प्री	०	श	म	दे	शु	अ	१	श्रे	शु
कुंभ	शु	दे	म	श	०	प्री	शु	श्रे	शु	श्रे	१	अ
मीन	श्रे	शु	ने	म	प्री	०	श	शु	दे	शु	अ	१

जातिवश्यं —	अजवृषहरिमकरास्तु जलजोमीन शेषा	पशव कीटौ कर्कवृश्चिकौ मनुजा राशेर्जातयोशेया ४०
	धनुर्हरिकनि मनुज— मकरचकर्कमीनौ	शेषेषु स्युरुत्तरावद्वे वृषभमेषो हरिर्लिंघश्या ४१
वर्णा —	राशिवर्णा क्षत्रियश्च श्रेष्ठवर्णा यदिकन्या	वैश्य शूद्रश्चब्राह्मण पतिपुत्रमृत्तिर्भवेत् ४२
पतिग्रहा —	क्रमाद्राशे कुज शुक्र शुक्र कुजोगुरुर्मदौ	बुधश्च द्रौ रविर्बुध शनिर्जीवश्चस्वामिन: ४३
मित्र-शत्रु —	अर्कस्यजीवेन्दु चद्रस्य रविसौम्यौ	कुजाश्चमित्रा शुक्रशनीरिपू मित्रौ शत्रुग्रहोनकोप्यस्ति ४४
	भौमस्यजीवेन्दु— सौम्यस्य रविशुक्रौ	सुराश्चमित्रारिपुस्तुचद्रसुत मित्रौ शत्रुपदे सदाचद्र ४५
	जीवस्येन्दुकुजार्का शुक्रस्यबुधमदौ	मित्रा बुधशुक्रौचशत्रुस्त मित्रौशत्रूसदार्कचद्रौच ४६
	मदस्यबुधशुक्रौ सर्वेषामध्यस्था	मित्रौअरिणोसूर्यकुजचद्रा शेषाप्रोक्ताःप्रवीणज्ञानघनै ४७
परस्परमैत्री —	रवींदुगुरुकुजाश्च स्वस्मिन्मित्राणिसर्वाणि	सौम्यशुक्रार्किराहव परस्मिन् शत्रव स्मृता ४८
तत्कालमैत्री —	जन्मनिस्वस्मादग्रग— तत्कालिनमित्र स्यात्	पृष्टगत्रिनिगृहस्थित खेट: मित्रग्रहस्तुभवेदधिकमित्र ४६
मैत्रीचक्रम् —	अशुभेद्विर्द्वादशके चिन्तयेद्ग्रहमैत्री सा	चाशुभे नवपचके नान्यस्मिन् शुभमेलके ५०
	एकनाथे मित्रनाथे नेष्टंतत्मध्यमनाथे	एकमध्यमके शुभ चैकशत्रौ रिपुपतौ ५१

यदा स नाडी-सत्तारा— सयौनि-सद्गणा खलु
तदाराशिकूटश्रेष्ट मध्यममहयोरपि ५२

राशिकूट — इत्थघटक याव के मीनानार्पचमै सद
मध्यमं शेपराशीना शुभत नवपंचमम्
(म ध्यमपंचमेत्य— राशीनातुशुमावहं) ५३

वर्गवैरयत्र

पति	अक्षरा	वर्ग	वैर	वर्ग	अक्षरा	पति
गरुड	अ इ उ ए ओ	(अ)	+	(त)	त थ द ध न	सर्प
बिडाल	क ख ग घ ङ	(क)	+	(प)	प फ ब भ म	उंदिर
सिंह	च छ ज झ ञ	(च)	+	(य)	य र ल व	हरिण
श्वान	ट ठ ड ढ ण	(ट)	+	(श)	श प स ह	मेष

लभ्यदेययत्र

दाता		ग्राहक								दाता	
वर्ग		१ अ	२ क	३ च	४ ट	५ त	६ प	७ य	८ श	वर्गांक	
अ	त	१॥	२	२॥	३	३॥	०	०॥	१	१	५
क	प	२॥	३	३॥	०	०॥	१	१॥	२	२	६
च	य	३॥	०	०॥	१	१॥	२	२॥	३	३	७
ट	श	०॥	१	१॥	२	२॥	३	३॥	०	४	८

लभ्यदेय ध्रुवाकयत्र

वर्ग	अ	क	च	ट	त	प	य	श	
१ पूर्व	१	२	३	०	१	२	३	०	पूर्णाक
२ उत्तर	०॥	१	१॥	२	२॥	३	३॥	०	विशिष्टांक

ध्रुवांको एकीकृत्य चतुर्भि निभाज्या विशिष्टा
। एवं परस्पर गणनीय ॥ इति ॥

सिंहस्यसमराशीना द्विद्वादशमपि शुभ
सप्तमराशिकुटाया ग्रहमैश्यात्यतिशुभा ५४

साधक साध्य विशोपकयंत्र

साधक	अ	क	च	ट	त	प	य	श
	दे० १॥ ले० १॥	२ २॥	२॥ ३॥	३ ०॥	३॥ १॥	० २॥	०॥ ३॥	१ ०॥
अ	० दे० २॥ ले० २	ले० ०॥ ३ ३	ले० १ ३॥ ०	दे० २॥ ० १	दे० २ ०॥ २	ले० २॥ १ ३	ले० ३ १॥ ०	द० ०॥ २ १
क	दे० ०॥ दे० ३॥ ले० २॥	दे० ० ० ३॥	दे० ३॥ ०॥ ०।'	ले० १ १ १॥	ले० १॥ १॥ २॥	ले० २ २ ३॥	दे० १॥ २॥ ०॥	दे० १ ३ १॥
च	दे० १ दे० ०॥ ले० ३	ले० ३॥ १ ०	० १॥ १	ले० ०॥ २ २	ले० १ २॥ ३	ले० १॥ ३ ०	दे० २ ३॥ १	दे० १॥ ० २
ट	ले० २॥ दे० १॥ ले० ३॥	द० १ २ ०॥	दे० ०॥ २॥ १॥	० ३ २॥	ले० ०॥ ३॥ ३॥	दे० ३ ० ०॥	दे० २॥ ०॥ १॥	ल० २ १ २॥
त	ले० २ दे० २॥ ले० ०	दे० १॥ ३ १	दे० १ ३॥ २	दे० ०॥ ० ३	० ०॥ ०	ले० ०॥ १ १	ले० १ १॥ २	ले० १॥ २ ३
प	दे० २॥ दे० ३॥ ले० ०॥	दे० २ ० १॥	दे० १॥ ०॥ २॥	ले० ३ १ ३॥	दे० ०॥ १॥ ०॥	० २ १॥	ले० ०॥ २॥ २॥	ले० १ ३ ३॥
य	दे० ३ दे० ०॥ ले० १	ले० १॥ १ २	ले० २ १॥ ३	ले० २॥ २ ०	दे० १ २॥ १	दे० ०॥ ३ २	० ३॥ ३	ले० ०॥ ० ०
श	ले० ०॥	ले० १	ले० १॥	दे० २	दे० १॥	दे० १	दे० ०॥	०

	राशीरेकाधिपत्य वा	स्वामिनो मित्रतातदा	
	षडष्टकोपिदंपत्योः	नारचन्द्रे शुभावह	५५
परमार्थवसम् —	एवश्रेष्ठतरं श्रेष्ठ	शुभ मध्यमज रिपु	
	अशुभप्रीतिनेष्टचै—	क्षयमशुभतरसमं	५६
वर्गौ —	गरुड ओतु सिंहश्च	कुक्कुर सर्प उदर	
	मृगो मेषोऽष्टवर्गेशा	क्रमेण अकवादीनाम्	५७
	वर्गाणा पंचमेवैर	वर्ज्यं प्रसिद्ध नामयो	
	बलिष्ठे साधके वर्गे	वर्ग वैर न दोषदत्	५८
विशोपक —	प्रसिद्धनामाक्षर वर्गपाको	क्रमोत्क्रमेणाऽष्ट निभकशेषौ	
	कृतार्धकौ साधकसिद्धयोस्तौ	विशोपक स्यात् प्रथमेन देय	५६
	प्रथम नामतो लभ्यो	द्वितीयेन विशोपक	
	परस्परेणशोध्यौतौ	भूकेनार्ध ककाचया	६०
ग्राम धारणायांतु —	जन्मभात्ग्रामविताया	राशियोगो मतोन्यथा	
	केचित्तुकाकीर्णी प्रोचु	ग्रामस्यधारणागतौ	६१
ग्राम राशि —	स्वराशे तु रादो ग्राम	एक त्रिषष्ठ सप्तम	
	तुर्योऽष्टमोद्वादशमो	मध्यमोऽन्यतर शुभ	६२
	जन्मराशिस्थितो ग्राम	त्रिषष्ठ सप्तमोपिवा	
	स्वक्रियोद्रव्यनाशाय	आपदाच पदेपदे ॥ १ ॥	
	पंचमो नवमो ग्रामो	द्वितीयो यदिवा भवेत्	
(मा० ३।२३, टीका)—	दशमेकादशश्चैव	शुभ ससफलताप्रद ॥ २ ॥	

ग्राम राशियत्र

ग्रामराशि	१ ३ ६ ७	२ ५ ९ १० ११	४ ८ १२
फलम्	द्रव्यनाश	शुभ	अर्थव्यय

चतुर्थोष्टमकोग्रामो द्वादशो यदिवा भवेत्
यत्रउत्पद्यते अर्थं तत्रैवार्थों विलीयते ॥ २ ॥

कांकीणी — द्विकृत प्रथमवर्गांक अन्यवर्गेण पूरित
अष्टभक्तेन शेषाका याचते काकीणीं परात् ६३
एव परस्पर कृत्वा शोधनीया ही काकीणी
स्वनामाक्षर वर्गाञ्च ग्रामाद्याक्षर वर्गतः ६४

कांकीणीयंत्रः

साधक	अ	क	च	ट	त	प	य	श
अ	०	दे०१	दे०२	ले०५	ले०४	ले०३	दे०६	ले०१
क	ले०१	०	दे०१	ले०६	दे०३	दे०४	दे०५	ले०२
च	ले०२	ले०१	०	दे०१	दे०२	दे०३	ले०४	ले०३
ट	दे०५	दे०६	ले०१	०	दे०१	दे०२	ले०५	ले०४
त	दे०४	ले०३	ले०२	ले०१	०	ले०७	दे०२	दे०३
प	दे०३	ले०४	ले०३	ले०२	दे०७	०	दे०१	दे०२
य	ले०६	ले०५	दे०४	दे०५	ले०२	ले०१	०	दे०१
श	दे०१	दे०२	दे०३	दे०४	ले०३	ले०२	ले०१	०

वर्णोवश्यचताराव योनिश्चवर्गमेलकं
गणश्च राशिकूटश्च नाडीचैते गुणाधिका ६५
योने राशिरश्यमधिक इति कस्यचिन्मते
श्रीमद्चारित्रविजय— शिष्य दर्शन गुम्फित
राश्यादि धारणायत्रे अध्याय प्रथम इति ६६



अध्याय २

मगल — चतुर्वी शती तीर्थेशान् प्रणिपत्य गिर गुरु
जिनाना नामचिन्हानि— धारणागति कथ्यते १

जिननाम — ऋषभश्चाजितस्वामी समवश्चाभिनदन
सुमतिः पद्मसुपार्श्वौ चंद्र सुवीधिशीतलौ २
श्रेयांसो वासुपूज्यश्च विमलस्वाम्यनतराद्
धर्मः शातिश्च कुथुश्च अरोमल्लिजिनस्तथा ३
मुनिसुव्रतस्वामी च नमिर्नेमिश्च पार्श्वराट्
महावीरेति सभूताः वर्तमाना जिनेश्वरा ४

लाञ्छनानि — वृषोगजोश्व प्लवग क्रौचोब्ज स्वस्तिक शशि
मकर श्रीवत्स खड्गी महिष शुकरस्तथा ५
श्येनो वज्र मृगश्छागो नद्यावर्ता घटोपि च
कूर्मो नीलोत्पल शख फणीसिंहोऽहताध्वजा ६

प्रमाणम् — ~ एतेचदक्षिणांगविनिवेशिनो लाछनभेदाइति, अभिधान— चितामणौ कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचंद्र सूरि

अन्याम्नाय —दिगबराम्नायग्रथे तु सुमति—शीतल—अनत—अर जिनाना लांछन भेदो दृश्यते, तद्यथा—कोक द्रुम ऋक्षो मेष इति सिद्धात रसायन कल्पे (मुखद्र सग्रह), कोक श्रीयुतो वृक्ष सेधो पाठिन इति वसुनन्दीप्रतिष्ठापाठे, कोक (चेटो) श्रीयुतोवृक्ष शल्यो मत्स्यइति पूजासार समुच्चये, हसोवाचातक श्रीवृक्ष सेही मत्स्य इति भोला-नाथमुख्तार लिखित हिंदी तीर्थ कर चिन्हरहस्ये (अनेकात वर्ष १ किरण २) सुविधिस्तु लाछन मर्कट इति सिद्धान रसायनकल्पे।

नक्षत्राणि — जिनानामुत्तराषाढा रोहिणी मृगशिर्षभ
पुनर्वसु मघा चित्रा विशाखा चानुराधिका ७

मूलर्क्षे पूर्वाषाढा	श्रवण शततारक	
उत्तराभाद्रमघान्त्य	पुष्यमश्विनी कृत्तिका	८
रेवत्यश्विनी श्रवणं	आद्य चित्रानिशाखिका	
उत्तराफाल्गुनीभानि	श्रेयानि जन्मभानिवै	६

जिनराश्यादियंत्र.

अंक	नाम	लांछन	नक्षत्र	योनि	वर्ग	गण	नाडी
१	ऋषभनाथ	वृषभ	उ षा	नकुल	अ	मनुष्य	अत्य
२	अजितनाथ	हस्ति	रोहिणी	सर्प	अ	मनुष्य	अंत्य
३	संभवनाथ	अश्व	मृगशर	सर्प	श	देव	मध्य
४	अभिनंदन	वानर	पुनर्वसू	बिडाल	अ	देव	आद्य
५	सुमतिनाथ	क्रौंच	मघा	उदर	श	राक्षस	अत्य
६	पद्मप्रभु	पद्म	चित्रा	व्याघ्र	प	राक्षस	मध्य
७	सुपार्श्वनाथ	स्वस्तिक	विशाखा	व्याघ्र	श	राक्षस	अत्य
८	चंद्रप्रभु	चंद्र	अनुराधा	हरिण	च	देव	मध्य
९	सुविधिनाथ	मकर	मूल	श्वान	श	राक्षस	आद्य
१०	शीतलनाथ	वत्स	पू० षा०	वानर	श	मनुष्य	मध्य
११	श्रेयांसनाथ	खड्गी (गेंडो)	श्रवण	वानर	श	देव	अत्य
१२	वासुपूज्य	महिष	शतभिषा	अश्व	य	राक्षस	आद्य
१३	विमलनाथ	वराह	उ० भा०	गौ	य	मनुष्य	मध्य
१४	अनंतनाथ	श्येन (सिंचाणो)	रेवती	हस्ति	अ	देव	अत्य
१५	धर्मनाथ	वज्र	पुष्य	अज	त	देव	मध्य
१६	शांतिनाथ	हरिण	अश्विनी	अश्व	श	देव	आद्य
१७	कुंथुनाथ	अज	कृत्तिका	अज	क	राक्षस	अत्य
१८	अरनाथ	नद्यावर्त	रेवती	हस्ति	अ	देव	अत्य
१९	मल्लिनाथ	कलश	अश्विनी	अश्व	प	देव	आद्य
२०	मुनिसुव्रत	कच्छप (कांछु)	श्रवण	वानर	प	देव	अत्य
२१	नमिनाथ	कमल	अश्विनी	अश्व	त	देव	आद्य
२२	नेमिनाथ	शंख	चित्रा	व्याघ्र	त	राक्षस	मध्य
२३	पार्श्वनाथ	सर्प (साप)	विशाखा	व्याघ्र	प	राक्षस	अंत्य
२४	महावीरस्वामी	सिंह	उ० फा०	गौ	प	मनुष्य	आद्य

राशय — धनुर्गोमिथुनंयुग्म सिंह कन्या तुलाअलि
धनु धनुश्चमकरो घटो मीन मीन तथा १०
कर्कोमेषश्चगौर्मीनं मेषश्चमकरस्तथा
मेषोकन्यातुलाकन्या तीर्थकृज्ज मराशय ११

जिनराश्यादियंत्र

अंक	नाम	राशि	अशुभ राशि	वर्ण	तारा	हंस
१	ऋषभनाथ	धन	वृष, म,	क्षत्रीय	३	अग्नि
२	अजितनाथ	वृषभ	मे, ध	वैश्य	४	भूमि
३	संभवनाथ	मिथुन	कर्क वृ कु,	शुद्र	५	वायु
४	अभिनंदन	मिथुन	कर्क, वृ, कु,	शुद्र	७	वायु
५	सुमतिनाथ	सिंह	म,	क्षत्रिय	१	अग्नि
६	पद्मप्रभु	कन्या	मे, म,	वैश्य	५	भूमि
७	सुपार्श्वनाथ	तुला	वृ, मी,	शुद्र	७	वायु
८	चंद्रप्रभु	वृश्चिक	मि, कर्क, तु,	क्षत्रिय	८	अग्नि
९	सुविधिनाथ	धन	वृष, म,	क्षत्रिय	१	अग्नि
१०	शीतलनाथ	धन	वृष, म,	क्षत्रिय	२	अग्नि
११	श्रेयांसनाथ	मकर	सिं, कन्या, ध,	क्षत्रिय	४	अग्नि
१२	वासुपूज्य	कुंभ	मि, कर्क, मी	शुद्र	६	वायु
१३	विमलनाथ	मीन	कर्क, तु, कु	ब्राह्मण	८	जल
१४	अनंतनाथ	मीन	कर्क, तु, कुं	ब्राह्मण	९	जल
१५	धर्मनाथ	कर्क	मि, वृ, कु, मी,	ब्राह्मण	८	जल
१६	शांतिनाथ	मेष	वृष, कन्या,	क्षत्रिय	१	अग्नि
१७	कुंथुनाथ	वृष	मे, ध,	वैश्य	३	भूमि
१८	अरनाथ	मीन	कर्क, तु, कु,	ब्राह्मण	९	जल
१९	मल्लिनाथ	मेष	वृष, कन्या,	क्षत्रिय	१	अग्नि
२०	मुनिसुव्रत स्वामी	मकर	सिं, कन्या, ध,	वैश्य	४	भूमि
२१	नमिनाथ	मेष	वृष, कन्या,	क्षत्रिय	१	अग्नि
२२	नेमिनाथ	कन्या	मे, म,	वैश्य	५	भूमि
२३	पार्श्वनाथ	तुला	वृ, मी,	शुद्र	७	वायु
	महावीरस्वामी	कन्या	मे, म,	वैश्य	३	भूमि

साधक तीर्थंकर नक्षत्रयोनि राशि यंत्र ।

नक्षत्र	पाद	स्वयोनि साध्या	साध्यजिना योनि वैरं	राशि
अश्विनी		१६, १६, २१+१२	०+०	मेष
भरणी		०+१४, १८	०+०	०
कृतिका	२-४	१७+१५	१०+११,२०	वृषभ
रोहिणी		२+३	१+०	वृषभ
मृगशीर्ष	३ ४	३+२	१+०	मिथुन
आर्द्रा		०+६	८+०	०
पुनर्वसू	१-३	४+०	५+०	मिथुन
पुष्य		१५+१७	१०+११, २०	कर्क
अश्लेषा		०+४	५+०	०
मघा		५+०	०+४	सिंह
पू० फा०		०+५	४+०	०
उ फा०	२-४	२४+१३	६, २२+७, २३	कन्या
हस्त		०+०	१६,१६,२१+१२	०
चित्रा	१-२	६, २२+७, २३	२४+१३	कन्या
स्वाति		०+०	१६ १६,२१+१२	०
विशाखा	१-३	७, २३+६, २२	२४+१३	तुला
अनुराधा		८+०	०+६	वृश्चिक
ज्येष्ठा		०+८	०+६	०
मूल		६+०	०+८	धन
पूर्वाषाढा		१० + ११, २०	१५+१७	धन
उ० षा०	१	१+०	३+२	धन
अभिजित		०+१	३+२	०
श्रवण		११, २०+१०	१५+१७	मकर
धनिष्ठा		० + ०	०+१४, १८	०
शतभिषा		१२+१६,१६,२१	०+०	कुंभ
पू० भा०		० + ०	०+१४, १८	०
उ० भा०		१३+२४	६, २२+७, २३	मीन
रेवती		१४,१८+०	०+०	मीन

तीर्थंकर नाड़ी-गण यन्त्र ।

संख्या	साधक नाड़ी वेध			साधकगण			साधक तीर्थंकर नाम
	आद्य	मध्य	अंत्य	देव	मनुष्य	राक्षस	
१			वेध	मध्यम	स्व	अशुभ	ऋषभनाथ
२			वेध	मध्यम	,,	,,	अजितनाथ
३		वेध		स्व	मध्यम	वैर	संभवनाथ
४	वेध			स्व	,,	,,	अभिनंदनस्वामी
५			वेध	वैर	अशुभ	स्व	सुमतिनाथ
६		वेध		वैर	,,	,,	पद्मप्रभु
७			वेध	वैर	,,	,,	सुपार्श्वनाथ
८		वेध		स्व	मध्यम	वैर	चंद्रप्रभु
९	वेध			वैर	अशुभ	स्व	सुविधिनाथ
१०		वेध		मध्यम	स्वगण	अशुभ	शीतलनाथ
११			वेध	स्व	मध्यम	वैर	श्रेयांसनाथ
१२	वेध			वैर	अशुभ	स्व	वासुपूज्यस्वामी
१३		वेध		मध्यम	स्वगण	अशुभ	विमलनाथ
१४			वेध	स्व	मध्यम	वैर	अनंतनाथ
१५		वेध		स्व	,,	,,	धर्मनाथ
१६	वेध			स्व	,,	,,	शांतिनाथ
१७			वेध	वैर	अशुभ	स्वगण	कुंथुनाथ
१८			वेध	स्व	मध्यम	वैर	अरनाथ
१९	वेध			,,	,,	,,	मल्लिनाथ
२०			वेध	,,	,,	,,	मुनिसुव्रत स्वामी
२१	वेध			,,	,,	,,	नमिनाथ
२२		वेध		वैर	अशुभ	स्वगण	नेमिनाथ
२३			वेध	,,	,,	,,	पार्श्वनाथ
२४	वेध			मध्यम	स्व	अशुभ	महावीरस्वामी

साधक-तीर्थ कर तारा यत्र

विद्वद्धुम्यो हिताय सदभितोय यत्र वस्तुतस्त्वनावश्यक एव

श्र	म	मू	१, ३, ४, ६, ७, १७, २२, २३, २४
भ	पू फा	पू षा	२, ८, ११, १२, १३, १५ २०
कृ	उ फा	उ षा	३, ४, ६, ७, १४, १८, २२ २३
रो	ह	श्र	५, ८, ६, १२, १३, १५, १६, १६, २१
मृ	चि	ध	४, ७, १०, १४, १८, २३
आ	स्वा	श	१, ५, ८, ६, १३, १५, १६, १७, १६, २१, २४,
पु	वि	पू भा	२, १०, ११, १४, १८, २०
पु	अनु	उ भा	१, ३, ५, ६, ६, १६, १७, १६, २१, २२, २४
श्ल	ज्ये	रे	२, १ , ११, १२, २०

द्वादशार-तीर्थ कर वेध यत्र

साधकपादाक्षर	जिन नाडी वेध	भवेध	पाद वेध
४—कु गो टे ठ दि नो भि ला हि	६, १२, १६, १६, २१	४, २४	
७-८ ग गि झ ट ड ढ थ न नि फ बे बो मो र रि ले ला वे षा हो	८, १ , १३, १५	३, ६, २२	
६—अ खो डि डो दे भे मे रु ड	२, ५, ११, १४, १८, २०	७,१७,२३	१
१०-११-१२ इ उ ए ओ खि खु खे च चि ज जि डु डे हो त ति तु ते दो व वि मो म मि मु रे रो व वि	२, ५, ७, ११, १४, १७ १८, २१, २३	१	

तीर्थंकर राशि कूट यंत्र

अंक	राशि	स्वजिन	श्रेष्टतरम्	श्रेष्ठ	प्रीति	शुभ
१	मेष	१६,१९,२१	कर्क १५	म ११,२० १३,१४ १८	वृ ८	मि ३, ४, कु १२ सिं ५, ध १, ९, १०
२	वृषभ	२, १७	कु १२	मि ३, ४ सिंह ५	तु ७,२३ २	क १५, कं ६,२२,२४ म ११,२०,१३,१४,१८
३	मिथुन	३, ४	कं ६, २२, २४	वृष २, १७ १३,१४,१८	म११,२०	मे १६ १९, २१ सिं ५, तु ७, २३
४	कर्क	१५	मे १६, १९, २१	सिंह ५ तु ७, २३	धन १, ९, १०	वृ २, १७ कं ६, २२, २४
५	सिंह	५	वृश्चिक ८	वृ २, १७ कर्क १५	मी १३ १४,१८	मे १६ १९, २१ मि ३, ४, ६, २२, २४ तु ७,२३ म १ ९ १०
६	कन्या	६,२२,२४	मिथुन ३,४	तु ७, २३ ध १,९ १०	कु १२	वृ २, १७ कर्क १५ सिं ५, वृश्चिक ८
७	तुला	७, २३	म ११, २०	कर्क १५ ६, २२, २४	वृष २ १७	मि ३, ४ सिं ५ ध १, ९, १०, कु १२
८	वृश्चिक	८	सिंह ५	ध १ ९,१० कु १२	मे १६ १९,२१	कन्या ६, २२, २४ म ११, २०
९	धन	१, ९, १०	मीन १३, १४, १८	कं ६,२२, २४ वृ ८	कर्क १५	मी १३, १४, १८ मे १६,१९,२१, सिं ५ तु ७, २३, कु १२
१०	मकर	११, २०	तु ७, २३	मे १६,१९ २१ कु १२	मि ३, ४,	वृ २, १७, वृ ८
११	कुंभ	१२	वृष २, १७	वृ ८ म ११,२०	क ६, २२,२४	मी १३, १४, १८ मे १६, १९, २१ तु ७, २३
१२	मीन	१३,१४ १८	ध १, ९, १०	१६,१९,२१ मि ३, ४	सिं ५	धन १, ९, १० वृ २, १७ वृ ८ म ११, २०

तीर्थंकर राशि कूट यंत्र

राशि	सम	मध्यम	अशुभ	शत्रु	अशुभतर	अंक
मे	तु ७, २३		वृष २, १७	कन्या ६ २२, २४		१
वृ	वृ ८		मे १६, १६, २१	धन १ ६, १०		२
मि	ध १ ६, १०	कु १२		वृ ८	कर्क १५	३
क	म ११,२०	वृ ८ मी १३,१४,१८		कु १२	मि ३, ४	४
सिं	कु १२			म ११, २०		५
क	मी १३ १४, १८	म ११, २०		मे १६ १६, २१		६
तु	मे १६ १६, २१		वृ ८	मी १३ १४, १८		७
वृ	वृष २, १७	कर्क १५	तु ७, २३	मि ३, ४		८
ध	मि ३, ४		म ११,२०	वृष २, १७		९
म	कर्क १५	कन्या ६ २२, २४,	ध १,६,१०	सिं ५		१०
कु	सिं ५	मि ३, ४	मी १३ १४, १८	कर्क १५		११
मी	क६,२२,२४	कर्क १५	कु १२	तु ७, २३		१२

तीर्थ कर विशोपक यंत्रम्

साधक वर्ग	साध्य वर्ग तीर्थ कर नाम							
	अ १,२,४ १४,१८	क १७	च ८	ट ॰	त १५,२१ २२	प ६ १६,२० २३,२४	य १२,१३ (२४)	श ३,५,७,६, १०,११,१६ (२०)
अ	•	ले ०॥	ले १	द ०॥	दे ०	ले २॥	ले ३	॰ ०॥
क	दे ०॥	•	दे ३॥	ले १	ले १॥	ले ०	दे १॥	दे १
च	दे १	ले ३॥	०	ले ०॥	ले १	ल १॥	द २	द १॥
ट	ले २॥	॰ १	दे ०॥		ले ०॥	दे ३	दे २॥	ले २
त	ले २	दे १॥	दे १	दे ०॥		ले ०॥	ले १	ले १॥
प	॰ २॥	दे २	द १॥	ले ३	दे ०॥	•	ल ०॥	ले १
य	द ३	ले १॥	ले२	ले २॥	दे १	दे ०॥	•	ले ०॥
श	ले ॥	ले १	ले १॥	दे २	दे १॥	दे १	दे ०॥	•

धारणा — एव ज मर्भ राशिभ्या शान्याकूट तथाक्षर
कर्तव्या स्थापकाधार्यै तीर्थेषा धारणामति १२

कूटपर्कं — योनिर्वर्गश्चलभ्यच गणैश्यं राशिकूटता
नाडीति षट् चक्रानीति ॰भ्यधिये विलोकयते १३

उक्तच — योनिगणराशिमेद्रा लभ्यवर्गश्च नाडोवेधश्च
नूतन विंबविधाने षड्विधमेतद्विलोक्यते ॥ १ ॥

श्रीमद् चारित्रविजय शिष्य दर्शन गुम्फित
तीर्थङ्कारणायंत्रे अध्यायो द्वितीय इति ॥ १४ ॥



अध्याय ३

मगल — प्रणम्य परमेष्ठिन शिष्यबोधाय तन्यते
साक्षरभेद निन्यास साध्य साधक मेलक १

समूह — स्वरा सस्वरकाद्यानि भवन्ति नामनि तन
राशिम वर्ग पैक्येन समूह क्रियते पृथक् २

न्यास — एवं भवेत्चतु पष्ठी भिन्न राशिभवर्गत
अक्षराणा च सर्वेषा तन्न्यास क्रियते क्रमात् ३

प्रत्यक्षर प्रतिपंक्ति स्थाप्यते स्वक मादिक
यथार्ह योनि वर्णादि यथास्यात् सुकरास्त्वहक् ४

अक्षरा — अइ ओका कुके खाखी गगुगोघा चचु छजा
जुझाटाटे ठोठडाडी ढणता तितोथा ददि ५

दुदेधान नोपपुपे फचावे भाभुभेमोम
मोयथेरा रूला लीवा वेशपाससेहाहिहु ६

अनुसंधानं — चतु पष्ठ्यक्षराश्चेति अनुक्ता पूर्वगामिन
ह्रस्वदीर्घैक्य भाजन्ते सर्वे नाम्नि व्यवस्थिता ७

यत्रफलम् — साधक साध्ययोर्योगे दिहक्षाभवति यदा
(यदायोगस्तु साध्यस्य साधकेन दिहक्ष्यते)
तदाऽऽशु जायते ज्ञानं सुलभ यत्रदर्शनात् ८

सर्वाक्षर कूट यत्र. (६४)

अक्षर	नक्षत्र	योनि	तारा	गण	नाडी	युनि	राशि	स्वामी	वर्ण	वर्ग
अ	कृतिका	मेष	३	रा	अ	पू	मेष	भोम	क्ष	अ
इउए	कृतिका	मेष	,,	रा	,	,,	वृष	शु	वैर	,,
ओ	रोहिणी	सर्प	४	म	,,	,,	वृष	,,	व	,,
काकी	मृग	सर्प	५	दे	म	,,	मिथुन	बुध	शु	क

सर्वाधर कूट यन्त्र (६४)

अक्षर	नक्षत्र	योनि	तारा	गण	नाडी	युजि	राशि	स्वामी	वर्ण	वर्ग
कु	आर्द्रा	श्वान	६	म	आ	म	मिथुन	बु	शु	क
के को	पुन	विडाल	७	दे	,	,,	मिथुन	,,	,,	,,
खा	अभिजि	नकुल	+	विद्या	+	प	मकर	श	वै	,
खी खु	श्रवण	वानर	४	दे	अ	प	मकर	,,	वै	,,
खे खो										,,
ग गी	धनिष्ठा	सिंह	५	म	म	प	मकर	,,	वै	,,
गु गे	,	,	,,	,,	,,	,,	कुम	,,	शु	,,
गो	शत	अश्व	६	रा	आ	,	कुम	,	,,	,,
घ ङ	आर्द्रा	श्वान	६	म	आ	म	मिथुन	बु	शु	,
चा ची	रेवती	हस्ति	९	दे	अं	पू	मीन	गु	ब्रा	च
चु चे चो	अश्विनी	अश्व	१	दे	आ	पू	मेष	मं	क्ष	,,
छ	आर्द्रा	श्वान	६	म	आ	म	मिथुन	बु	शु	,,
जा जी	उ षा	नकुल	२	म	अ	प	मकर	श	वै	,,
जु जे जो	अभिजि	नकुल	+	विद्या	+	प	मकर	,,	,,	,,
झ	उ भा	गौ	८	म	म	प	मीन	गु	ब्रा	,
टा टी टु	पू फा	उंदिर	२	म	,,	म	सिंह	सू	क्ष	ट
टे	उ फा	गौ	२	म	आ	म	सिंह	सू	क्ष	,,
टो	उ फा	गौ	२	म	आ	,	कन्या	बु	वै	,,
ठ	हस्त	महिष	४	दे	आ	,,	कन्या	,	,,	,,
डा	पुष्य	मेष	८	,,	म	,,	कर्क	चं	ब्रा	,,
डीडुडेडो	अश्लेषा	विडाल	९	रा	अं	,	कर्क	,	ब्रा	,
ढ	पू षा	वानर	२	म	म	प	धन	गु	क्ष	,,
ण	हस्त	महिष	४	दे	आ	म	कन्या	बु	वै	,
ता	स्वाति	महिष	६	दे	अं	म	तुला	शु	शु	त
ती तु ते	विशाखा	व्याघ्र	७	रा	अ	,,	,,	शु	,,	,
तो	,	व्याघ्र	,	,,	अं	,,	वृश्चिक	मं	ब्रा	,,
थ	उ भा	गौ	८	म	म	प	मीन	गु	ब्रा	,
द	पू भा	सिंह	७	,	आ	,,	कुम	श	शु	,,
दि	,,	सिंह	७	,	आ	,,	मीन	गु	ब्रा	,,
दु	उ भा	गौ	८	,	म	,,	मीन	,,	,,	,,

अक्षर	नक्षत्र	योनि	तारा	गण	नाडी	युजि	राशि	स्वामी	वर्ण	वर्ग
दे दो	रेवती	हस्ति	९	दे	अ	पू	मीन	गु	वा	त
घ १०	पू षा	वानर	२	म	म	प	धन	गु	क्ष	,,
ननानूने	अनु	हरिण	८	दे	म	म	वृश्चिक	मं	बा	,,
नो	ज्येष्ठा	हरिण	९	रा	आ	प	,,	,	,,	,
पा पी	उ फा	गौ	३	म	आ	म	कन्या	बु	वै	प
पू	हस्त	महिष	४	दे	आ	म	कन्या	बु	वै	,,
पे पो	चित्रा	व्याघ्र	५	रा	म	,,	कन्या	,	,,	,
प	पू षा	वानर	२	म	म	प	धन	गु	क्ष	,,
बा बी बू	रोहिणी	सर्प	४	म	अ	पू	वृष	शु	वै	,,
बे बो	मृग	सर्प	५	दे	म	पू	वृष	,	,	,,
भा भी	मूल	श्वान	१	रा	आ	प	धन	गु	क्ष	,,
भू	पू षा	वानर	२	म	म	प	धन	गु	क्ष	,
भे	उ षा	नकुल	३	म	अ	प	धन	,		,,
भो	,	नकुल	३	,,	,	,,	मकर	श	वै	,
मामीमूमे	मघा	उदिर	१	रा	अ	म	रिह	सू	क्ष	,,
मो	पू फा	उदर	२	म	म	म	,,	,,	,	,,
यायोयु	ज्येष्ठा	हरिण	९	रा	आ	प	वृश्चिक	मं	शू	य
ये यो	मूल	श्वान	१	,,	आ	प	धन	गु	क्ष	,
र ऋ रि	चित्रा	वानर	५	,,	म	म	तुला	शु	शू	,
रु रे रो	स्वाति	महिष	६	दे	अ	म	,	,,	,,	,
ला	अश्विनी	अश्व	१	दे	आ	पू	मेष	मं	क्ष	,,
लीलूलेलो	भरणी	हस्ति	२	म	म	पू	मेष	,,	क्ष	,
वा वी वू	रोहिणी	सर्प	४	,	अ	पू	वृष	शु	वै	,,
वे वो	मृग	सर्प	५	दे	म	,,	वृष	,	,,	,,
श १०	उ भा	गौ	८	म	,,	प	मीन	गु	शू	श
ष १०	हस्त	महिष	४	दे	आ	म	कन्या	बु	वै	,,
स सी सू	शत	अश्व	६	रा	आ	प	कुंभ	श	शू	,
से सो	पू भा	सिंह	७	म	,,	.	,,	,	,,	,
हा	पुनर्वसू	बिडाल	७	दे	,,	म	मिथुन	बु	,,	,,
ही	पुनर्वसू	बिडाल	७	,,	,,	,,	कर्क	चं	ब्रा	,
हू हे हो	पुष्य	मेष	८	दे	म	म	कर्क	चं	ब्रा	श

श्रीमद्चारित्रविजय शिष्यदर्शन गुंफित

प्राऽक्षरोधारणायंत्रे अध्यायस्तृतीय इति

अध्याय ४

मंगलं — प्रणिपत्य परेशाच साधक साध्य सिद्धये
परस्पराक्षरैश्चक्र अउओर्क सदुच्यते १

सर्वेद्वादशधान्यस्त अकहम्वक्रमिष्यते
तदेव लाघवेनेत्थ त्रिक्रमर्क्तं निधियते २

विन्यास — ऋ ॠ ऌ ॡ विना आद्या स्वरास्तु द्वादश क्रमात्
काद्यानि व्यञ्जनानिच चतुष्कोष्ठेषु सन्यसेत् ३

ऋॠस्वरौ तथात्रैव रकारे प्राहुर्तेबुधै
अपिऌॡस्वरौ निशौ लकारे साध्यते सदा ४

द्वादश अक्षरा पर्व प्रतिकोष्ठं विनिष्ठिता
अउओकाद्विमि कार्यो योगो साधक साध्ययो ५

देशे दुर्गे पुरे ग्रामे औषधे मन्त्रदेवयो
स्वामीभृत्येषुभूमिषु रिपौ चेतन्निरिक्षयेत् ६

जन्मनाम — विवादे शुभकार्येषु लाभाद्रौ ग्रहगोचरे
जन्मनाम्न प्रधानत्व प्रसिध्दं नाम नेक्षयेत् ७

प्रसिद्धनाम — गृहे ग्रामे पत्ले क्षेत्रे वाणिज्ये राजदर्शने
प्रसिद्धनाम्न श्रेष्ठत्व जन्मराशि न चितयेत् ८

सिध्यादय — साधकात् प्रथमे साध्ये सिद्धि साध्यं द्वितीयके
तृतीयेतु सुसिद्ध स्यात् रिपुस्तूर्ये यथाक्रमम् ९

सत्फलं — सिद्धि सिध्यतिकालेन साध्य सिध्यतिरानवा
सुसिद्धिस्तत्क्षणादेव रिपु मूलं निह तति १०

अ क ह म यत्र।

	१२ अ ठ भ श	१	२ आ ल द य	
११ ओट मघ		२ अ क ह म		३ इ ग ध र
१०	औज पळ		इ घ त क्ष	४
९ ओफ पह		७ ए छ घ श		५ उ ट थ य
	ऐञनस ८	७	ऊ च द श ६	

अ उ ओ क यत्र।

अ उ ओ क ङ ऋ ड य प म व ह	आ ऊ औ ख च ञ ढ द फ य श ळ
ई ऐ अ घ ज ठ त न भ क्ष स रा	इ ए अ ग छ ट थ ध वे र प क्ष

सिध्यादि यंत्र।

सिद्धि	साध्य
रिपु	सुसिध्धि

श्री चारित्र विजयान्ते— गसि दर्शनगुफित

अ उ ओ धारणा यत्रे अध्यायस्तूर्यम ईति ११

अध्याय ५

मंगल — प्रणम्य परयाभक्त्या सर्वेश परमेश्वर
पूर्णज्ञानं हेमचद्रं सर्वज्ञ सस्तुवे बलौ १

श्रीमद् चारित्रविजयं नत्वा प्रेम्णाऽनघ गुरुं
तीथङ्कधारणान्यास पूर्णमगो विधीयते २

प्रश्न — स्थापकस्य सूरे साधो श्राद्धस्याऽस्य पुरस्य क
जिन श्रेष्ठ इति प्रश्ने उत्तरोऽस्मात्प्रदीयते ३

अप्रकोजिन श्रेष्ठ सघस्य, इति नविलोकनीय
निर्विघ्नत्वात् हीरप्रश्ने, इतिकिंचित

न्यास — चतु पञ्चशरा सन्ति मिश्रराशि भ घर्गगा
तत्तचोन्यादिक षट्क साधकस्याऽत्रसन्यसेत् ४

६४×२४ — तत प्रत्यक्षर पत्रे चतुर्विंशतयो जिना
स्तस्वयोन्यादिके षट्के— र्न्यासाध्या समासत ५

भंगा १५३६ — एवलेश्याग्निसमीति चद्रमीतास्तुभगय
साधक जितयो योगः तस्मात्साध्यो विवेकिना ६

षड्वर्ग — योनि वर्गश्च लभ्याका गणो राशिश्च नाडिका
नन्वेविदे विलोक्यंशो योढायल गुणाधिकं ७

क्वचिदेवाद्भुतानारा कुबेर सचलरिपौ
भन्येधो मध्यम प्रोक्त पादवेधोऽधमाऽधम ८

उत्तरोऽत्तरैरशुभै— स्तद्योगो नैव शस्यते
तस्मात्शास्त्रोदितन्यासौ स्वपरोपकृति-परै ९

साधक अक्षर—अ, आ ।

नं	साध्य जिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीय	३	मेष	अ	लभ्यं		राक्षस	मेष	अन्त्य
	विरुद्ध	५ ७, ६	वानर	त		देय	दे म	कन्या	अन्त्यवेध
१	ऋषभनाथ						अशुभ	शुभ	पादवेध
२	अजितनाथ						,,	अशुभ	वेध
३	संभवनाथ	अशुभ				०॥	वैर	शुभ	
४	अभिनदन	अशुभ					,	शुभ	
५	सुमतिनाथ					०॥	स्व	शुभ	वेध
६	पद्मप्रभु	अशुभ			२॥		,	शत्रु	
७	सुपार्श्वनाथ	अशुभ				०॥	,,	सम	अवेध
८	चंद्रप्रभु				१		वैर	प्रीति	
९	सुविधिनाथ					०॥	स्व	शुभ	
१०	शीतलनाथ		कुवेर			०॥	अशुभ	शुभ	
११	श्रेयांसनाथ		कुवेर			०॥	वैर	श्रेष्ठ	वेध
१२	वासुपूज्य				२		स्व	शुभ	
१३	विमलनाथ				३		अशुभ	श्रेष्ठ	
१४	अनतनाथ	अशुभ					वैर	श्रेष्ठ	वेध
१५	धर्मनाथ		मैत्री	वैर		२	,	श्रेष्ठतर	
१६	शांतिनाथ					०॥	,	स्वराशि	
१७	कुंथुनाथ		स्व		०॥		स्वगण	अशुभ	एकभ
१८	अरनाथ	अशुभ					वैर	श्रेष्ठ	वेध
१९	मल्लिनाथ				२॥		,,	स्वराशि	
२०	मुनिसुव्रत		कुवेर		२॥		,,	श्रेष्ठ	वेध
२१	नमिनाथ			वैर		२	,,	स्वराशि	
२२	नेमिनाथ	अशुभ		वैर		२	स्वगण	शत्रु	
२३	पार्श्वनाथ	अशुभ			२॥		,	सम	अवेध
२४	वर्धमान				३		अशुभ	शत्रु	
,,	महावीर				३॥		,,	,	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्य				नक्षत्र	युजि
मेष	मगल	वृश्चिक	क्षत्रिय	•				कृतिका	पूर्व

साधक अक्षर—इ ई, उ. ऊ, ए, ऐ।

नं०	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीयं	३,	मघ	ष	सम्यं		राक्षस	वृषभ	अंत्य
	विरुध्य	५ ७,६	वानर	त		देय	देव	धन	अत्यवेध
१	ऋषभनाथ				०		अशुभ	शत्रु	अवेध
२	अजितनाथ				०		,	स्वराशि	वेध
३	संभवनाथ	अशुभ				०॥	वैर	श्रेष्ठ	
४	अभिनंदन	अशुभ			०		,,	श्रेष्ठ	
५	सुमतिनाथ					०॥	स्व	श्रेष्ठ	वेध
६	पद्मप्रभु	अशुभ			२॥		,,	शुभ	
७	सुपार्श्वनाथ	अशुभ				०॥	,,	प्रीति	वध
८	चंद्रप्रभु				१		वैर	सम	
९	सुनिधिनाथ					०॥	स्व	शत्रु	
१०	शीतलनाथ		कुबेर			०॥	अशुभ	शत्रु	
११	श्रेयांसनाथ		कुबेर			०॥	वैर	शुभ	वध
१२	वासुपूज्य				३		स्व	श्रेष्ठतर	
१३	विमलनाथ				३		अशुभ	शुभ	
१४	अनतनाथ	अशुभ		वैर	०		वैर	शुभ	वेध
१५	धर्मनाथ		मैत्री			२	,	शुभ	
१६	शांतिनाथ					०॥	,,	अशुभ	
१७	कुंथुनाथ		स्वा		॥		स्वगण	स्वराशि	एकभं
१८	अरनाथ	अशुभ			०		वैर	शुभ	वेध
१९	मल्लिनाथ				२॥		,	अशुभ	
२०	मुनिसुव्रत				२॥		,,	शुभ	वेध
२१	नमिनाथ		कुबेर	वैर		२		अशुभ	
२२	नेमिनाथ	अशुभ		वैर		२	स्वगण	शुभ	
२३	पार्श्वनाथ	अशुभ			२॥		,,	प्रीति	वेध
२४	वर्धमान				३		अशुभ	शुभ	
,	महावीर				२॥			,	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ग्य	वश्य				नक्षत्र	युजि
वृषभ	शुभ	तुला	वैश्य	मेष				कृतिका	पूर्व

साधक अक्षर—ओ, औ।

नं०	धाम्यमिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीयं	४	सर्प	अ	लभ्यं		मनुष्य	वृषभ	अन्त्य
	विरुध्य	६८१	नकुल	त		देय	राक्षस	धन	अंत्य
१	ऋषभनाथ		कुबेर		•		स्व	शत्रु	अवेध
२	अजितनाथ		स्वा		०		,,	स्वराशि	एकभं
३	संभवनाथ		मैत्री			०॥	मध्यम	श्रेष्ठ	
४	अभिनंदन				•		,,	,	
५	सुमतिनाथ	अशुभ				•॥	अशुभ	,,	वेध
६	पद्मप्रभु				२॥		,	शुभ	
७	सुपार्श्वनाथ					•॥	,,	प्रीति	वेध
८	चंद्रप्रभु	अशुभ			१		मध्यम	सम	
९	सुविधिनाथ	अशुभ				•॥	अशुभ	शत्रु	
१०	शीतलनाथ					०॥	स्वगण	,,	
११	श्रेयांसनाथ					०॥	मध्यम	शुभ	वेध
१२	वासुपूज्य	अशुभ			३		अशुभ	श्रेष्ठतर	
१३	विमलनाथ	अशुभ			३		स्वगण	शुभ	
१४	अनंतनाथ				०		मध्यम	,,	वेध
१५	धर्मनाथ	अशुभ		वैर		२	,,	,,	
१६	शांतिनाथ	अशुभ				•॥	,,	अशुभ	
१७	कुंथुनाथ				०॥		अशुभ	स्वराशि	वेध
१८	अरनाथ				०		मध्यम	शुभ	वेध
१९	मल्लिनाथ	अशुभ			२॥		,,	अशुभ	
२०	मुनिसुव्रत				२॥	(०॥)	,,	शुभ	वेध
२१	नमिनाथ	अशुभ		वैर		२	,,	अशुभ	
२२	नेमिनाथ			वैर		२	अशुभ	शुभ	
२३	पार्श्वनाथ				२॥		,,	प्रीति	वेध
२४	वर्धमान				३		स्व	शुभ	
,,	महावीर				२॥		,,	,,	
राशि वृषभ	पति शुक्र	एकनाथ तुला	वर्ण वैश्य			वश्य मेष		नक्षत्र रोहिणी	युंजी

साधक अक्षर—क, का, कि, की च।

नं०	साम्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
							देव	मिथुन	मध्य
साधक नाम	स्वकीय	५	सर्प	क	ग्राम्य				
	विरुद्ध	७,६,२	नकुल	प		देव	राक्षस	वृ कर्क	मध्यवेध
१	ऋषभनाथ		कुवेर			०॥	मध्यम	सम	
२	अजितनाथ		भैंसी			०॥	,,	श्रेष्ठ	
३	संभवनाथ		स्वा			१	स्व	स्वराशि	एकमें
४	अभिनंदन	अशुभ				०॥	,,	स्वराशि	
५	सुमतिनाथ					१	वैर	शुभ	
६	पद्मप्रभु			वैर	२		,,	श्रेष्ठतर	वेध
७	सुपार्श्वनाथ	अशुभ				१	,	शुभ	
८	चंद्रप्रभु					३॥	स्व	शत्रु	वेध
९	सुविधिनाथ					१	वैर	सम	
१०	शीतलनाथ	अशुभ				१	मध्यम	सम	वेध
११	श्रेयांसनाथ					१	स्व	प्रीति	
१२	वासुपूज्य					१॥	वैर	मध्यम	
१३	विमलनाथ					१॥	मध्यम	श्रेष्ठ	वेध
१४	अनंतनाथ	अशुभ				०॥	स्व	श्रेष्ठ	
१५	धर्मनाथ				१॥		,,	अशुभतर	वेध
१६	शांतिनाथ					१	,	शुभ	
१७	कुंथुनाथ				०		वैर	श्रेष्ठ	
१८	अरनाथ	अशुभ				०॥	स्व	श्रेष्ठ	
१९	मल्लिनाथ			वैर	२		,,	शुभ	
२	मुनिसुव्रत			वैर	२	(१)	,,	प्रीति	
२१	नमिनाथ				१॥		,,	शुभ	
२२	नेमिनाथ				१॥		वैर	श्रेष्ठतर	वेध
२३	पार्श्वनाथ	अशुभ		वैर	२		,,	शुभ	
२४	वर्धमान					१॥	मध्यम	श्रेष्ठतर	
,,	महावीर			वैर	२		,,	,,	

राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्य	नक्षत्र	युंजो
मिथुन	बुध	कन्या	शूद्र	बिना सिंहं धनं सर्वे	मृगशिर्ष	पूर्व

साधक अक्षर—कु, कू।

नं	साध्य	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीय	६	श्वान	फ	धर्म्य		मनुष्य	मिथुन	आद्य
	विरुध्य	८ १ ३	हरिण	प		दय	राक्षस	वृ० क० ६	आद्यवेध
१	ऋषभनाथ	अशुभ				॥	स्व	सम	
२	अजितनाथ					०॥	,,	श्रेष्ठ	
३	संभवनाथ					१	मध्यम	स्वराशि	
४	अभिनंदन					०॥	,,	,,	अवेध
५	सुमतिनाथ	अशुभ				१	अशुभ	शुभ	
६	पद्मप्रभु			वैर	२		,,	श्रेष्टतर	
७	सुपार्श्वनाथ					१	,,	शुभ	
८	चंद्रप्रभु	अशुभ	वैर			३॥	मध्यम	शत्रु	
९	सुविधिनाथ	अशुभ	मैत्री			१	अशुभ	सम	वेध
१०	शीतलनाथ					१	स्वगण	,,	
११	श्रेयांसनाथ					१	मध्यम	प्राति	
१२	वासुपूज्य					१॥	अशुभ	मध्यम	वध
१३	विमलनाथ	अशुभ				१॥	स्वगण	श्रेष्ठ	
१४	अनंतनाथ					०॥	मध्यम	,,	
१५	धर्मनाथ	अशुभ			१॥		,,	अशुभतर	
१६	शांतिनाथ	अशुभ				१	,,	शुभ	वध
१७	कुंथुनाथ	अशुभ			०		अशुभ	श्रेष्ठ	
१८	अरनाथ					०॥	मध्यम	,,	
१९	मल्लिनाथ	अशुभ		वैर	२		,,	शुभ	वध
२०	मुनिसुव्रत			वैर	२	(१)	,,	प्राति	
२१	नमिनाथ	अशुभ			१॥		,,	शुभ	
२२	नेमिनाथ				१॥		अशुभ	श्रेष्ठतर	बेध
२३	पार्श्वनाथ			वैर	२		,,	शुभ	
२४	वर्धमान	अशुभ				१॥	स्व	श्रेष्ठतर	अवेध
,,	महावीर	,,		वैर	२		,,	,,	
राशि मिथुन	पति बुध	एकनाथ कन्या	वर्ण शुद्र	वश्य विनाशिह घनं				नक्षत्र आद्रा	युंजा मध्य

साधक अक्षर—के, कै, को, कौ।

न	साध्य	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीय	७	बिडाल	क	लभ्य		देव	मिथुन	आद्य
	विरुध्य	६ २ ४	उंदिर	प		देयं	राक्षस	वृ क०	आद्यत्रय
१	ऋृषभनाथ					०॥	मध्यम	सम	
२	अजितनाथ	अशुभ				०॥	,	श्रेष्ठ	
३	संभवनाथ					१	स्व	स्वराशि	
४	अभिनंदन		स्वा			०॥	,	,	एकर्म
५	सुमतिनाथ		वैर			१	वैर	शुभ	
६	पद्मप्रभु			वैर	२		,,	श्रेष्ठतर	
७	सुपार्श्वनाथ					१	,	शुभ	
८	चंद्रप्रभु					१॥	स्व	शत्रु	
९	सुविधिनाथ					१	वैर	सम	वेध
१०	शीतलनाथ	अशुभ				१	मध्यम	,	
११	श्रेयांसनाथ	अशुभ				१	स्व	प्रीति	
१२	वासुपूज्य					१॥	वैर	मध्यम	वध
१३	विमलनाथ					१॥	मध्यम	श्रेष्ठ	
१४	अनंतनाथ	अशुभ				०॥	स्व	,	
१५	धर्मनाथ				१॥			अशुभतर	
१६	शांतिनाथ					१	,	शुभ	वेध
१७	कुंथुनाथ				०		वैर	श्रेष्ठ	
१८	अरनाथ	अशुभ				०॥	स्व	,,	
१९	मल्लिनाथ			वैर	२			शुभ	वध
२०	मुनिसुव्रत	अशुभ		वैर	२	(१)		प्रीति	
२१	नमिनाथ				१॥		,,	शुभ	वध
२२	नेमिनाथ				१॥		वैर	श्रेष्ठतर	
२३	पार्श्वनाथ			वैर	२		,,	शुभ	
२४	वर्धमान					१॥	मध्यम	श्रेष्ठतर	वेध
,,	महावीर			वैर	२			,,	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्य				नक्षत्र	युंजि
मिथुन	बुध	कन्या	शुद्र	विनासिंह धन				पुनर्वसु	मध्यम

साधक अक्षर—ख-१० (खो, खौ, १-पाद ७-१३-२३ भवेध ७)

न०	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशी	नाडी
साध्य नाम	स्वकीय	४	वानर	क	लभ्य		देव	मकर	अत्य
	विरुध्य	६,८,१	मेष	प		देय	राक्षस	सिंह	अंत्यवेध
१	ऋषभदेव					०॥	मध्यम	अशुभ	भवेध
२	अजितनाथ					०॥	,,	शुभ	वेध
३	संभवनाथ					१	स्व	प्रीति	
४	अभिनंदन					०॥	,,	प्रीति	
५	सुमतिनाथ	अशुभ				१	वैर	शत्रु	वध
६	पद्मप्रभु			वैर	२		,,	मध्यम	
७	सुपार्श्वनाथ					१	,,	श्रेष्ठतर	वेध*
८	चंद्रप्रभु	अशुभ				३॥	स्व	शुभ	
९	सुविधिनाथ	अशुभ				१	वैर	अशुभ	
१०	शीतलनाथ		मैत्री			१	मध्यम	,,	
११	श्रेयांसनाथ		स्वा			१	स्व	स्वराशि	एकभं
१२	वासुपूज्य	अशुभ				१॥	वैर	श्रेष्ठ	
१३	विमलनाथ	अशुभ				१॥	मध्यम	शुभ	वध*
१४	अनंतनाथ					०॥	स्व	शुभ	
१५	धर्मनाथ	अशुभ	वैर		१॥		,,	सम	
१६	शांतिनाथ	अशुभ				१	,,	श्रेष्ठ	
१७	कुंथुनाथ		वैर		०		वैर	शुभ	वेध
१८	अरनाथ					०॥	स्व	शुभ	वेध
१९	मल्लिनाथ	अशुभ		वैर	२		,,	श्रेष्ठ	
२०	मुनिसुव्रत		स	वैर	२	(१)	,,	स्वराशि	एकम
२१	नमिनाथ	अशुभ			१॥		,,	श्रेष्ठ	
२२	नेमनाथ				१॥		वैर	मध्यम	
२३	पार्श्वनाथ			वैर	२		,,	श्रेष्ठतर	वध*
२४	वर्धमान					१॥	मध्यम	मध्यम	
,,	महावीर			वैर	२		,,	,,	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण		वश्य			नक्षत्र	युंजी
मकर	शनि	कुंभ	वैश्य		कर्क मीन			श्रवण	पश्चिम

*ख खा योनि नकुल, स्वा-११-२०, मैत्री-१०, वैर सर्प-१५-१७।

साधक अक्षर—ग, गा, गि, गी।

नं०	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग		विशोपक	गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीय	५	सिंह	फ	सम्य		राक्षस	मकर	मध्य
	निश्चय	७,६,२	हस्ति	प		दर्य	द म	सिंह	मध्यवेध
१	ऋषभनाथ					०॥	अशुभ	अशुभ	
२	अजितनाथ					०॥	,,	शुभ	
३	संभवनाथ					१	वैर	प्रीति	अवेध
४	अभिनंदन	अशुभ				०॥	,,	,,	
५	सुमतिनाथ					१	स्व	शत्रु	
६	पद्मप्रभु			वैर	२		,,	मध्यम	अवध
७	सुपार्श्वनाथ	अशुभ				१	,,	श्रेष्ठतर	
८	चंद्रप्रभु					३॥	वैर	शुभ	वध
९	सुविधिनाथ					१	स्व	अशुभ	
१०	शीतलनाथ	अशुभ				१	अशुभ	,,	वेध
११	श्रेयांसनाथ					१	वैर	स्वराशि	
१२	वासुपूज्य					१॥	स्व	श्रेष्ठ	
१३	विमलनाथ					१॥	अशुभ	शुभ	वेध
१४	अनंतनाथ	अशुभ	वैर			०॥	वैर	,	
१५	धर्मनाथ				१॥		,,	सम	वध
१६	शांतिनाथ					१	,	श्रेष्ठ	
१७	कुंथुनाथ				०		स्वगण	शुभ	
१८	अरनाथ	अशुभ	वैर			०॥	वैर	,	
१९	मल्लिनाथ			वैर	२		,,	श्रेष्ठ	
२०	मुनिसुव्रत			वैर	२	(१)	,,	स्वराशि	
२१	नमिनाथ				१॥		,,	श्रेष्ठ	
२२	नेमिनाथ				१॥		स्वगण	मध्यम	अवेध
२३	पार्श्वनाथ	अशुभ		वैर	२		,,	श्रेष्ठतर	
२४	वर्धमान					१॥	अशुभ	मध्यम	
,	महावीर			वैर	२			,,	

राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्य	नक्षत्र	युंजि
मकर	शनि	क ग	वैश्य	कर्क मीन	धनिष्ठा	पश्चिम

साधक अक्षर—गो, गौ।

नं	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विंशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीय	६	अश्व	क	लभ्य		राक्षस	कुंभ	आद्य
	विरुध्ध	८,१,३	महिष	प		देयं	दे० न०	कर्क	आद्यवध
१	ऋषभनाथ	अशुभ				०॥	अशुभ	शुभ	
२	अजितनाथ					०॥	,,	श्रेष्ठतर	
३	संभवनाथ					१	वैर	मध्यम	
४	अभिनंदन					०॥	,,	,,	वध
५	सुमतिनाथ	अशुभ				१	स्व	सम	
६	पद्मप्रभु			वैर	२		,,	प्रीति	
७	सुपार्श्वनाथ					१	,	शुभ	
८	चंद्रप्रभु	अशुभ				३॥	वैर	श्रेष्ठ	
९	सुविधिनाथ	अशुभ				१	स्व	शुभ	वेध
१०	शीतलनाथ					१	अशुभ	,,	
११	श्रेयांसनाथ					१	वैर	श्रेष्ठ	
१२	वासुपूज्य		स्वा			१॥	स्व	स्वराशि	एकभं
१३	विमलनाथ	अशुभ				१॥	अशुभ	अशुभ	
१४	अनंतनाथ					०॥	वैर	,,	
१५	धर्मनाथ	अशुभ			१॥		,,	शत्रु	
१६	शांतिनाथ	अशुभ	मैत्री			१	,	शुभ	वध
१७	कुंथुनाथ	अशुभ			०		स्वगण	श्रेष्ठतर	
१८	अरनाथ					०॥	वैर	अशुभ	
१९	मल्लिनाथ	अशुभ	मैत्री	वैर	०		,,	शुभ	वध
२	मुनिसुव्रत			वैर	२	(१)	,,	श्रेष्ठ	
२१	नमिनाथ	अशुभ	मैत्री		१॥		,	शुभ	वेध
२२	नेमिनाथ				१॥		स्वगण	प्रीति	
२३	पार्श्वनाथ			वैर	२		,,	शुभ	
२४	वर्धमान	अशुभ				१॥	अशुभ	प्रीति	वेध
,,	महावीर			वैर	२		,,	,,	,
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्य				नक्षत्र	युजा
कुंभ	शनि	मकर	शुद्र	विना सिंह मनुष्य च				शतभिषा	पश्चिम

साधक अक्षर—ध-१० सर्वस्वर सहित, ड-१० स्वर सहित ।

नं०	राध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
ग्राह्य नाम	स्वकीर्य	६	श्वान	क	क्षम्य		मनुष्य	मिथुन	आद्य
	विरुध्द	८,१२	हरिण	प		देय	राक्षस	वृ क	आद्यवेध
१	ऋषभनाथ	अशुभ				०॥	स्व	सम	
२	अजितनाथ					०॥	,,	श्रेष्ठ	
३	संभवनाथ					१	मध्यम	स्वराशि	
४	अभिनंदन					०॥	,,	,	वेध
५	सुमतिनाथ	अशुभ				१	अशुभ	शुभ	
६	पद्मप्रभु			वेर	२		,	श्रेष्ठतर	
७	सुपार्श्वनाथ					१		शुभ	
८	चंद्रप्रभु	अशुभ	वेर			३॥	मध्यम	शत्रु	
९	सुविधिनाथ	अशुभ	मैत्री			१	अशुभ	सम	वेध
१०	शीतलनाथ					१	स्वगण	,	
११	श्रेयांसनाथ					१	मध्यम	प्रीति	
१२	वासुपूज्य					१॥	अशुभ	मध्यम	वेध
१३	विमलनाथ	अशुभ				१॥	स्वगण	श्रेष्ठ	
१४	अनंतनाथ					०॥	मध्यम	,,	
१५	धर्मनाथ	अशुभ			१॥		,,	अशुभतर,	
१६	शांतिनाथ	अशुभ				१		शुभ	वेध
१७	कुंथुनाथ	अशुभ			०		अशुभ	श्रेष्ठ	
१८	अरनाथ					०॥	मध्यम	,	
१९	मल्लिनाथ	अशुभ		वेर	२		,	शुभ	वेध
२०	मुनिसुव्रत			वेर	२	(१)	,,	प्रीति	
२१	नमिनाथ	अशुभ			१॥		,	शुभ	वेध
२२	नेमिनाथ			वेर	१॥		अशुभ	श्रेष्ठतर	
२३	पार्श्वनाथ				२		,,	शुभ	
२४	वर्धमान	अशुभ				१॥	स्व	श्रेष्ठतर	वेध
,,	महावीर	,,			२		,,	,	,,
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	यरयं				नक्षत्र	युजी
मिथुन	बुध	कन्या	शुद्र	नारसिंह धनं				आर्द्र	

साधक अक्षर—च, चा, चि ची।

नं॰	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीयं	६,	हस्ति	च	लभ्यं		देव	मीन	अत्य
	विदर्भ	२४,६	सिंह	य		देय	राक्षस	तुला	अत्यवे
१	ऋषभनाथ					१	मध्यम	श्रेष्ठतर	मध्य
२	अजितनाथ	अशुभ				१	,,	शुभ	वेध
३	सम्भवनाथ					१॥	स्व	श्रेष्ठ	
४	अभिनंदन					१	,	,,	
५	सुमतिनाथ					१॥	वैर	प्राति	वेध
६	पद्मप्रभु				१॥		,,	सम	
७	सुपार्श्वनाथ					१॥	,,	शत्रु	वेध
८	चंद्रप्रभु					•	स्व	शुभ	
९	सुविधिनाथ				१॥	१॥	वैर	श्रेष्ठतर	
१०	शीतलनाथ	अशुभ				१॥	मध्यम	,,	
११	श्रेयांसनाथ	अशुभ				१॥	स्व	शुभ	वध
१२	वासुपूज्य	अशुभ		वैर		२	वैर	अशुभ	
१३	विमलनाथ			वैर		२	मध्यम	स्वराशि	
१४	अनंतनाथ		स्वा			१	स्व	,,	एकर्भ
१५	धर्मनाथ				१			मध्यम	
१६	शांतिनाथ					१॥	,,	श्रेष्ठ	
१७	कुंथुनाथ					३॥	वैर	शुभ	वेध
१८	अरनाथ		स्वा			१	स्व	स्वराशि	एकर्भ
१९	मल्लिनाथ						,,	श्रेष्ठ	
२०	मुनिसुव्रत	अशुभ			१॥	(१॥)	,,	शुभ	वेध
२१	नमिनाथ				१			श्रेष्ठ	
२२	नेमिनाथ				१		वैर	सम	
२३	पार्श्वनाथ				१॥		,,	शत्रु	वेध
२४	वर्धमान			वैर		२	मध्यम	सम	
,	महावीर				१॥		,,	,	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्य				नक्षत्र	युंजि
मीन	गुरु	धन	ब्राह्मण	•				रेवती	पूर्व

साधक अक्षर—चु, चू चे, चै, चो चौ।

नं०	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीय	१,	अश्व	च	हम्य		देव	मेष	आद्य
	विरुध्य	३,५,७	महिष	द		दय	राक्षस	कन्या	आद्य
१	ऋषभनाथ	अशुभ				१	मध्यम	शुभ	
२	अजितनाथ					१	"	अशुभ	
३	संभवनाथ	अशुभ				१॥	स्व	शुभ	
४	अभिनंदन	अशुभ				१	"	"	वेध
५	सुमतिनाथ					१॥	वैर	"	
६	पद्मप्रभु	अशुभ			१॥	"	"	शत्रु	
७	सुपार्श्वनाथ	अशुभ				१५	"	सम	
८	चंद्रप्रभु					"	स्व	प्रीति	
९	सुविधिनाथ					१॥	वैर	शुभ	
१०	शीतलनाथ					१॥	मध्यम	"	वध
११	श्रेयांसनाथ					१॥	स्व	श्रेष्ठ	
१२	वासुपूज्य		मैत्री	वैर		७	वैर	शुभ	
१३	विमलनाथ			वैर		२	मध्यम	श्रेष्ठ	वध
१४	अनंतनाथ					१	स्व	"	
१५	धर्मनाथ				१		"	श्रेष्ठतर	
१६	शांतिनाथ		स्वा			१॥	"	स्वराशि	
१७	कुंथुनाथ	अशुभ			७॥		वैर	अशुभ	वेध
१८	अरनाथ					१	स्व	श्रेष्ठ	
१९	मल्लिनाथ		स्वा		१॥		"	स्वराशि	
२०	मुनिसुव्रत				७॥	(१॥)		श्रेष्ठ	
२१	नमिनाथ		स्वा		१			स्वराशि	वेध
२२	नेमनाथ	अशुभ			७		वैर	शत्रु	
२३	पार्श्वनाथ	अशुभ			७॥		"	सम	वेध
२४	वर्धमान	अशुभ		(वैर)		(२)	मध्यम	शत्रु	
"	महावीरस्वामी				१॥	"	"	"	वेध

राशि	पति	एकनाथ	[illegible]		
मेष	मंगल	वृश्चिक	वृश्चिक	[illegible]	नक्षत्र भरणी

साधक अक्षर—छ १० ।

नं साध्य नाम	साध्य	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
	स्वकीय	६	श्वान	च	साध्यं		मनुष्य	मिथुन	आद्य
	विरुध्य	८,१,२	हरिण	य		देयं	राक्षस	वृ० क०	आद्य
१	ऋषभनाथ	अशुभ				१	स्व	सम	
	अजितनाथ					१	,,	श्रेष्ठ	
३	संभवनाथ					१॥	मध्यम	स्वराशि	
४	अभिनदन					१	,,	,	
५	सुमतिनाथ	अशुभ				१॥	अशुभ	शुभ	वेध
६	पद्मप्रभु				१॥		,,	श्रेष्ठतर	
७	सुपार्श्वनाथ					१॥	,,	शुभ	
८	चंद्रप्रभु	अशुभ	वैर				मध्यम	शत्रु	
९	सुविधिनाथ	अशुभ	मैत्री			२॥	अशुभ	सम	
१०	शीतलनाथ					१॥	स्वगण	,	वेध
११	श्रेयांसनाथ					१॥'	मध्यम	प्रीति	
१२	वासुपूज्य			वैर		२	अशुभ	मध्यम	
१३	विमलनाथ	अशुभ		वैर		२	स्वगण	श्रेष्ठ	वध
१४	अनंतनाथ					१	मध्यम	,,	
१५	धर्मनाथ	अशुभ			१		,,	अशुभतर	
१६	शांतिनाथ	अशुभ				१॥	,,	शुभ	वध
१७	कंथुनाथ	अशुभ			३॥		अशुभ	श्रेष्ठ	
१८	अरनाथ					१	मध्यम	,,	
१९	मल्लिनाथ	अशुभ			१॥		,,	शुभ	वेध
२	मुनिसुव्रत				१॥	(१॥)	,	प्रीति	
२१	नमिनाथ	अशुभ			१		,,	शुभ	बध
२२	नेमनाथ				१		अशुभ	श्रेष्ठतर	
२३	पार्श्वनाथ				१॥		,,	शुभ	
२४	वर्धमान	अशुभ		(वैर)		(२)	स्व	श्रेष्ठतर	
,,	महावीरस्वामी				१॥		,	,,	वेध
राशि मिथुन	पति बुध	एकनाथ कन्या	वर्ण शुद्र	वश्य विनासिंहं धनं सुत्रे				नक्षत्र आद्रा	युंजी मध्य

साधक अक्षर-ज-१०(जुजूजेजैजोजौ अभिजित्)(जजि १ भवेध ⑦)

नं	साध्य	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीय	३	नकुल	च	लभ्य		मनुष्य	मकर	अत्य
	विरुध्य	५,७,९	सर्प	य		देय	राक्षस	सिंह	अत्य
१	ऋषभनाथ		स्वा			१	स्व	अशुभ	एकर्भ *
२	अजितनाथ		वैर			१	,	शुभ	वध
३	संभवनाथ	अशुभ	वैर			१॥	मध्यम	प्रीति	
४	अभिनंदन	अशुभ				१	,,	,	
५	सुमतिनाथ					१॥	अशुभ	शत्रु	वेध
६	पद्मप्रभु	अशुभ			१॥		,,	मध्यम	
७	सुपार्श्वनाथ	अशुभ				१॥	,,	श्रेष्ठतर	वध
८	चंद्रप्रभु					०	मध्यम	शुभ	
९	सुविधिनाथ					१॥	अशुभ	अशुभ	
१०	शीतलनाथ					१॥	स्वगण	,,	
११	श्रेयांसनाथ					१॥	मध्यम	स्वराशि	वध
१२	वासुपूज्य			वैर		२	अशुभ	श्रेष्ठ	
१३	विमलनाथ			वैर		२	स्वगण	शुभ	
१४	अनंतनाथ	अशुभ				१	मध्यम	,	वेध
१५	धर्मनाथ				१		,	सम	
१६	शांतिनाथ					१॥	,,	श्रेष्ठ	
१७	कुंथुनाथ				३॥		अशुभ	शुभ	वध
१८	अरनाथ	अशुभ				१	मध्यम	,,	वध
१९	मल्लिनाथ				१॥			श्रेष्ठ	
२०	मुनिसुव्रत				१॥	(१॥)	,	स्वराशि	वेध
२१	नमिनाथ				१		,,	श्रेष्ठ	
२२	नेमनाथ	अशुभ			१		अशुभ	मध्यम	
२३	पार्श्वनाथ	अशुभ			१॥		,,	श्रेष्ठतर	वेध
२४	वर्धमान			(वैर)		(२)	स्व	मध्यम	
,,	महावीरस्वामी				१॥		,,	,,	
राशि मकर	पति शनि	एकनाथ कुंभ	वर्ण वैश्य	वश्य कर्क मीन				नक्षत्र उ० षा०	युंजि पश्चिम

साधक अक्षर—भ-१०।

नं०	साध्यनिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गणः	राशि	नाड़ी
साध्य नाम	स्वकीयं	८	गौ	प	धम्यं		मनुष्य	मीन	मध्य
	विरुध्यं	१,३,५	व्याघ्र	य		दम	राक्षस	मुक्त	मध्य
१	ऋषभनाथ	अशुभ				१	स्व	श्रेष्ठतर	
२	अजितनाथ					१	,,	शुभ	
३	संभवनाथ	अशुभ				१॥	मध्यम	श्रेष्ठ	भवध
४	अभिनंदन					१	,,		
५	सुमतिनाथ	अशुभ				१॥	अशुभ	प्रीति	
६	पद्मप्रभु	अशुभ	कुवेर		१॥		,	सम	मवेध
७	सुपार्श्वनाथ		कुवेर			१॥		शत्रु	
८	चंद्रप्रभु					•	मध्यम	शुभ	वध
९	सुविधिनाथ	अशुभ							
१	शीतलनाथ					१॥	अशुभ	श्रेष्ठतर	
११	श्रेयांसनाथ					१॥	स्वगण	,	वध
१२	वासुपूज्य					१॥	मध्यम	शुभ	
१३	विमलनाथ			वेर		२	अशुभ	अशुभ	
१४	अनंतनाथ		स्वा	वैर		२	स्वगण	स्वराशि	एकभं
१५	धर्मनाथ					१	मध्यम	,,	
१६	शांतिनाथ	अशुभ			१		,,	मध्यम	वध
१७	कुंथुनाथ	अशुभ				१॥	,	श्रेष्ठ	
१८	अरनाथ				३॥		अशुभ	शुभ	
१९	मल्लिनाथ	अशुभ				१	मध्यम	स्वराशि	
२०	मुनिसुव्रत				१॥		,	श्रेष्ठ	
२१	नमिनाथ	अशुभ			१॥	(१॥)	,,	शुभ	
२२	नेमनाथ	अशुभ	कुवेर		१		,	श्रेष्ठ	
२३	पार्श्वनाथ		कुवेर		१		अशुभ	सम	भवध
२४	वर्धमान	अशुभ	मैत्री	(वेर)	१॥		,	शत्रु	
•	महावीरस्वामी					(२)	स्व	सम	
					१॥		,,	,,	

राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्य	नक्षत्र	युञ्जी
मीन	गुरु	धन	ब्राह्मण	०	उ० भा०	पश्चिम

साधक अक्षर—ट, टा, टि, टी, टु, टू। (ट ३, ६, २२ भवेध ⊛)

न०	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीयं	२	उदिर	ट	लभ्यं		मनुष्य	सिंह	मध्य
	विरुध्धं	४,६,८	बिडाल	श		देय	राक्षस	मकर	मध्य
१	ॠषभनाथ				२॥		स्व	शुभ	
२	अजितनाथ	अशुभ			२॥		,,	श्रेष्ठ	
३	संभवनाथ			वैर	२		मध्यम	शुभ	वध*
४	अभिनंदन		कुवैर		२॥		,,	,	
५	सुमतिनाथ		मैत्री	वैर	२		अशुभ	स्वराशि	
६	पद्मप्रभु					३	,,	शुभ	वध*
७	सुपार्श्वनाथ			वैर	२		,,	,,	
८	चंद्रप्रभु	अशुभ				०॥	मध्यम	श्रेष्ठतर	वध
९	सुविधिनाथ			वैर	२		अशुभ	शुभ	
१०	शीतलनाथ			वैर	२		स्वगण	शुभ	वेध
११	श्रेयांसनाथ	अशुभ		वैर	२		मध्यम	शत्रु	
१२	वासुपूज्य	अशुभ				२॥	अशुभ	सम	
१३	विमलनाथ	अशुभ				२॥	स्वगण	प्रीति	वध
१४	अनंतनाथ				२॥		मध्यम	,,	
१५	धर्मनाथ	अशुभ			०॥		,,	श्रेष्ठ	वध
१६	शांतिनाथ			वेर	२		,	शुभ	
१७	कुंथुनाथ					१	अशुभ	श्रेष्ठ	
१८	अरनाथ				२॥		मध्यम	प्रीति	
१९	मल्लिनाथ					३	,,	शुभ	
२०	मुनिसुव्रत	अशुभ		(वेर)	(२)	३	,,	शत्रु	
२१	नमिनाथ				०॥		,,	शुभ	
२२	नेमनाथ				०॥		अशुभ	शुभ	वेध*
२३	पार्श्वनाथ					३	,,	,,	
२४	वर्धमान					(२॥)	स्व	,,	
,,	महावीरस्वामी					३	,,	,,	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्य				नक्षत्र	युंजी
सिंह	सूर्य	०	क्षत्रिय	विना धन वृश्चिकं सर्व				पू० फा०	मध्य

साधक अक्षर—टे, टै।

न	साध्य जिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीय	३	गौ	ट	लभ्य		मनुष्य	सिंह	आद्य
	विरुद्ध	५ ७ ६	व्याघ्र	श		देयं	राक्षस	मकर	आद्य
१	ऋषभनाथ								
२	अजितनाथ				२॥		स्व	शुभ	
३	सभवनाथ	अशुभ		वेर	२॥		,,	श्रेष्ठ	
४	अभिनंदन	अशुभ			२		मध्यम	शुभ	
५	सुमतिनाथ				२॥		,	,	भवध
६	पद्मप्रभु	अशुभ	कुवेर	वेर	२		अशुभ	स्वराशि	
७	सुपारसनाथ	अशुभ	कुवेर	वेर	२	३	,	शुभ	
८	चंद्रप्रभु						,,	,,	
९	सुविधिनाथ					०॥	मध्यम	श्रेष्ठतर	
१०	शीतलनाथ			वेर	२		अशुभ	शुभ	बध
११	श्रेयांसनाथ			वेर	२		स्वगण	,,	
१२	वासुपूज्य			वेर	२		मध्यम	शत्रु	
१३	विमलनाथ		मत्री			२॥	अशुभ	सम	वेध
१४	अनंतनाथ	अशुभ				२॥	स्वगण	प्रीति	
१५	धर्मनाथ				२॥		मध्यम	,,	
१६	शांतिनाथ				०॥		,,	श्रेष्ठ	
१७	कुंथुनाथ			वेर	२		,	शुभ	वध
१८	अरनाथ	अशुभ				१	अशुभ	श्रेष्ठ	
१९	मल्लिनाथ				२॥		मध्यम	प्रीति	
२०	मुनिसुव्रत			(वेर)	(२)	३	,,	शुभ	वध
२१	नमिनाथ					३	,,	शत्रु	
२२	नेमनाथ	अशुभ	कुवेर		०॥		,	शुभ	वध
२३	पार्श्वनाथ	अशुभ	कुवेर		०॥		अशुभ	,,	
२४	वर्धमान		स्व			३	,,	,,	
,	महावीरस्वामी					(२॥)	स्व	,,	एकर्भ
						३	,	,	,,
राशि सिंह	पति सूर्य	एकनाथ	वर्ण क्षत्रिय	वश्य विना धन वृश्चिक सर्व			नक्षत्र उ० फा०		युंजि मध्य

साधक अक्षर—टो, टौ ।

नं०	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साधक नाम	स्वकीय	३	गौ	ट	लभ्य		मनुष्य	कन्या	आद्य
	विरुद्ध	५,७,६	व्याघ्र	श		देय	राक्षस	मेष	आद्य
१	ऋषभनाथ				२॥		स्व	श्रेष्ठ	
२	अजितनाथ				२॥		,,	शुभ	
३	संभवनाथ	अशुभ		वैर	२		मध्यम	श्रेष्ठतर	
४	अभिनंदन	अशुभ			२॥		,,	,,	वेध
५	सुमतिनाथ			वैर	२		अशुभ	शुभ	
६	पद्मप्रभु	अशुभ	कुवैर			३	,,	स्वराशि	
७	सुपार्श्वनाथ	अशुभ	कुवैर	वैर	२		,,	श्रेष्ठ	
८	चंद्रप्रभु					०॥	मध्यम	शुभ	
९	सुविधिनाथ			वैर	२		अशुभ	श्रेष्ठ	वेध
१०	शीतलनाथ			वैर	२		स्वगण	,,	
११	श्रेयांसनाथ			वैर	२		मध्यम	मध्यम	
१२	वासुपूज्य					२॥	अशुभ	प्रीति	वेध
१३	विमलनाथ		मैत्री			२॥	स्वगण	सम	
१४	अनंतनाथ	अशुभ			२॥		मध्यम	,,	
१५	धर्मनाथ				०॥		,,	शुभ	
१६	शांतिनाथ			वैर	२		,,	शत्रु	वेध
१७	कुंथुनाथ					१	अशुभ	शुभ	
१८	अरनाथ	अशुभ			२॥		मध्यम	सम	
१९	मल्लिनाथ					३	,,	शत्रु	वेध
२०	मुनिसुव्रत			(वैर)	(२)	३	,,	मध्यम	
२१	नमिनाथ				०॥		,,	शत्रु	वेध
२२	नेमिनाथ	अशुभ	कुवैर		०॥		अशुभ	स्वराशि	
२३	पार्श्वनाथ	अशुभ	कुवैर			३	,,	श्रेष्ठ	
२४	वर्धमान		स्वा			(२॥)	स्व	स्वराशि	एकभ
,,	महावीरस्वामी					३	,,	,,	
राशि	पति	धनकनाथ	वर्ण	वश्य			नक्षत्र	युंजि	
कन्या	बुध			विनासिंह धनं सर्वे			उ० फा०	मुख्य	

साधक अक्षर—ठ-१० ।

न	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशी	नाडी
क्षत्र नाम	स्वकीय	४	महिष	ट	लभ्यं		देव	कन्या	आद्य
	विरुध्य	६ ८, १	अश्व	श		देयं	मनुष्य	मेष	आद्य
१	ऋषभदेव								
२	अजितनाथ				२॥		मध्यम	श्रेष्ठ	
३	संभवनाथ				२॥		,,	शुभ	
४	अभिनंदन			वैर	२		स्व	श्रेष्ठतर	
५	सुमतिनाथ	अशुभ			२॥		,,	,	अवेध
६	पद्मप्रभु			वैर	२		वैर	शुभ	
७	सुपार्श्वनाथ					३	,,	स्वराशि	
८	चंद्रप्रभु	अशुभ		वैर	२		,,	श्रेष्ठ	
९	सुविधिनाथ	अशुभ				॥	स्व	शुभ	
१०	शीतलनाथ			वैर	२		वैर	श्रेष्ठ	वेध
११	श्रेयांसनाथ			वैर	२		मध्यम	,,	
१२	वासुपूज्य	अशुभ	वैर	वैर	२		स्व	मध्यम	
१३	विमलनाथ	अशुभ				३॥	घर	प्रीति	वेध
१४	अनंतनाथ					२॥	मध्यम	सम	
१५	घमनाथ	अशुभ			२॥		स्व	,,	
१६	शांतिनाथ	अशुभ	वैर		०॥		,,	शुभ	
१७	कुंथुनाथ			वैर	२		,,	शत्रु	वेध
१८	अरनाथ					१	वैर	शुभ	
१९	मल्लिनाथ	अशुभ	वैर		२॥		स्व	सम	
२०	मुनिसुव्रत					३	,,	शत्रु	वध
२१	नमिनाथ	अशुभ	वैर	(वैर)	(२)	३	,,	मध्यम	
२२	नेमनाथ				०॥		,	शत्रु	वध
२३	पार्श्वनाथ				०॥		वैर	स्वराशि	
२४	वर्धमान					३	,,	श्रेष्ठ	
,,	महावीरस्वामी					(२॥)	मध्यम	स्वराशि	अवेध
						३	,,	,,	
राशि कन्या	पति बुध	एकनाथ मिथुन	वर्ण वैश्य	वश्य विनासिंह धर्न				नक्षत्र हस्त	युंजी मध्य

साधक अक्षर—ड, डा।

नं०	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग		
मुख	स्वकीय	८	मेष	ट	लभ्यं	
मुख	विरुध्य	१,३,५	वानर	श		दे
१	ऋषभनाथ	अशुभ			२॥	
२	अजितनाथ				२॥	
३	संभवनाथ	अशुभ		वैर	२	
४	अभिनंदन				२॥	
५	सुमतिनाथ	अशुभ		वैर	२	
६	पद्मप्रभु	अशुभ				३
७	सुपार्श्वनाथ			वैर	२	
८	चन्द्रप्रभु					०।
९	सुविधिनाथ	अशुभ		वैर	२	
१०	शीतलनाथ		कुवैर	वैर	२	
११	श्रेयांसनाथ		कुवैर	वैर	२	
१२	वासुपूज्य					[illegible]
१३	विमलनाथ					[illegible]
१४	अनंतनाथ				२॥	
१५	धर्मनाथ		स्वा		०॥	
१६	शांतिनाथ	अशुभ		वैर	२	
१७	कुंथुनाथ	अशुभ	मैत्री			१
१८	अरनाथ				२॥	
१९	मल्लिनाथ	अशुभ				३
२०	मुनिसुव्रत		कुवैर	(वैर)	(२)	३
२१	नमिनाथ	अशुभ			०॥	
२२	नेमिनाथ	अशुभ			०॥	
२३	पार्श्वनाथ					
२४	वर्धमान	अशुभ				(३॥)
,,	महावीरस्वामी	,,				३
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण		वार्द	
कर्क	चन्द्र	०	ब्राह्मण		०	

साधकअक्षर—डि डी डु डू डे डै डो डौ (डि डी १ पाद ७-१७-२३ भवेध)

न०	साध्य	तारा	योनि	वर्ग			गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीय	९	बिडाल	ट	लभ्य		राक्षस	कर्क	मत्य
	विरुध्य	२,४,६	उंदिर	श		देय	द० म०	मि० धु०	अत्य
१	ऋषभनाथ				२॥		अशुभ	प्रीति	भवेध*
२	अजितनाथ	अशुभ			२॥		,,	शुभ	वेध
३	संभवनाथ			वैर	२		वैर	अशुभतर	
४	अभिनंदन		मैत्री		२॥		,,	,,	
५	सुमतिनाथ		कुवैर	वैर	२		स्व	श्रेष्ठ	वेध
६	पद्मप्रभु					१	,,	शुभ	
७	सुपार्श्वनाथ			वैर	२		,,	श्रेष्ठ	वेध
८	चंद्रप्रभु					०॥	वैर	मध्यम	
९	सुविधिनाथ			वैर	२		स्व	प्रीति	
१०	शीतलनाथ	अशुभ		वैर	२		अशुभ	,,	
११	श्रेयांसनाथ	अशुभ		वैर	२		वैर	सम	वेध
१२	वासुपूज्य	अशुभ				२॥	स्व	शत्रु	
१३	विमलनाथ					२॥	अशुभ	मध्यम	
१४	अनंतनाथ				२॥		वैर	,,	वेध
१५	धर्मनाथ				०॥		,,	स्वराशि	
१६	शांतिनाथ			वैर	२		,	श्रेष्ठतर	
१७	कुंथुनाथ					१	स्वगण	शुभ	वेध*
१८	अरनाथ				२॥		वैर	मध्यम	वेध
१९	मल्लिनाथ					३	,	श्रेष्ठतर	
२०	मुनिसुव्रत	अशुभ		(वैर)	(२)	३	,,	सम	वेध
२१	नमिनाथ				०॥		,	श्रेष्ठतर	
२२	नेमनाथ				०॥		स्वगण	शुभ	
२३	पार्श्वनाथ					३	,,	श्रेष्ठ	वेध*
२४	वर्धमान					(२॥)	अशुभ	शुभ	
,,	महावीरस्वामी					३	,,	,,	
राशि कर्क	पति चन्द्र	एकनाथ ०	वर्ण ब्राह्मण		वश्य ०			नक्षत्र अश्लेषा	युंजी मध्य

साधक अक्षर—ढ १०।

न	साध्यं	तारा	योनि	व
साध्य नाम	स्वकीय	२	वानर	
	विरुध्य	४,६,८	मेष	
१	ऋषभनाथ			
२	अजितनाथ	अशुभ		
३	संभवनाथ			
४	अभिनंदन			
५	सुमतिनाथ			
६	पद्मप्रभु			
७	सुपार्श्वनाथ			
८	चंद्रप्रभु	अशुभ		
९	सुविधिनाथ			
१०	शीतलनाथ		स्वा	
११	श्रेयांसनाथ	अशुभ	मैत्री	
१२	वासुपूज्य	अशुभ		
१३	विमलनाथ	अशुभ		
१४	अनंतनाथ			
१५	धर्मनाथ	अशुभ	वैर	
१६	शांतिनाथ			
१७	कुंथुनाथ		वैर	
१८	अरनाथ			
१९	मल्लिनाथ			
२०	मुनिसुव्रत	अशुभ	मैत्री	(
२१	नमिनाथ			
२२	नेमनाथ			
२३	पार्श्वनाथ			
२४	वर्धमान			
,,	महावीरस्वामी			
राशि	पति	एकनाय	वर्ण	
धन	गुरु	मीन	क्षत्रिय	

साधक अक्षर—ण-१०।

न	साध्य	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशी	नाडी
साध्य नाम	स्वकीय	४	महिष	ट	लभ्य		देव	कन्या	आद्य
	विरुध्य	६,८,१	अश्व	श		देयं	मनुष्य	मेष	आद्य
१	ऋषभदेव				२॥		मध्यम	श्रेष्ठ	
२	अजितनाथ				२॥		,,	शुभ	
३	संभवनाथ			वैर	२		स्व	श्रेष्ठतर	
४	अभिनंदन				२॥		,,	,	वेध
५	सुमतिनाथ	अशुभ		वैर	२		वैर	शुभ	
६	पद्मप्रभु					३	,,	स्वराशि	
७	सुपार्श्वनाथ			वर	२		,,	श्रेष्ठ	
८	चंद्रप्रभु	अशुभ				०॥	स्व	शुभ	
९	सुविधिनाथ	अशुभ		वैर	२		वैर	श्रेष्ठ	वेध
१०	शीतलनाथ			वैर	२		मध्यम	,	
११	श्रेयांसनाथ			वैर	२		स्व	मध्यम	
१२	वासुपूज्य	अशुभ	वैर			२॥	धर	प्रीति	वेध
१३	विमलनाथ	अशुभ				२॥	मध्यम	सम	
१४	अनंतनाथ				२॥		स्व	,,	
१५	धर्मनाथ	अशुभ			॥		,,	शुभ	
१६	शांतिनाथ	अशुभ	वैर	वैर	२		,,	शत्रु	वेध
१७	कुंथुनाथ						वैर	शुभ	
१८	अरनाथ				२॥	१	स्व	सम	
१९	मल्लिनाथ	अशुभ	वैर				,,	शत्रु	वेध
२०	मुनिसुव्रत			(वैर)	(२)	३	,,	मध्यम	
२१	नमिनाथ	अशुभ	वैर		०॥	३	,	शत्रु	वेध
२२	नेमनाथ				•॥		वैर	स्वराशि	
२३	पार्श्वनाथ					३	,,	श्रेष्ठ	
२४	वर्धमान					(२॥)	मध्यम	स्वराशि	वेध
,,	महावीरस्वामी					३	,,	,,	,,
राशि कन्या	पति बुध	एकनाथ मिथुन	वर्ण वैश्य	वश्य विनासिंह धर्न				नक्षत्र हस्त	युंजी मध्य

साधक अक्षर-त ता

नं	साध्य	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीय	६	महिष	त	लभ्यं		देव	तुला	अन्त्य
	विरुध्य	८,६,२	अश्व	अ		देय	राक्षस	मीन	अत्यवेध
१	ऋषभनाथ	अशुभ		कुवेर	२		मध्यम	शुभ	मवेध
२	अजितनाथ			कुवेर	२		,	प्रीति	वेध
३	संभवनाथ				१॥		स्व	शुभ	
४	अभिनंदन			कुवेर	२		,,	,	
५	सुमतिनाथ	अशुभ			१॥		वैर	,,	वेध
६	पद्मप्रभु				०॥		वैर	श्रेष्ठ	
७	सुपार्श्वनाथ				१॥		वैर	स्वराशि	वेध
८	चंद्रप्रभु	अशुभ				१	स्व	अशुभ	
९	सुविधिनाथ	अशुभ			१॥		वैर	शुभ	
१०	शीतलनाथ				१॥		मध्यम	,,	
११	श्रेयांसनाथ				१॥		स्व	श्रेष्ठतर	वेध
१२	वासुपूज्य		वैर		१		वैर	शुभ	
१३	विमलनाथ	अशुभ			१		मध्यम	शत्रु	
१४	अनंतनाथ			कुवेर	२		स्व	,	वेध
१५	धर्मनाथ	अशुभ				०	,,	श्रेष्ठ	
१६	शांतिनाथ	अशुभ	वैर		१॥		,,	सम	
१७	कुंथुनाथ	अशुभ				१॥	वैर	प्रीति	वेध
१८	अरनाथ			कुवेर	२		स्व	शत्रु	वेध
१९	मल्लिनाथ	अशुभ	वैर		०॥		,,	सम	
२०	मुनिसुव्रत				०॥		,	श्रेष्ठतर	वध
२१	नमिनाथ	अशुभ	वैर			०	,,	सम	
२२	नेमनाथ					०	वैर	श्रेष्ठ	
२३	पार्श्वनाथ				०॥		,,	स्वराशि	वेध
२४	वर्धमान	अशुभ			(१)		मध्यम	श्रेष्ठ	
,,	महावीरस्वामी	,,			०॥		,,	,,	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्य				नक्षत्र	युंजि
तुला	शुक्र	वृषभ	शुद्र	विनासिंह मनुष्यच				स्वाति	मध्य

साधक अक्षर—ति ती तु तू ते तै।

न	साध्य	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीय	७	व्याघ्र	त	लभ्य		राक्षस	तुला	अंत्य
	विरुध्य	१ २,४	गौ	अ		देयं	दे० म०	मान	अंत्यनाभ
१	ऋषभनाथ			कुवेर	२		अशुभ	शुभ	अवेध
२	अजितनाथ	अशुभ		कुवेर	२		,,	प्रीति	वेध
३	संभवनाथ				१॥		वैर	शुभ	
४	अभिनंदन			कुवेर	२		,,	,,	
५	सुमतिनाथ				१॥		स्व	,	वेध
६	पद्मप्रभु		मैत्री		०॥		,	श्रेष्ठ	
७	सुपार्श्वनाथ		स्वा		१॥		,,	स्वराशि	एकर्भ
८	चंद्रप्रभु					१	वैर	अशुभ	
९	सुविधिनाथ				१॥		स्व	शुभ	
१०	शीतलनाथ	अशुभ			१॥		अशुभ	,,	
११	श्रेयांसनाथ	अशुभ			१॥		वैर	श्रेष्ठतर	वेध
१२	वासुपूज्य				१		स्व	शुभ	
१३	विमलनाथ		वैर		१		अशुभ	शत्रु	
१४	अनंतनाथ	अशुभ		कुवेर	२		वैर	,	वध
१५	धर्मनाथ					•	,,	श्रेष्ठ	
१६	शांतिनाथ				१॥		,	सम	
१७	कुंथुनाथ					१॥	स्वगण	प्रीति	वध
१८	अरनाथ	अशुभ		कुवेर	२		वैर	शत्रु	वेध
१९	मल्लिनाथ				०॥		,,	सम	
२०	मुनिसुव्रत	अशुभ			०॥		,,	श्रेष्ठतर	वध
२१	नमिनाथ					•	,,	सम	
२२	नेमनाथ		मैत्री			०	स्वगण	श्रेष्ठ	
२३	पार्श्वनाथ		स्वा		०॥		,,	स्वराशि	एकभ
२४	वर्धमान		वैर		(१)		अशुभ	श्रेष्ठ	
,,	महावीरस्वामी		,,		०॥		,	,	
राशि तुला	पति शुक्र	एकनाथ वृषभ	वर्ण शुद्र	वश्यं विना सिंह मनुष्यच				नक्षत्र विशाखा	युंजि मध्य

साधक अक्षर—तो तौ।

नं०	साध्य	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीय	७,	व्याघ्र	त	लभ्य		राक्षस	वृश्चिक	अन्त्य
	विरुद्ध	१,२,४	गौ	घ		देय	दे० म०	मिथुन	अन्त्यवेध
१	ऋषभनाथ			कुबेर	२		अशुभ	श्रेष्ठ	पादवेध
२	अजितनाथ	अशुभ		कुबेर	२		,,	सम	वेध
३	संभवनाथ				१॥		वैर	शत्रु	
४	अभिनंदन			कुबेर	२		,,	,,	
५	सुमतिनाथ				१॥		स्व	श्रेष्ठतर	वेध
६	पद्मप्रभु		मैत्री		०॥		,,	शुभ	
७	सुपार्श्वनाथ		स्वा		१॥		,,	अशुभ	एकभं
८	चंद्रप्रभु					०	वैर	स्वराशि	
९	सुविधिनाथ				१॥		स्व	श्रेष्ठ	
१०	शीतलनाथ	अशुभ			१॥		अशुभ	,,	
११	श्रेयांसनाथ	अशुभ			१॥		वैर	शुभ	वेध
१२	वासुपूज्य				१		स्व	श्रेष्ठ	
१३	विमलनाथ		वैर		१		अशुभ	शुभ	
१४	अनन्तनाथ	अशुभ		कुबेर	२		वैर	,,	वेध
१५	धर्मनाथ					०	,,	मध्यम	
१६	शांतिनाथ				१॥		,,	प्रीति	
१७	कुंथुनाथ					१॥	स्वगण	सम	मवेध
१८	अरनाथ	अशुभ		कुबेर	२		वैर	शुभ	वेध
१९	मल्लिनाथ				०॥		,,	प्रीति	
२०	मुनिसुव्रत	अशुभ			०॥		,	शुभ	वेध
२१	नमिनाथ					०	,	प्रीति	
२२	नेमनाथ		मैत्री			०	स्वगण	शुभ	
२३	पार्श्वनाथ		स्वा		०॥		,,	अशुभ	एकभं
२४	वर्धमान		वैर		(१)		अशुभ	शुभ	
,	महावीरस्वामी		,,		०॥		,,	,,	
राशि वृश्चिक	पति मंगल	एकनाथ मेष	वर्ण ब्राह्मण	वश्य सिंह				नक्षत्र विशाखा	युंजि मध्य

साधक अक्षर—थ-१०।

नं०	साध्य	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण:	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीय	८	गौ	त	लभ्य		मनुष्य	मीन	मध्य
	विरुध्द	१,३,५	व्याघ्र	थ		देय	राक्षस	तुला	मध्यवेध
१	ऋषभनाथ	अशुभ		कुवेर	२		स्व	श्रेष्ठतर	
२	अजितनाथ			कुवेर	२		,,	शुभ	
३	संभवनाथ	अशुभ			१॥		मध्यम	श्रेष्ठ	
४	अभिनंदन			कुवेर	२		,,	,,	भवेध
५	सुमतिनाथ	अशुभ			१॥		अशुभ	प्रीति	
६	पद्मप्रभु	अशुभ	कुवेर		०॥		,	सम	
७	सुपार्श्वनाथ		कुवेर		१॥		,,	शत्रु	भवेध
८	चंद्रप्रभु					१	मध्यम	शुभ	
९	सुविधिनाथ	अशुभ			१॥		अशुभ	श्रेष्ठतर	वेध
१	शीतलनाथ				१॥		स्वगण	,	
११	श्रेयांसनाथ				१॥		मध्यम	शुभ	वेध
१२	वासुपूज्य				१		अशुभ	अशुभ	
१३	विमलनाथ		स्वा		१		स्वगण	स्वराशि	
१४	अनंतनाथ			कुवेर	२		मध्यम	,,	एकर्भ
१५	धर्मनाथ					•	,,	मध्यम	
१६	शांतिनाथ	अशुभ			१॥		,	श्रेष्ठ	वेध
१७	कुंथुनाथ	अशुभ				१॥	अशुभ	शुभ	
१८	अरनाथ			कुवेर	२		मध्यम	स्वराशि	
१९	मल्लिनाथ	अशुभ			०॥		,	श्रेष्ठ	
२०	मुनिसुव्रत				•॥		,,	शुभ	
२१	नमिनाथ	अशुभ					,	श्रेष्ठ	
२२	नेमनाथ	अशुभ	कुवेर			•	अशुभ	सम	
२३	पार्श्वनाथ		कुवेर		०॥		,,	शत्रु	भवेध
२४	वर्धमान	अशुभ	मैत्री		(१)		स्व	सम	
,,	महावीरस्वामी	,,	,,		•॥		,,	,,	
राशि मीन	पति गुरु	एकनाथ धन	वर्ण ब्राह्मण	वश्य ०				नक्षत्र उ० भा०	युजी पश्चिम

साधक अक्षर—द, दा।

नं०	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीय	७	सिंह	त	लभ्य		मनुष्य	कुंभ	आद्य
	विरुध्य	६,२,४	हस्ति	अ		देयं	राक्षस	कन्	आद्यवेध
१	ऋषभनाथ			कुनेर	२		स्व	शुभ	
२	अजितनाथ	अशुभ		कुवैर	२		,,	श्रेष्ठतर	
३	संभवनाथ				१॥		मध्यम	मध्यम	
४	अभिनंदन			कुवैर	२		,,	,,	वेध
५	सुमतिनाथ				१॥		अशुभ	सम	
६	पद्मप्रभु				०॥		,,	प्रीति	
७	सुपार्श्वनाथ				१॥		,,	शुभ	
८	चंद्रप्रभु					१	मध्यम	श्रेष्ठ	
९	सुविधिनाथ				१॥		अशुभ	शुभ	वध
१०	शीतलनाथ	अशुभ			१॥		स्वगण	,,	
११	श्रेयांसनाथ	अशुभ			१॥		मध्यम	श्रेष्ठ	
१२	वासुपूज्य				१		अशुभ	स्वराशि	वेध
१३	विमलनाथ				१		स्वगण	अशुभ	
१४	अनंतनाथ	अशुभ	वैर	कुवेर	२		मध्यम	,,	
१५	धर्मनाथ					०	,,	शत्रु	
१६	शांतिनाथ				१॥		,,	शुभ	वेध
१७	कुंथुनाथ					१॥	अशुभ	श्रेष्ठतर	
१८	अरनाथ	अशुभ	वैर	कुवेर	२		मध्यम	अशुभ	
१९	मल्लिनाथ				०॥		,,	शुभ	वेघ
२०	मुनिसुव्रत	अशुभ			०॥		,,	श्रेष्ठ	
२१	नमिनाथ					०	,,	शुभ	वेघ
२२	नेमिनाथ					०	अशुभ	प्राति	
२३	पार्श्वनाथ				०॥		,,	शुभ	
२४	वर्धमान				(१)		स्व	प्रीति	वेध
,,	महावीरस्वामी				०॥		,	,,	,,
राशि कुंभ	पति शनि	एकनाथ मकर	वर्ण शुद्र	वश्य विनासिंह मनुष्यंच				नक्षत्र पु० भा०	युंजि पश्चिम

साधक अक्षर–दि दी।

नं०	साध्य	तारा	योनि	वर्ग	विशापक		गण	राशि	नाडी
साधक नाम	स्वकीय	७	सिंह	त	क्षम्य		मनुष्य	मीन	आद्य
	विरुद्ध	६,२,४	हस्ति	श		देय	राक्षस	तुला	आद्यवेध
१	ऋषभनाथ			कुबेर	२		स्व	श्रेष्ठतर	
२	अजितनाथ	अशुभ		कुबेर	२		"	शुभ	
३	संभवनाथ				१॥		मध्यम	श्रेष्ठ	
४	अभिनंदन			कुबेर	२		"	,	भवध
५	सुमतिनाथ				१॥		अशुभ	प्रीति	
६	पद्मप्रभु				०॥		,	सम	
७	सुपार्श्वनाथ				१॥		,	शत्रु	
८	चंद्रप्रभु					१	मध्यम	शुभ	
९	सुविधिनाथ				१॥		अशुभ	श्रेष्ठतर	वेध
१	शीतलनाथ	अशुभ			१॥		स्वगण	"	
११	श्रयांसनाथ	,			१॥		मध्यम	शुभ	
१२	वासुपूज्य				१		अशुभ	अशुभ	वध
१३	विमलनाथ				१		स्वगण	स्वराशि	
१४	अनंतनाथ	अशुभ	वैर	कुबेर	२		मध्यम	"	
१५	धर्मनाथ					•	,	मध्यम	
१६	शातिनाथ				१॥			श्रेष्ठ	वध
१७	कुंथुनाथ					१॥	अशुभ	शुभ	
१८	अरनाथ	अशुभ	वैर	कुबेर	२		मध्यम	स्वराशि	
१९	मल्लिनाथ				०॥		"	श्रेष्ठ	वेध
२०	मुनिसुव्रत	अशुभ			०॥		"	शुभ	
२१	नमिनाथ						,	श्रेष्ठ	वेध
२२	नमनाथ					•	अशुभ	सम	
२३	पार्श्वनाथ				०॥		"	शत्रु	
२४	वर्धमान				(१)		स्व	सम	भवेध
	महावीरस्वामी				॥		"	"	"
शि	पति	एकनाथ	[illegible]					नक्षत्र	युंजी
न	गुरु	धन						पू० भा०	पश्चिम

साधक अक्षर—दु दू ।

न	साध्य	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीय	८	गौ	त	लभ्य		मनुष्य	मीन	मध्य
	विरुध्यं	१ ३,५	व्याघ्र	श्व		देयं	राक्षस	तुला	मध्य
१	ऋषभनाथ	अशुभ		कुबेर	२		स्व	श्रेष्ठतर	
२	अजितनाथ			कुबेर	२		,	शुभ	
३	संभवनाथ	अशुभ			१॥		मध्यम	श्रेष्ठ	वेध
४	अभिनंदन			कुबेर	२		,,	,,	
५	सुमतिनाथ	अशुभ			१॥		अशुभ	प्रीति	
६	पद्मप्रभु	अशुभ	कुबेर		०॥		,	सम	वेध
७	सुपार्श्वनाथ		कुबेर		१॥		,,	शत्रु	
८	चंद्रप्रभु					१	मध्यम	शुभ	वेध
९	सुविधिनाथ	अशुभ			१॥		अशुभ	श्रेष्ठतर	
१०	शीतलनाथ				१॥		स्वगण	,,	वेध
११	श्रेयांसनाथ				१॥		मध्यम	शुभ	
१२	वासुपूज्य				१		अशुभ	अशुभ	
१३	विमलनाथ		स्वा		१		स्वगण	स्वराशि	एकभ
१४	अनंतनाथ			कुबेर	२		मध्यम	,,	
१५	धर्मनाथ					०	,,	मध्यम	वेध
१६	शांतिनाथ	अशुभ			१॥		,	श्रेष्ठ	
१७	कुंथुनाथ	अशुभ				१॥	अशुभ	शुभ	
१८	अरनाथ			कुबेर	२		मध्यम	स्वराशि	
१९	मल्लिनाथ	अशुभ			०॥		,	श्रेष्ठ	
२०	मुनिसुव्रत				०॥		,,	शुभ	
२१	नमिनाथ	अशुभ				०	,,	श्रेष्ठ	
२२	नेमनाथ	अशुभ	कुबेर			०	अशुभ	सम	वेध
२३	पार्श्वनाथ		कुबेर		०॥		,,	शत्रु	
२४	वर्धमान	अशुभ	मैत्री		(१)		स्व	सम	
,,	महावीरस्वामी	,,	,,		०॥		,	,	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्य				नक्षत्र	युंजि
मीन	गुरु	धन	ब्राह्मण	०				उ०भा०	पश्चिम

साधकअक्षर—दे दै दो दौ (⊛दे दे १ पाद ७-१७-२३भवेध)

न०	साध्यं	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीयं	६	हस्ति	त	लभ्यं		देव	मीन	अत्य
	निरुध्यं	२,४,६	सिंह	श		देय	राक्षस	तुला	अत्यवेध
१	ऋषभनाथ			कुवेर	२		मध्यम	श्रेष्ठतर	भवेध*
२	अजितनाथ	अशुभ		कुवेर	२		,,	शुभ	वध
३	संभवनाथ				१॥		स्व	श्रेष्ठ	
४	अभिनंदन			कुवेर	२		,,	,,	
५	सुमतिनाथ				१॥		वैर	प्रीति	वेध
६	पद्मप्रभु				०॥		,,	सम	
७	सुपार्श्वनाथ				१॥		,,	शत्रु	वेध*
८	चंद्रप्रभु					१	स्व	शुभ	
९	सुविधिनाथ				१॥		वैर	श्रेष्ठतर	
१०	शीतलनाथ	अशुभ			१॥		मध्यम	,,	
११	श्रेयांसनाथ	अशुभ			१॥		स्व	शुभ	वेध
१२	वासुपूज्य	अशुभ			१		वैर	अशुभ	
१३	विमलनाथ				१		मध्यम	स्वराशि	
१४	अनंतनाथ		स्वा	कुवेर	२		स्व	,,	एकभ
१५	धर्मनाथ					०	,,	मध्यम	
१६	शांतिनाथ				१॥		,,	श्रेष्ठ	
१७	कुंथुनाथ					१॥	वैर	शुभ	वेध*
१८	अरनाथ		स्वा	कुवेर	२		स्व	स्वराशि	एकभं
१९	मल्लिनाथ				०॥		,,	अश्ठ	
२०	मुनिसुव्रत	अशुभ			०॥		,,	शुभ	वेध
२१	नमिनाथ					०	,,	श्रेष्ठ	
२२	नेमनाथ					०	वैर	सम	
२३	पार्श्वनाथ				०॥		,,	शत्रु	वेध*
२४	वर्धमान				(१)		मध्यम	सम	
,,	महावीरस्वामि				०॥		,,	,,	
	पति	एकनाथ धन	वश्य मासस्य	वश्य •				नक्षत्र रेवती	युञ्जी पूर्व

साधक अक्षर—ध १०।

नं	साध्य	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीय	२	वानर	त	लभ्य		मनुष्य	धनु	मध्य
	विरुध्द	४,६,८	मेष	अ		देय	राक्षस	वृषभ	मध्यवेध
१	ऋषभनाथ			कुबेर	२		स्व	स्वराशि	
२	अजितनाथ	अशुभ		कुबेर	२		,,	शत्रु	
३	संभवनाथ				१॥		मध्यम	सम	वेध
४	अभिनंदन			कुबेर	२		,,	,,	
५	सुमतिनाथ				१॥		अशुभ	शुभ	
६	पद्मप्रभु				०॥		,,	श्रेष्ठ	वेध
७	सुपार्श्वनाथ				१॥		,	शुभ	
८	चंद्रप्रभु	अशुभ				१	मध्यम	श्रेष्ठ	वेध
९	सुविधिनाथ				१॥		अशुभ	स्वराशि	
१०	शीतलनाथ		स्वा		१॥		स्वगण	,	एकम
११	श्रेयांसनाथ	अशुभ	मैत्री		१॥		मध्यम	अशुभ	
१२	वासुपूज्य	अशुभ			१		अशुभ	शुभ	
१३	विमलनाथ	अशुभ			१		स्वगण	श्रेष्ठतर	वेध
१४	अनंतनाथ			कुबेर	२		मध्यम	,,	
१५	धर्मनाथ	अशुभ	वैर			०	,,	प्रीति	वेध
१६	शांतिनाथ				१॥		,,	शुभ	
१७	कुंथुनाथ		वैर			१॥	अशुभ	शत्रु	
१८	अरनाथ			कुबेर	२		मध्यम	श्रेष्ठतर	
१९	मल्लिनाथ				०॥		,,	शुभ	
२०	मुनिसुव्रत	अशुभ	मैत्री		०॥		,,	अशुभ	
२१	नमिनाथ					०	,,	शुभ	
२२	नेमनाथ					०	अशुभ	श्रेष्ठ २२	वेध
२३	पार्श्वनाथ				०॥		,,	शुभ २३	
२४	वर्धमान				(१)		स्व	श्रेष्ठ	
,,	महावीरस्वामी				॥			,,	

राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्य	नक्षत्र	युंजा
धन	गुरु	मीन	क्षत्रिय	सर्वे	पु० षा०	पश्चिम

साधक अक्षर-न ना नि नी नु नू ने नै (⊛ न नि ३-६-२२ भवेध)

न	साध्य	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीय	८	हरिण	त	लभ्यं		दव	वृश्चिक	मध्य
	विरुध्द	१,२,५	श्वान	अ		देयं	राक्षस	मिथुन	मध्यवध
१	ऋषभनाथ	अशुभ		कुनेर	२		मध्यम	श्रेष्ठ	
२	अजितनाथ			कुवेर	२		,	सम	
३	संभवनाथ	अशुभ			१॥		स्व	शत्रु	वेध*
४	अभिनंदन			कुवेर	२		,,	,	
५	सुमतिनाथ	अशुभ			१॥		वैर	श्रेष्ठतर	
६	पद्मप्रभु	अशुभ			•॥		,,	शुभ	वेध*
७	सुपार्श्वनाथ				१॥		,,	अशुभ	
८	चंद्रप्रभु		स्वा			१	स्व	स्वराशि	एकर्भ
९	सुविधिनाथ	अशुभ	कुनेर		१॥		वैर	श्रेष्ठ	
१०	शीतलनाथ				१॥		मध्यम	,,	वेध
११	श्रेयांसनाथ				१॥		स्व	शुभ	
१२	वासुपूज्य				१		वैर	श्रेष्ठ	
१३	विमलनाथ				१		मध्यम	शुभ	वध
१४	अनंतनाथ			कुवर	२		स्व	,,	
१५	धर्मनाथ					०		मध्यम	वध
१६	शांतिनाथ	अशुभ			१॥		,,	प्रीति	
१७	कुंथुनाथ	अशुभ				१॥	वैर	सम	
१८	अरनाथ			कुवेर	२		स्व	शुभ	
१९	मल्लिनाथ	अशुभ			॥			प्रीति	
२०	मुनिसुव्रत				•॥		,	शुभ	
२१	नमिनाथ	अशुभ				•	,,	प्रीति	
२२	नेमनाथ	अशुभ				•	वैर	शुभ	वेध*
२३	पार्श्वनाथ				•॥		,,	अशुभ	
२४	वर्धमान	अशुभ			(१)		मध्यम	शुभ	
,,	महावीरस्वामी	,,			•॥		,,	,,	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण		वश्य			नक्षत्र	युंजि
वृश्चिक	मंगल	मेष	ब्राह्मण		सिंह			अनुराधा	मध्य

साधक अक्षर—नो नौ।

नं०	साध्य	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीय	६,	हरिण	त	रम्य।		राक्षस	वृश्चिक	आद्य
	विरुध्य	२,४,६	श्वान	थ		देय	दे० म०	मिथुन	आद्यवेध
१	ऋषभनाथ			कुवेर	२		अशुभ	श्रेष्ठ	
२	अजितनाथ	अशुभ		कुवेर	२		,,	सम	
३	संभवनाथ				१॥		वैर	शत्रु	
४	अभिनंदन			कुवेर	२		,,	,,	अवेध
५	सुमतिनाथ				१॥		स्व	श्रेष्ठतर	
६	पद्मप्रभु				०॥		,,	शुभ	
७	सुपार्श्वनाथ				१॥		,,	अशुभ	
८	चद्रप्रभु		मैत्री			,	वैर	स्वराशि	
९	सुविधिनाथ		कुवेर		१॥		स्व	श्रेष्ठ	वेध
१०	शीतलनाथ	अशुभ			१॥		अशुभ	,,	
११	श्रेयांसनाथ	अशुभ			१॥		वैर	शुभ	
१२	वासुपूज्य	अशुभ			१		स्व	श्रेष्ठ	वेध
१३	विमलनाथ				१		अशुभ	शुभ	
१४	अनतनाथ			कुवेर	२		वैर	,,	
१५	धर्मनाथ					०	,,	मध्यम	
१६	शांतिनाथ				१॥		,,	प्रीति	वेध
१७	कुंथुनाथ					१॥	स्वगण	सम	
१८	अरनाथ			कुवेर	२		वैर	शुभ	
१९	मल्लिनाथ				०॥		,,	प्रीति	वेध
२०	मुनिसुव्रत	अशुभ			०॥		,,	शुभ	
२१	नमिनाथ					०		प्रीति	वेध
२२	नेमनाथ					●	स्वगण	शुभ	
२३	पार्श्वनाथ				०॥		,,	अशुभ	
२४	वर्धमान				(१)		अशुभ	शुभ	अवेध
,	महावीरस्वामी				०॥		,,	,,	,,
राशि वृश्चिक	पति मगल	एकनाथ मेष	वर्ण ब्राह्मण	वश्य सिंह				नक्षत्र ज्येष्ठा	युंजि पश्चिम

साधक अक्षर—प पा पि पी।

न	साध्यं	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशी	नाडी
साध्य नाम	स्वकीयं	२	गौ	प	क्षम्य		मनुष्य	कन्या	आद्य
	विरुध्य	५,७,६	व्याघ्र	क		देयं	राक्षस	मेष	आद्यवेध
१	ऋषभदेव					२॥	स्व	श्रेष्ठ	
२	अजितनाथ					२॥	,,	शुभ	
३	संभवनाथ	अशुभ			१		मध्यम	श्रेष्ठतर	
४	अभिनंदन	अशुभ				२॥	,,	,	वेध
५	सुमतिनाथ				१		अशुभ	शुभ	
६	पद्मप्रभु	अशुभ	कुवैर			०	,,	स्वराशि	
७	सुपार्श्वनाथ	अशुभ	कुवैर		१		,,	श्रेष्ठ	
८	चंद्रप्रभु					१॥	मध्यम	शुभ	
९	सुविधिनाथ				१		अशुभ	श्रेष्ठ	वेध
१०	शीतलनाथ				१		स्वगण	,	
११	श्रेयांसनाथ				१		मध्यम	मध्यम	
१२	वासुपूज्य				॥		अशुभ	प्रीति	वेध
१३	विमलनाथ		मैत्री		०॥		स्वगण	सम	
१४	अनंतनाथ	अशुभ				२॥	मध्यम	,	
१५	धर्मनाथ					२॥	,,	शुभ	
१६	शांतिनाथ				१		,,	शत्रु	वेध
१७	कुंथुनाथ			कुवैर		२	अशुभ	शुभ	
१८	अरनाथ	अशुभ				२॥	मध्यम	सम	
१९	मल्लिनाथ						,,	शत्रु	वध
२०	मुनिसुव्रत				(१)	०	,,	मध्यम	
२१	नमिनाथ					०॥	,	शत्रु	वेध
२२	नेमनाथ	अशुभ	कुवैर			०॥	अशुभ	स्वराशि	
२३	पार्श्वनाथ	अशुभ	कुवैर			०	,,	श्रेष्ठ	
२४	वर्धमान		स्वा		(०॥)		स्व	स्वराशि	एकभं
,,	महावीरस्वामी		,,			०	,,	,,	,
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्य				नक्षत्र	युजी
कन्या	बुध	मिथुन	वैश्य	विनासिंह वर्न				उ० फा०	मध्य

साधक अक्षर—पु, पू।

न०	साध्य	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीयं	४	महिष	प	लभ्य		देव	कन्या	आद्य
	विरुध्य	६,८,१	अश्व	क		देय	राक्षस	मेष	आद्यवेध
१	ऋषभनाथ					३॥	मध्यम	श्रेष्ठ	
२	अजितनाथ					२॥	,,	शुभ	
३	संभवनाथ				१		स्व	श्रेष्ठतर	
४	अभिनंदन					२॥	,,	,,	वेध
५	सुमतिनाथ	अशुभ			१		वैर	शत्रु	
६	पद्मप्रभु					०	,,	स्वराशि	
७	सुपार्श्वनाथ				१		,,	श्रेष्ठ	
८	चंद्रप्रभु	अशुभ				१॥	स्व	शुभ	
९	सुविधिनाथ	अशुभ			१		वैर	श्रेष्ठ	वेध
१०	शीतलनाथ				१		मध्यम	,,	
११	श्रेयांसनाथ				१		स्व	मध्यम	
१२	वासुपूज्य	अशुभ	वैर		०॥		वैर	प्रीति	वेध
१३	विमलनाथ	अशुभ			०॥		मध्यम	सम	
१४	अनंतनाथ					२॥	स्व	,,	
१५	धर्मनाथ	अशुभ				०॥	,,	शुभ	
१६	शांतिनाथ	अशुभ	वैर		१		,,	शत्रु	वेध
१७	कुंथुनाथ			कुबेर		२	वैर	शुभ	
१८	अरनाथ					२॥	स्व	सम	
१९	मल्लिनाथ	अशुभ	वैर			०	,,	शत्रु	वेध
२०	मुनिसुव्रत				(१)	०	,,	मध्यम	
२१	नमिनाथ	अशुभ	वैर			०॥	,,	शत्रु	वेध
२२	नेमिनाथ					०॥	वैर	स्वराशि	
२३	पार्श्वनाथ					०	,,	श्रेष्ठ	
२४	वर्धमान				(०॥)		मध्यम	स्वराशि	वेध
,,	महावीरस्वामी					०	,,	,,	,,
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्यं				नक्षत्र	
कन्या	बुध	मिथुन	वैश्य	विनाम्नि धन				हस्त	

साधक अक्षर—पे, पै, पो, पौ।

नं	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
साधक नाम	स्वकीय	५	श्वान	प	अर्म्य		राक्षस	कन्या	मध्य
	विरुध्द	७६२,	गौ	क		दयं	द० म०	मेष	मानाथ
१	ऋषभनाथ					२॥	अशुभ	श्रेष्ठ	
२	अजितनाथ					२॥	,,	शुभ	
३	संभवनाथ				१		वैर	इष्टतर	वेध
४	अभिनंदन	अशुभ				२॥	,,	,	
५	सुमतिनाथ				१		स्व	शुभ	
६	पद्मप्रभु		स्वा			•	,	स्वराशि	एकर्भ
७	सुपार्श्वनाथ	अशुभ	मैत्री		१		,	श्रेष्ठ	
८	चंद्रप्रभु					१॥	वैर	शुभ	वेध
९	सुविधिनाथ				१		स्व	श्रेष्ठ	
१०	शीतलनाथ	अशुभ			१		अशुभ	,	वेध
११	श्रेयांसनाथ				१		वैर	मध्यम	
१२	वासुपूज्य				०॥		स्व	प्रीति	
१३	विमलनाथ		वैर		०॥		अशुभ	सम	वेध
१४	अनंतनाथ	अशुभ				२॥	वैर	,,	
१५	धर्मनाथ					॥	,,	शुभ	वेध
१६	शांतिनाथ				१		,,	शत्रु	
१७	कुंथुनाथ			कुवेर		२	स्वगण	शुभ	
१८	अरनाथ	अशुभ				२॥	वैर	सम	
१९	मल्लिनाथ					•	,,	शत्रु	
२०	मुनिसुव्रत				(१)	०	,	मध्यम	
२१	नमिनाथ					०॥	,,	शत्रु	
२२	नेमिनाथ		स्वा			०॥	स्वगण	स्वराशि	एकर्भ
२३	पार्श्वनाथ	अशुभ	मैत्री			•	,	श्रेष्ठ	
२४	वर्धमान		वैर		(०॥)		अशुभ	स्वराशि	
,,	महावीरस्वामी		,,			•	,,	,,	
राशि कन्या	पति बुध	एकनाथ मिथुन	वर्ण वैश्य	वश्य विनासिंह सर्वे वश्यं				नक्षत्र चित्रा	युंजा मध्य

साधक अक्षर—फ १०।

नं०	साध्य	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीय	२	वानर	प	लभ्यं		मनुष्य	धनु	मध्य
	विरुध्य	४,६,८	मेष	क		देयं	राक्षस	वृषभ	मध्यवेध
१	ऋषभनाथ					२।'	स्व	स्वराशि	
२	अजितनाथ	अशुभ				२॥	,,	शत्रु	
३	संभवनाथ				१		मध्यम	सम	भवेध
४	अभिनंदन					२॥	,,	,,	
५	सुमतिनाथ				१		अशुभ	शुभ	
६	पद्मप्रभु					०	,,	श्रेष्ठ	भवेध
७	सुपार्श्वनाथ				१		,,	शुभ	
८	चंद्रप्रभु	अशुभ				१॥	मध्यम	श्रेष्ठ	वेध
९	सुविधिनाथ				१		अशुभ	स्वराशि	
१०	शीतलनाथ		स्वा		१		स्वगण	,,	एकभ
११	श्रेयांसनाथ	अशुभ	मैत्री		१		मध्यम	अशुभ	
१२	वासुपूज्य	अशुभ			०॥		अशुभ	शुभ	
१३	विमलनाथ	अशुभ			०॥		स्वगण	श्रेष्ठतर	वेध
१४	अनंतनाथ					२॥	मध्यम	,,	
१५	धर्मनाथ	अशुभ	वैर			०॥	,	प्रीति	वेध
१६	शांतिनाथ				१		,,	शुभ	
१७	कुंथुनाथ		वैर	कुबेर		२	अशुभ	शत्रु	
१८	अरनाथ					२॥	मध्यम	श्रेष्ठतर	
१९	मल्लिनाथ					०	,,	शुभ	
२०	मुनिसुव्रत	अशुभ	मैत्री		(१)	०	,,	अशुभ	
२१	नमिनाथ					०॥	,,	शुभ	
२२	नेमिनाथ					०॥	अशुभ	श्रेष्ठ	भवेध
२३	पार्श्वनाथ					०	,,	शुभ	
२४	वर्धमान				(०॥)		स्व	श्रेष्ठ	
,,	महावीरस्वामी					०	,,	/ ,,	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्य				नक्षत्र	युंजि
धन	गुरु	मीन	क्षत्रिय	सर्व राशय				पु० षा०	पश्चि

साधक प्रचार—व, वा, वि, वी, वु, वू (वु वू १ पाद ७ १७-२३ भवेध *)

नं०	साध्य	तारा	योनि	वग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीय	४	सर्प	प	लभ्य		मनुष्य	वृषभ	आद्य
	विरुध्य	६,८,१	नकुल	म		देयं	राक्षस	धन	आद्य
१	ऋषभनाथ		कुवेर			२॥	स्व	शत्रु	भवेध*
२	अजितनाथ		स्वा			२॥	,,	स्वराशि	एकर्भ
३	संभवनाथ		मैत्री		१		मध्यम	श्रेष्ठ	
४	अभिनंदन					२॥	,,	,,	
५	सुमतिनाथ	अशुभ			१		अशुभ	,,	वध*
६	पद्मप्रभु					०	,,	शुभ	
७	सुपार्श्वनाथ				१		,,	प्रीति	वेध
८	चंद्रप्रभु	अशुभ				१॥	मध्यम	सम	
९	सुविधिनाथ	अशुभ			१		अशुभ	शत्रु	
१०	शीतलनाथ				१		स्वगण	,,	
११	श्रेयांसनाथ				१		मध्यम	शुभ	वेध
१२	वासुपूज्य	अशुभ			०॥		अशुभ	श्रेष्ठतर	
१३	विमलनाथ	अशुभ			०॥		स्वगण	शुभ	
१४	अनंतनाथ					२॥	मध्यम	,,	वेध
१५	धर्मनाथ	अशुभ				०॥	,,	,,	
१६	शांतिनाथ	अशुभ			१		,,	अशुभ	
१७	कुंथुनाथ			कुवेर		२	अशुभ	स्वराशि	वेध*
१८	अरनाथ					२॥	मध्यम	शुभ	वेध
१९	मल्लिनाथ	अशुभ				०	,,	अशुभ	
२०	मुनिसुव्रत				(१)	०	,	शुभ	वेध
२१	नमिनाथ	अशुभ				०॥	,,	अशुभ	
२२	नेमिनाथ					०॥	अशुभ	शुभ	
२३	पार्श्वनाथ					०	,,	प्रीति	वध*
२४	वर्धमान				(१॥)		स्व	शुभ	
,,	महावीरस्वामी					॥	,	,,	
राशि नाम	पति शुक्र	एकनाथ तुला	वर्ण वैश्य	वश्य मेष				नक्षत्र रोहिणी	युंजी पश्चिम

साधक अक्षर—वे, वै, वो, वौ।

नं०	साध्यं	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाड़ी
	स्वकीय	४,	सर्प	प	लभ्य		देव	वृषभ	आद्य
	विरुध्य	६,८,१	नकुल	क		देय	राक्षस	धन	आद्य
१	ऋषभनाथ		कुवेर			७॥	मध्यम	शत्रु	
२	अजितनाथ		मैत्री			२॥	,,	स्वराशि	
३	संभवनाथ		स्वा		१		स्व	श्रेष्ठ	एकर्भ
४	अभिनंदन	अशुभ				२॥	,,	,,	
५	सुमतिनाथ				१		वैर	,	
६	पद्मप्रभु					०	,,	शुभ	भवेध
७	सुपार्श्वनाथ	अशुभ			१		,,	प्रीति	
८	चंद्रप्रभु					१॥	स्व	सम	वेध
९	सुविधिनाथ				१		वैर	शत्रु	
१०	शीतलनाथ	अशुभ			१		मध्यम	,,	वेध
११	श्रेयांसनाथ				१		स्व	शुभ	
१२	वासुपूज्य				०॥		वैर	श्रेष्ठतर	
१३	विमलनाथ				०॥		मध्यम	शुभ	वेध
१४	अनंतनाथ	अशुभ				२॥	स्व	,,	
१५	धर्मनाथ					०॥	,,	,	वेध
१६	शांतिनाथ				१		,	अशुभ	
१७	कुंथुनाथ			कुवेर		२	वैर	स्वराशि	
१८	अरनाथ	अशुभ				२॥	स्व	शुभ	
१९	मल्लिनाथ					०	,,	अशुभ	
२०	मुनिसुव्रत				(१)	०	,	शुभ	
२१	नमिनाथ					०॥	,,	अशुभ	
२२	नेमिनाथ					०॥	वैर	शुभ	भवेध
२३	पार्श्वनाथ	अशुभ				०	,,	प्रीति	
२४	वर्धमान				०॥		मध्यम	शुभ	
,	महावीरस्वामी					०	,,	,,	

राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्य	नक्षत्र	युजि
वृषभ	शुक्र	तुला	वैश्य	मेष	मृगशिर्ष	

साधक अक्षर—भ, भा, भि, भी (भि, भी ४-२४-भवेध ⊙)

नं०	साध्य	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीय	१	श्वान	प	साम्य		राक्षस	धनु	आन्त्य
	विरुद्ध	३,५ ७	हरिण	य		देयं	दे० म०	वृषभ	आद्यनाथ
१	ऋषभनाथ	अशुभ				२॥	अशुभ	स्वराशि	
२	अजितनाथ					२॥	,,	शत्रु	
३	संभवनाथ	अशुभ			१		वैर	सम	
४	अभिनंदन	अशुभ				२॥	,	,,	वेध*
५	सुमतिनाथ				१		स्व	शुभ	
६	पद्मप्रभु	अशुभ				०	,	श्रेष्ठ	
७	सुपार्श्वनाथ	अशुभ			१		,,	शुभ	
८	चंद्रप्रभु		वैर			२॥	वैर	श्रेष्ठ	
९	सुविधिनाथ		स्वा		१		स्व	स्वराशि	एकम
१०	शीतलनाथ				१		अशुभ	,,	
११	श्रेयांसनाथ				१		वैर	अशुभ	
१२	वासुपूज्य				०॥		स्व	शुभ	वध
१३	विमलनाथ				०॥		अशुभ	श्रेष्ठतर	
१४	अनंतनाथ					२॥	वैर	,,	
१५	धर्मनाथ					०॥	,,	प्रीति	
१६	शांतिनाथ				१		,	शुभ	वेध
१७	कुंथुनाथ	अशुभ		कुबेर		२	स्वगण	शत्रु	
१८	अरनाथ					२॥	वैर	श्रेष्ठतर	
१९	मल्लिनाथ					०	,,	शुभ	वध
२०	मुनिसुव्रत				(१)	०	,,	अशुभ	
२१	नमिनाथ					०॥	,,	शुभ	वध
२२	नेमिनाथ	अशुभ				०॥	स्वगण	श्रेष्ठ	
२३	पार्श्वनाथ	अशुभ				०	,,	शुभ	
२४	वर्धमान	अशुभ			(०॥)		अशुभ	श्रेष्ठ	वेध*
,	महावीरस्वामी	,,				०	,	,	,,

राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्य	नक्षत्र	युंजि
धन	गुरु	मीन	क्षत्रिय	सर्वे राशय	मूल	पश्चिम

साधक अक्षर—भु, भू।

नं०	साध्य	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीय	२	वानर	प	लभ्य		मनुष्य	धनु	मध्य
	निरुध्य	४,६,८	मेष	क		देय	राक्षस	वृषभ	मध्यवेध
१	ऋषभनाथ					२॥	स्व	स्वराशि	
२	अजितनाथ	अशुभ				२॥	,,	शत्रु	
३	संभवनाथ				१		मध्यम	सम	वेध
४	अभिनंदन					२॥	,,	,,	
५	सुमतिनाथ				१		अशुभ	शुभ	
६	पद्मप्रभु					०	,,	श्रेष्ठ	वेध
७	सुपार्श्वनाथ				१		,,	शुभ	
८	चंद्रप्रभु	अशुभ				१॥	मध्यम	श्रेष्ठ	वेध
९	सुविधिनाथ				१		अशुभ	स्वराशि	
१०	शीतलनाथ		स्वा		१		स्वगण	,,	एकर्भ
११	श्रेयांसनाथ	अशुभ	मैत्री		१		मध्यम	अशुभ	
१२	वासुपूज्य	अशुभ			२॥		अशुभ	शुभ	
१३	विमलनाथ	अशुभ			०॥		स्वगण	श्रेष्ठतर	वेध
१४	अनंतनाथ					२॥	मध्यम	,,	
१५	धर्मनाथ	अशुभ	वैर			०॥	,,	प्रीति	वेध
१६	शांतिनाथ				१		,,	शुभ	
१७	कुंथुनाथ		वैर	कुवैर		२	अशुभ	शत्रु	
१८	अरनाथ					२॥	मध्यम	श्रेष्ठतर	
१९	मल्लिनाथ					०	,,	शुभ	
२०	मुनिसुव्रत	अशुभ	मैत्री		(१)	०	,,	अशुभ	
२१	नमिनाथ					०॥	,,	शुभ	
२२	नमिनाथ					२॥	अशुभ	श्रेष्ठ	वेध
२३	पार्श्वनाथ					०	,,	शुभ	
२४	वर्धमान				०॥		स्व	श्रेष्ठ	
,,	महावीरस्वामी					०	,,	,,	
राशि धन	पति गुरु	एकनाथ मीन	वर्ण क्षत्रिय	वश्य सर्वे राशय				नक्षत्र पू० षा०	युजी पश्चिम

साधक अक्षर—भे, भै।

साध्य नाम	साध्य	तारा	योनि	वर्ग	निगापद		गण	राशि	नाडी
	स्वकीय	३	नकुल	प	लभ्य		मनुष्य	धनु	मध्य
	विरुद्ध	५,७,९	सर्प	क		देय	राक्षस	वृषभ	आद्यन्त
१	ऋषभनाथ		स्वा						
२	अजितनाथ		वैर			२॥	स्व	स्वराशि	एकपाद
३	संभवनाथ	अशुभ	वैर			२॥	,,	शत्रु	वेध
४	अभिनंदन	अशुभ			१		मध्यम	सम	
५	सुमतिनाथ					२॥	,,	,,	
६	पद्मप्रभु	अशुभ			१		अशुभ	शुभ	वध
७	सुपार्श्वनाथ	अशुभ				•	,,	श्रेष्ठ	
८	चंद्रप्रभु				१		,,	शुभ	अवध
९	सुविधिनाथ					१॥	मध्यम	श्रेष्ठ	
१०	शीतलनाथ				१		अशुभ	स्वराशि	
११	श्रेयांसनाथ				१		स्वगण	,,	
१२	वासुपूज्य				१		मध्यम	अशुभ	वेध
१३	विमलनाथ				०॥		अशुभ	शुभ	
१४	अनंतनाथ	अशुभ			•॥		स्वगण	श्रेष्ठतर	
१५	धर्मनाथ					२॥	मध्यम	,,	वध
१६	शांतिनाथ					•॥	,,	मैत्रि	
१७	कुंथुनाथ				१		,,	शुभ	
१८	अरनाथ	अशुभ		कुबेर		२	अशुभ	शत्रु	अवध
१९	मल्लिनाथ					२॥	मध्यम	श्रेष्ठतर	वेध
२०	मुनिसुव्रत					•	,,	शुभ	
२१	नमिनाथ				(१)	•	,,	अशुभ	वेध
२२	नेमिनाथ	अशुभ				•॥	,	शुभ	
२३	पार्श्वनाथ	अशुभ				•॥	अशुभ	श्रेष्ठ	
२४	वर्धमान					•	,	शुभ	अवेध
,,	महावीरस्वामी				(२॥)		स्व	श्रेष्ठ	
						०	,,	,,	

राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्य	नक्षत्र	युञ्जी
--	गुरु	मीन	क्षत्रिय	च० राशय	उ० षा०	पश्चिम

साधक अक्षर—भो भौ।

नं	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
[illegible]	स्वकीय	३	नकुल	प	लभ्यं		मनुष्य	मकर	अन्त्य
	विरुध	५,७,६	सर्प	क		देयं	राक्षस	सिंह	अन्त्यवेध
१	ऋषभनाथ		स्वा			२॥	स्व	अशुभ	एकभं
२	अजितनाथ		वैर			२॥	,	शुभ	वेध
३	संभवनाथ	अशुभ	वैर		१		मध्यम	प्रीति	
४	अभिनंदन	अशुभ				२॥	”	”	
५	सुमतिनाथ				१		अशुभ	शत्रु	वेध
६	पद्मप्रभु	अशुभ				०	”	मध्यम	
७	सुपार्श्वनाथ	अशुभ			१		”	श्रेष्टतर	भवेध
८	चंद्रप्रभु					१॥	मध्यम	शुभ	
९	सुविधिनाथ				१		अशुभ	अशुभ	
१०	शीतलनाथ				१		स्वगण	”	
११	श्रेयांसनाथ				१		मध्यम	स्वराशि	वेध
१२	वासुपूज्य				०॥		अशुभ	श्रेष्ठ	
१३	विमलनाथ				०॥		स्वगण	शुभ	
१४	अनंतनाथ	अशुभ				२॥	मध्यम	”	वेध
१५	धर्मनाथ					०॥	”	सम	
१६	शांतिनाथ				१		”	श्रेष्ठ	
१७	कुंथुनाथ			कुबेर		२	अशुभ	शुभ	वेध
१८	अरनाथ	अशुभ				२॥	मध्यम	”	वध
१९	मल्लिनाथ					०	”	श्रेष्ठ	
२०	मुनिसुव्रत				(१)	०	”	स्वराशि	वेध
२१	नमिनाथ					०॥	”	श्रेष्ठ	
२२	नेमनाथ	अशुभ				०॥	अशुभ	मध्यम	
२३	पार्श्वनाथ	अशुभ				०	”	श्रेष्ठतर	वेध
२४	वर्धमान				(०॥)		स्व	मध्यम	
”	महावीरस्वामी					०	”	”	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्य			नक्षत्र	युंजि	
मकर	शनि	कूम	वैश्य				उ० षा०		

साधक अक्षर—म मा मि मी मु मू मे मै (मि मै ? पाद ३ १०-२१-मघा

नं०	साध्यांश	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गणा:	राशि	[illegible]
साध्य नाम	स्वकीय	१,	उदर	प	साम्य				
	विरुध्द	३,५,७	विडाल	क			राक्षस	मित्र	[illegible]
१	ऋषभनाथ	अशुभ				दय	ऋ० स०	मकर	दंस्ता
२	अजितनाथ								
३	संभवनाथ	अशुभ				२॥	अशुभ	शुभ	मरा०
४	अभिनंदन	अशुभ	कुबेर		,	२॥	,	श्रेष्ठ	वर
५	सुमतिनाथ		स्वा				वैर	शुभ	
६	पद्मप्रभु	अशुभ				२॥	,	„	
७	सुपार्श्वनाथ	अशुभ			१		स्व	स्वराशि	दश'
८	चंद्रप्रभु					•	„	शुभ	
९	सुविधिनाथ				१		„	„	वैर०
१०	शीतलनाथ					०॥	वैर	श्रेष्ठतर	
११	श्रेयांसनाथ				१		स्व	शुभ	
१२	वासुपूज्य				१		अशुभ	„	
१३	विमलनाथ				१		वैर	शत्रु	वैर
१४	अनंतनाथ				०॥		स्व	सम	
१५	धर्मनाथ				•॥		अशुभ	प्रीति	
१६	शांतिनाथ					२॥	वैर	„	बध
१७	कुंथुनाथ	अशुभ				•॥	„	श्रेष्ठ	
१८	अरनाथ			कुबेर	१		„	शुभ	
१९	मल्लिनाथ					२	स्वगण्य	श्रेष्ठ	बध०
२०	मुनिसुव्रत					२॥	वैर	प्रीति	बध
२१	नमिनाथ				(१)	०	„	शुभ	
२२	नेमिनाथ	अशुभ				०	„	शत्रु	बध
२३	पार्श्वनाथ	अशुभ				•॥		शुभ	
२४	वर्धमान	अशुभ				•॥	स्वगण्य	„	
,	महावीरस्वामी	„			(•॥)	०	„	„	वैर०
राशि सिंह	पति सूर्य	एकनाथ ०	बध			•	अशुभ „	„ „	
				वर्ग्य विनाशन वृश्चिक				नक्षत्र मघा	युंजि मध्य

साधक अक्षर—मो मौ।

नं	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्यं नाम	स्वकीय	२	उदर	प	लभ्यं		मनुष्य	सिंह	मध्य
	विरुध्यं	४,६,८	बिडाल	क		देयं	राक्षस	मकर	मध्यवेध
१	ऋषभनाथ					२॥	स्व	शुभ	
२	अजितनाथ	अशुभ				२॥	,,	श्रेष्ठ	
३	संभवनाथ				१		मध्यम	शुभ	भवेध
४	अभिनदन		कुवैर			२॥	,,	,,	
५	सुमतिनाथ		मैत्री		१		अशुभ	स्वराशि	
६	पद्मप्रभु					०	,,	शुभ	भवेध
७	सुपार्श्वनाथ				१		,	,,	
८	चंद्रप्रभु	अशुभ				१॥	मध्यम	श्रेष्ठतर	वेध
९	सुविधिनाथ				१		अशुभ	शुभ	
१०	शीतलनाथ				१		स्वगण	,,	वेध
११	श्रेयांसनाथ	अशुभ			१		मध्यम	शत्रु	
१२	वासुपूज्य	अशुभ			०॥		अशुभ	सम	
१३	विमलनाथ	अशुभ			०॥		स्वगण	प्रीति	वध
१४	अनंतनाथ					२॥	मध्यम	,,	
१५	धर्मनाथ	अशुभ				०॥	,,	श्रेष्ठ	वध
१६	शांतिनाथ				१		,,	शुभ	
१७	कुंथुनाथ			कुवेर		२	अशुभ	श्रेष्ठ	
१८	अरनाथ					२॥	मध्यम	प्रीति	
१९	मल्लिनाथ					०	,,	शुभ	
२०	मुनिसुव्रत	अशुभ			(१)	०	,,	शत्रु	
२१	नमिनाथ					०॥	,,	शुभ	
२२	नेमनाथ					०॥	अशुभ	,	भवेध
२३	पार्श्वनाथ					०	,,	,,	
२४	वर्धमान				(०॥)		स्व	,,	
,,	महावीरस्वामि					०	,	,,	
राशि	पति	एक्नाथ	वर्ण					नक्षत्र	
सिंह	सूर्य	०	क्षत्रिय			भक		पू० फा०	

साधक अक्षर—य या यि यी यु यू।

नं०	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्ववीर्य	६	हरिण	य	साम्य		राक्षस	वृश्चिक	आद्य
	विरुध्य	२,४,६	श्वान	प		दर्य	दे० म०	मिथुन	आद्यवेध
१	ऋषभनाथ					१	अशुभ	श्रेष्ठ	
२	अजितनाथ	अशुभ				१	,,	सम	
३	संभवनाथ				०॥		वेर	शत्रु	
४	अभिनंदन					३	,,	,,	वेध
५	सुमतिनाथ				०॥		स्व	श्रेष्ठतर	
६	पद्मप्रभु					०॥	,,	शुभ	
७	सुपार्श्वनाथ				०॥		,,	अशुभ	
८	चंद्रप्रभु		मैत्री	कुबेर	२		वेर	स्वराशि	
९	सुविधिनाथ		कुवेर		॥		स्व	श्रेष्ठ	वेध
१०	शीतलनाथ	अशुभ			०॥		अशुभ	,,	
११	श्रेयांसनाथ	अशुभ			०॥		वेर	शुभ	
१२	वासुपूज्य	अशुभ				०	स्व	श्रेष्ठ	वेध
१३	विमलनाथ					०	अशुभ	शुभ	
१४	अनंतनाथ					३	वेर	,,	
१५	धर्मनाथ					१	,	मध्यम	
१६	शांतिनाथ				०॥		,,	प्रीति	वेध
१७	कुंथुनाथ				१॥		स्वगण	सम	
१८	अरनाथ					३	वेर	शुभ	
१९	मल्लिनाथ					०॥	,,	प्रीति	वेध
२०	मुनिसुव्रत	अशुभ			(०॥)	०॥	,,	शुभ	
२१	नमिनाथ					१	,,	प्रीति	वेध
२२	नेमिनाथ					१	स्वगण	शुभ	
२३	पार्श्वनाथ					०॥	,,	अशुभ	
२४	वर्धमान					(०)	अशुभ	शुभ	वेध
,,	महावीरस्वामी					०॥		,,	,,
राशि वृश्चिक	पति मंगल	एकनाथ मेष	वर्ण ब्राह्मण	वश्य सिंह				नक्षत्र ज्येष्ठा	युंजि पश्चिम

साधक अक्षर—क्ष र रा रि री (क्ष, वेधे चित्य)।

नं०	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीय	५	वानर	य	लभ्य		राक्षस	तुला	मध्य
	विरुद्ध	७,६,२	मेष	च		देय	दे० म०	मान	मध्यवध
१	ऋषभनाथ					३	अशुभ	शुभ	
२	अजितनाथ					३	,,	प्रीति	
३	संभवनाथ				०॥		वैर	शुभ	भवेध
४	अभिनंदन	अशुभ				३	,,	,	
५	सुमतिनाथ				●॥		स्व	,,	
६	पद्मप्रभु		स्वा			०॥	,	श्रेष्ठ	एकभं
७	सुपार्श्वनाथ	अशुभ	मैत्री		●॥		,,	स्वराशि	
८	चंद्रप्रभु				२		वैर	अशुभ	वेध
९	सुविधिनाथ			कुवेर	०॥		स्व	शुभ	
१०	शीतलनाथ	अशुभ			०॥		अशुभ	,,	वध
११	श्रेयांसनाथ				●॥		वैर	श्रेष्ठतर	
१२	वासुपूज्य					●	स्व	शुभ	
१३	विमलनाथ		वैर			●	अशुभ	शत्रु	वेध
१४	अनंतनाथ	अशुभ				३	वैर	,,	
१५	धर्मनाथ					१	,	श्रेष्ठ	वध
१६	शांतिनाथ				०॥		,,	सम	
१७	कुंथुनाथ				१॥		स्वगण	प्रीति	
१८	अरनाथ	अशुभ				३	वैर	शत्रु	
१९	मल्लिनाथ					●॥	,,	सम	
२०	मुनिसुव्रत					●॥	,,	श्रेष्ठतर	
२१	नमिनाथ					१	,,	सम	
२२	नेमनाथ		स्वा			१	स्वगण	श्रेष्ठ	एकभ
२३	पार्श्वनाथ	अशुभ	मैत्री			●॥	,,	स्वराशि	
२४	वधमान		वैर			(●)	अशुभ	श्रेष्ट	
,	महावीरस्वामी		,,			●॥	,,	,,	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्य				नक्षत्र	युजी
तुला	शुक्र	वृष	शुद्र	विनासिंह मनुष्यंच				चित्रा	मध्य

साधक अक्षर—रु रू रे रै रो रौ (रु रू १ पाद ७-१७-२३ भवेध. ⊛)

न	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशी	नाडी
साध्य नाम	स्वकीयं	६	महिष	य	लभ्य		देव	तुला	अत्य
	विरुद्ध	८, १, ३	अश्व	च		देयं	राक्षस	मीन	अत्यवेध
१	ऋषभदेव	अशुभ				२	मध्यम	शुभ	भवेध*
२	अजितनाथ					३	,,	प्रीति	वेध
३	संभवनाथ				०॥		स्व	शुभ	
४	अभिनंदन					२	,,	,	
५	सुमतिनाथ	अशुभ			•॥		वैर	,,	वेध
६	पद्मप्रभु					•॥	,,	श्रेष्ठ	
७	सुपार्श्वनाथ				•॥		,,	स्वराशि	वेध*
८	चंद्रप्रभु	अशुभ		कुवेर	२		स्व	अशुभ	
९	सुविधिनाथ	अशुभ			•॥		वैर	शुभ	
१०	शीतलनाथ				•॥		मध्यम	,,	
११	श्रेयांसनाथ				•॥		स्व	श्रेष्ठतर	वेध
१२	वासुपूज्य		वैर			•	वैर	शुभ	
१३	विमलनाथ	अशुभ				•	मध्यम	शत्रु	
१४	अनंतनाथ					३	स्व	,,	वेध
१५	धर्मनाथ	अशुभ				१	,,	श्रेष्ठ	
१६	शांतिनाथ	अशुभ	वैर		•॥		,,	सम	
१७	कुंथुनाथ	अशुभ			१॥		वैर	प्रीति	वेध*
१८	अरनाथ					३	स्व	शत्रु	वेध
१९	मल्लिनाथ	अशुभ	वैर			•॥	,,	सम	
२०	मुनिसुव्रत					•॥	,,	श्रेष्ठतर	वेध
२१	नमिनाथ	अशुभ	वैर			१	,	सम	
२२	नेमनाथ					१	वैर	श्रेष्ठ	
२३	पार्श्वनाथ					०॥	,,	स्वराशि	वेध*
२४	वर्धमान	अशुभ				(•)	मध्यम	श्रेष्ठ	
,,	महावीरस्वामी	,				•॥	,,	,,	
राशि तुला	पति शुक्र	एकनाथ वृषभ	वर्ण शुद्र	वश्यं विनासिंहं मनुष्यच				नक्षत्र स्वाति	युजी मध्य

साधक अक्षर--ल ला।

न०	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीय	१	अश्व	व	लभ्य		देव	मेष	आद्य
	विरुद्ध	३,५,७	महिष	च		देय	राक्षस	कन्या	आद्यवेध
१	ऋषभनाथ	अशुभ							
२	अजितनाथ					३	मध्यम	शुभ	
३	संभवनाथ	अशुभ				३	,,	अशुभ	
४	अभिनंदन	अशुभ			०॥		स्व	शुभ	
५	सुमतिनाथ					३	,,	,,	भवेध
६	पद्मप्रभु	अशुभ			०॥		वैर	,,	
७	सुपार्श्वनाथ	अशुभ				०॥	,,	शत्रु	
८	चंद्रप्रभु				०॥		,,	सम	
९	सुविधिनाथ			कुवेर	२		स्व	प्रीति	
१०	शीतलनाथ				०॥		वैर	शुभ	वेध
११	श्रेयांसनाथ				०॥		मध्यम	,,	
१२	वासुपूज्य		मैत्री		०॥		स्व	श्रेष्ठ	
१३	विमलनाथ					•	वैर	शुभ	वेध
१४	अनंतनाथ					०	मध्यम	श्रेष्ठ	
१५	धर्मनाथ					३	स्व	,,	
१६	शांतिनाथ		स्वा			१	,,	श्रेष्ठतर	
१७	कुंथुनाथ	अशुभ			०॥		,,	स्वराशि	एकभं
१८	अरनाथ				१॥		वैर	अशुभ	
१९	मल्लिनाथ		स्वा			३	स्व	श्रेष्ठ	
२०	मुनिसुव्रत					०॥	,,	स्वराशि	एकभं
२१	नमिनाथ		स्वा			०॥	,,	श्रेष्ठ	
२२	नेमनाथ	अशुभ				१	,	स्वराशि	एकभं
२३	पार्श्वनाथ	अशुभ				१	वैर	शत्रु	
२४	वर्धमान	अशुभ				०॥	,,	सम	
,,	महावीरस्वामी	,				( )	मध्यम	शत्रु	भवध
						०॥	,,	,,	,,
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण		वश्य			नक्षत्र	युजी
	मगध	वृश्चिक	क्षत्रिय		•			अश्विनी	पूव

साधक अक्षर—लि ली लु लू ले लै लो लौ (ले लै लो लौ ३-६ २०-भवेध ०)

न	माध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
[illegible]	स्वकीय	२	हस्ति	य	लभ्यं		मनुष्य	मेष	मध्य
	विरुध्य	४,६,८	सिंह	च		देय	राक्षस	कन्या	मध्यवेध
१	ऋषभनाथ					३	स्व	शुभ	
२	अजितनाथ	अशुभ				२	,	अशुभ	
३	संभवनाथ				०॥		मध्यम	शुभ	भवेध*
४	अभिनंदन					३	,,	,,	
५	सुमतिनाथ				०॥		अशुभ	,,	
६	पद्मप्रभु					०॥	,,	शत्रु	भवेध*
७	सुपार्श्वनाथ				०॥		,,	सम	
८	चंद्रप्रभु	अशुभ		कुबेर	२		मध्यम	प्रीति	वेध
९	सुविधिनाथ				०॥		अशुभ	शुभ	
१०	शीतलनाथ				०॥		स्वगण	,,	वेध
११	श्रेयांसनाथ	अशुभ			०॥		मध्यम	श्रेष्ठ	
१२	वासुपूज्य	अशुभ				०	अशुभ	शुभ	
१३	विमलनाथ	अशुभ				०	स्वगण	श्रेष्ठ	वेध
१४	अनंतनाथ		मैत्री			३	मध्यम	,,	
१५	धर्मनाथ	अशुभ				१	,,	श्रेष्ठतर	वेध
१६	शांतिनाथ				०॥		,,	स्वराशि	
१७	कुंथुनाथ				१॥		अशुभ	अशुभ	
१८	अरनाथ		मैत्री			३	मध्यम	श्रेष्ठ	
१९	मल्लिनाथ					०॥		स्वराशि	
२०	मुनिसुव्रत	अशुभ				०॥	,	श्रेष्ठ	
२१	नमिनाथ					१	,,	स्वराशि	
२२	नेमिनाथ					१	अशुभ	शत्रु	भवेध०
२३	पार्श्वनाथ					०॥	,,	सम	
२४	वर्धमान					(०)	स्व	शत्रु	
,,	महावीरस्वामी					०॥	,,	,,	
राशि	पति	एकनाथ	वर्ण		वश्य			नक्षत्र	युंजि
मेष	मंगल	वृश्चिक	क्षत्रिय		०			भरणी	पूर्व

साधक अक्षर—व वा वि वी वु वू (वु वू १ पाद ७ १७ २३-अवेध *)

न	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
नाम	स्वकीयं	४	सर्प	य	लभ्यं		मनुष्य	वृषभ	अत्य
	विरुध्यं	६,८,१	नकुल	च		देय	राक्षस	धन	अत्यवेध
१	ऋषभनाथ		कुबेर						
२	अजितनाथ		स्वा			३	स्व	शत्रु	मवेध*
३	संभवनाथ		मैत्री			३	,,	स्वराशि	एकर्भ
४	अभिनंदन				०॥		मध्यम	श्रेष्ठ	
५	सुमतिनाथ	अशुभ				३	,,	,	
६	पद्मप्रभु				०॥		अशुभ	,,	वेध
७	सुपार्श्वनाथ					•॥	,,	शुभ	
८	चंद्रप्रभु	अशुभ			॥		,	प्रीति	वेध*
९	सुविधिनाथ	अशुभ		कुवेर	२		मध्यम	सम	
१	शीतलनाथ				•॥		अशुभ	शत्रु	
११	श्रेयांसनाथ				०॥		स्वगण	,,	
१२	वासुपूज्य	अशुभ			•॥		मध्यम	शुभ	वेध
१३	विमलनाथ	अशुभ				०	अशुभ	श्रेष्ठतर	
१४	अनंतनाथ					०	स्वगण	शुभ	
१५	धर्मनाथ	अशुभ				३	मध्यम	,,	वध
१६	शांतिनाथ	अशुभ				१	,	,,	
१७	कुंथुनाथ				॥		,,	अशुभ	
१८	अरनाथ				१॥		अशुभ	स्वराशि	वेध*
१९	मल्लिनाथ	अशुभ				३	मध्यम	शुभ	वेध
२०	मुनिसुव्रत					•॥	,,	अशुभ	
२१	नमिनाथ	अशुभ				०॥	,	शुभ	वेध
२२	नेमनाथ					१	,,	अशुभ	
२३	पार्श्वनाथ					१	अशुभ	शुभ	
२४	वर्धमान					०॥	,,	प्रीति	वेध*
,,	महावीरस्वामी					(०)	स्व	शुभ	
						•॥	,,	,,	
राशि वृष	पति शुक्र	एकनाथ तुला	वर्णो वैश्य	वश्य मेष				नक्षत्रं रोहिणी	युंजी पूर्व

साधक अक्षर—वे वैं वो वौं।

न॰	साम्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	त्रिशोनक		गण	राशि	नाडी
कृष्णा नाम	स्वकीय	५	सर्प	प	साम्य		देव	वृषभ	मध्य
	विरुद्ध	७,९,२	नकुल	च		देव	राक्षस	धन	मध्यवेध
१	ऋषभनाथ		कुबेर			३	मध्यम	शत्रु	
२	अजितनाथ		मैत्री			२	,,	स्वराशि	
३	संभवनाथ		स्वा		०॥		स्व	श्रेष्ठ	एकम
४	अभिनंदन	अशुभ				३	,,	,,	
५	सुमतिनाथ				॥		वैर	,,	
६	पद्मप्रभु					०॥	,,	शुभ	अवेध
७	सुपार्श्वनाथ	अशुभ			०॥		,,	प्रीति	
८	चंद्रप्रभु			कुबेर	२		स्व	सम	वेध
९	सुविधिनाथ				०॥		वैर	शत्रु	
१०	शीतलनाथ	अशुभ			०॥		मध्यम	,,	वेध
११	श्रेयांसनाथ				•॥		स्व	शुभ	
१२	वासुपूज्य					०	वैर	श्रेष्ठतर	
१३	विमलनाथ					०	मध्यम	शुभ	वेध
१४	अनंतनाथ	अशुभ				३	स्व	शुभ	
१५	धर्मनाथ					१	,	,,	वेध
१६	शांतिनाथ				०॥		,	अशुभ	
१७	कुंथुनाथ				१॥		वैर	स्वराशि	
१८	अरनाथ	अशुभ				३	स्व	शुभ	
१९	मल्लिनाथ					•॥	,	अशुभ	
२०	मुनिसुव्रत				(•॥)	•॥	,	शुभ	
२१	नमिनाथ					१	,,	अशुभ	
२२	नेमिनाथ					१	वैर	शुभ	अवेध
२३	पार्श्वनाथ	अशुभ				•॥	,	प्रीति	
२४	वर्धमान					(•)	मध्यम	शुभ	
,,	महावीरस्वामी					०।	,,	,,	
राशि	पति	एकनाथ	वश्य		वर्ग			नक्षत्र	वर्ण
वृष	शुक्र		नैरव		मेष			मृगशि	

साधक अक्षर- स सा सि सी सु सू।

नं०	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीयं	६	अश्व	श	लभ्य		राक्षस	कुंभ	आद्य
	विरुद्ध	८,१,२	महिष	ट		देय	दे० म०	कर्क	आद्यवध
१	ऋषभनाथ	अशुभ							
२	अजितनाथ				•॥		अशुभ	शुभ	
३	संभवनाथ				•॥		,,	श्रेष्ठतर	
४	अभिनंदन					•	वैर	मध्यम	
५	सुमतिनाथ	अशुभ			•॥				वेध
६	पद्मप्रभु					०	स्व	सम	
७	सुपार्श्वनाथ					१	,	प्रीति	
८	चंद्रप्रभु	अशुभ				०	,,	शुभ	
९	सुविधिनाथ	अशुभ			१॥		वैर	श्रेष्ठ	
१०	शीतलनाथ					•	स्व	शुभ	वेध
११	श्रेयांसनाथ						अशुभ	,,	
१२	वासुपूज्य		स्वा			•	वैर	श्रेष्ठ	
१३	विमलनाथ	अशुभ				०॥	स्व	स्वराशि	एकभं
१४	अनंतनाथ					०॥	अशुभ	अशुभ	
१५	धर्मनाथ	अशुभ			०॥		वैर	,,	
१६	शांतिनाथ	अशुभ	मैत्री			१॥	,	शत्रु	
१७	कुंथुनाथ	अशुभ				०	,,	शुभ	वध
१८	अरनाथ				१		स्वगण	श्रेष्ठतर	
१९	मल्लिनाथ	अशुभ	मैत्री		•॥		वैर	अशुभ	
२०	मुनिसुव्रत					१	,,	शुभ	वेध
२१	नमिनाथ	अशुभ	मैत्री			१	,	श्रेष्ठ	
२२	नेमनाथ					१॥	,,	शुभ	वध
२३	पार्श्वनाथ					१॥	स्वगण	प्रीति	
२४	वर्धमान	अशुभ				१	,,	शुभ	
,,	महावीरस्वामी	,				(•॥)	अशुभ	प्रीति	वेध
						१	,,	,,	,,
राशि कुंभ	पति शनि	एकनाथ मकर	वर्ण शुद्र	वश्यं विनासिंह मनुष्यंच			नक्षत्र शतभिषा	युंजी पश्चिम	

साधक अक्षर—से सै सो सौ।

नं०	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीय	७,	सिंह	श	लभ्य		मनुष्य	कुंभ	आद्य
	विरुद्ध	६,२,४	हस्ति	ट		देय	राक्षस	कर्क	आद्यवेध
१	ऋषभनाथ				०॥		स्व	शुभ	
२	अजितनाथ	अशुभ			०॥		,,	श्रेष्ठतर	
३	संभवनाथ					०	मध्यम	मध्यम	
४	अभिनंदन				०॥		,,	,,	वेध
५	सुमतिनाथ					०	अशुभ	सम	
६	पद्मप्रभु					१	,,	प्रीति	
७	सुपार्श्वनाथ					०	,,	शुभ	
८	चंद्रप्रभु				१॥		मध्यम	श्रेष्ठ	
९	सुविधिनाथ					०	अशुभ	शुभ	वेध
१०	शीतलनाथ	अशुभ				०	स्वगण	,,	
११	श्रेयांसनाथ	अशुभ				०	मध्यम	श्रेष्ठ	
१२	वासुपूज्य					०॥	अशुभ	स्वराशि	वेध
१३	विमलनाथ					०॥	स्वगण	अशुभ	
१४	अनंतनाथ	अशुभ	वेर		०॥		मध्यम	,,	
१५	धर्मनाथ					१॥	,,	शत्रु	
१६	शांतिनाथ					०	,,	शुभ	वेध
१७	कुंथुनाथ				१		अशुभ	श्रेष्ठतर	
१८	अरनाथ	अशुभ	वेर		०॥		मध्यम	अशुभ	
१९	मल्लिनाथ					१	,,	शुभ	वेध
२०	मुनिसुव्रत	अशुभ				१	,	श्रेष्ठ	
२१	नमिनाथ					१॥	,	शुभ	वेध
२२	नेमिनाथ					१॥	अशुभ	प्रीति	
२३	पार्श्वनाथ					१	,,	शुभ	
२४	वर्धमान					(०॥)	स्व	प्रीति	वेध
,	महावीरस्वामी					१	,,	,,	,,

राशि	पति	एकनाथ	वर्ण	वश्य	नक्षत्र	युंजि
कुंभ	शनि	मकर	शूद्र	विनासिंह मनुष्यच	पू० भा	पश्चिम

साधक अक्षर—हु हू हे है हो हौ (हो हौ २-६-२२-भवेध ⊛)

नं०	साध्यजिन	तारा	योनि	वर्ग	विशोपक		गण	राशि	नाडी
साध्य नाम	स्वकीयं	८	मेष	श	लभ्यं		देव	कर्क	मध्य
	विरुध्य	१,३,५	वानर	ट		देयं	राक्षस	मि० कु	मध्यवेध
१	ऋषभनाथ	अशुभ			०॥		मध्यम	प्रीति	
२	अजितनाथ				०॥		,,	शुभ	
३	सभवनाथ	अशुभ				•	स्व	अशुभतर	वेध*
४	अभिनंदन				०॥		,,	,,	
५	सुमतिनाथ	अशुभ				०	वैर	श्रेष्ठ	
६	पद्मप्रभु	अशुभ				१	,,	शुभ	वेध*
७	सुपार्श्वनाथ					०	,,	श्रेष्ठ	
८	चंद्रप्रभु				१॥		स्व	मध्यम	वेध
९	सुविधिनाथ	अशुभ				•	वैर	प्रीति	
१०	शीतलनाथ		कुवेर			•	मध्यम	,,	वेध
११	श्रेयांसनाथ		कुवेर				स्व	सम	
१२	वासुपूज्य					०॥	वैर	शत्रु	
१३	विमलनाथ					०॥	मध्यम	मध्यम	वेध
१४	अनंतनाथ				०॥		स्व	,,	
१५	धर्मनाथ		स्वा			१॥	,	स्वराशि	एकर्म
१६	शांतिनाथ	अशुभ				०	,,	श्रेष्ठतर	
१७	कुंथुनाथ	अशुभ	मैत्री		१		वैर	शुभ	
१८	अरनाथ				०॥		स्व	मध्यम	
१९	मल्लिनाथ	अशुभ				१	,,	श्रेष्ठतर	
२०	मुनिसुव्रत		कुवेर		(०)	२	,,	सम	
२१	नमिनाथ	अशुभ				१॥	,,	श्रेष्ठतर	
२२	नेमनाथ	अशुभ				१॥	वैर	शुभ	वेध*
२३	पार्श्वनाथ					१	,,	श्रेष्ठ	
२४	वर्धमान	अशुभ				(०॥)	मध्यम	शुभ	
,,	महावीरस्वामी	,,							
						१	,,	,,	
राशि कर्क	पति चंद्र	एकनाथ ०	वर्ण ब्राह्मण	वश्य ०				नक्षत्र पुष्य	युजि मध्य

सर्वतीर्थंकरा श्रेष्ठा कारण भाववर्धने
तथापि सन्निमित्तेन भवेत्कार्यं गुणाधिक १०
श्रीमच्चारित्र विजय शिष्य दर्शन सत्कृत
महति धारणायन्त्रे अध्याय पंचम इति ११

प्रशस्ति

मंगल —	वीर वीरेति वीरेति	विराजतु ममाशये	
	महावीरेति वीरेति	वीरता भवतु वरा	१२
सूरि —	गुणमणिगणपूर्ण	स्वच्छगच्छे तपाख्ये	
	विजय कमलसूरि	पूण्यसंघप्रतेजा	
	भविक मधुप पद्मो	दत्त चारित्रपोष्प	
	समजनि जनमान्य	शात मुद्राभिराम	१३
	विजय केशर. सूरि	स्पत्पट्टे भूत् मुनिपति	
वृद्धगुरु —	तल्लघु वधुर्विनयो	विजय शान्तभूषण	१४
गुरु —	विनय विजय शिष्यो	ब्रह्मचारिमुनींद्र	
	प्रवर गुरुकुलस्य	ज्ञानराशेर्विधाता	
	विजयद विजयान्त	ख्यात चारित्रनामा	
	सदमरपदमाक्स्तात्	पूज्य पूज्य प्रसन्न	१५
कर्तृनाम —	तत्पादपद्मशमनामृत पान भृ ग		
	ज्ञानेरतो विजयदर्शननामभिक्षु		
विधान —	सश्लोक कोष्ठ सरल गुह्यतत्त्वमाध्य		
	यन्त्रं चकार स वृहद्गति धारणायां		१६
ग्रंथफल —	प्र थात्ज्ञान विधिवाद	प्रतिष्ठाऽर्चासुदर्शनम्	
	भावस्वरणनैजर्य	क्रमशोभवतुनृणाम्	१७
संवत्काल —	[illegible]	वर्षे राकासु चैत्रके	
२४५६	प्र [illegible]	सम्मेतशिखरे वने	

	शाश्त्रमुनि ज्ञान-न्याय—	सहाय्यात्सफलीकृत	
	यावद्मेरुमहीचक्रा	नदतात्ज्ञानीनां मुदे	१६
श्लोकमानं —	विश्वप्रमा-निश्वरत्नै—	काक्षरी सामुद्र-पूनादे	
	सशतवींशति श्लोकै	पश्चाद्रचितो धारणा यत्र	२०
	कल्याणमस्तुसघस्य	जैनधर्मस्य मगलम्	
	भद्र ज्ञानस्य ग्र थस्य	सर्वपाभयतुशिवं	२१
	इति वृहध्धारणा यंत्रं	शास्त्रं समाप्तम्	

परिशिष्ट-१ श्रीबिंबपरीक्षा प्रकरणम्—

इय गिहलक्खणव भणाविय बिंबपरिमाणं
गुण दोस लक्खणाइ सुहासुह जेण नज्जेइ ॥ १ ॥

(१३१)	छत्तत्तयं उत्तारं	भालकपोलाओ सवणनासाओ	
	सुहयं जिणचरणग्गे	नवग्गहा जक्ख जक्खिणीया	१
(१३२)	बिंबपरिवारमज्झे	सेलस्स यवसंकर नसुहं	
(श्रा० वि०)	समअंगुलपमाण	नसुंदर होइ कइयावी	२
(१३३)	अनुन्नं जानुसधे	तिरिअे केसंत-अचलते अ	
	सुत्तेगं चउरस	पज्जकाऽऽसण सुहं बिंब	३
(१३५)	नवताल हवइरूवं	रुवस्स य बारसगुलोतालो	
(१३६)	अगुल अट्ठहिअसय	उड्ढ धाऽऽसीणछप्पन्न	४
(१३७)	भालं नासा वयण	गीव हीअय नाहि गुज्झ जधाइ	
	जाणुअ पींडिअ चरणा	इक्कारसट्ठाण नायव्वा	५
(१३८)	चउ पच वेय रामा ३ रवि १२	दिणयर सूर जिण वेआअ	
	जिण वेअमा अ सखा	कमेणअ उड्ढरुवेण (उर्ध्वबींब)	६

(१३९)	माल नासायणं	गीव हिअय नाहि गुज्भ जाणुअ
	आसीण बिंब माण	पूव्वसिहि अक्खखाइ (८ स्थान) ७
	मुहकमल चउदसगुल	कन्नतरि सिच्छरे दहगिवा
	छत्तिसमुरपपसे	सोलहकडि सोल्तणुपींड ८
	कन्नुदयसोल(?)वित्थरि—	चउ उवरे निन्निठिओल्लिरयणं नध्धु
	तिनित्थरि दुदपसि	सिरिवच्छो दुदुइत्तिय पिहुओ ९
	सिरिवच्छ सिरिण कवखं—	तरमि तहअस पणसयपणट्ठ कम्मा
	मुणि चउ रनिट्ठा वेआ	कुहणी भणिबंध जंघ जाणु पय १०
	अगुट्ठ सहिय करयल	ऽछ सतगुलस्स वित्थारे
	चरणं सोलस दिहे	तयध्ध विच्छि भवउ रुद्गे ११
	छम्माय अहरदीहे	चक्खुपण दीहध्धपिहुलत्ते
	तिन्निसिहिणं चउनाडी	नासा-उर-नाहि सुत्तेग १२
	केसतसिहा ५ गदिअ ८	पयट्ट कम्मेण अगुल्ला जाए
	पउमुट्टरेहचक्क	करचरणाविहुसिय निव्वं १३
(१४०)	घरिस सयाओ उड्ढं	जं थिय उत्तमेहिं सठविअ
	विअलंगुवि पुइज्जइ	त बिंव निप्फल न जओ १४
(आ० वि०)	मुह नक्क नयण नाही	कडिभगे मूल्नायग चयह
	आहरण वच्छ परिगर	चिधाऽऽउह भगी पूइज्जा १५
(१४१)	धातुको(ले)हाइबिंब	विअलंगं पुणत्रि कीरिएसज्भ
	कट्ठरयण सीलमय	नपुणो सज्भ कइआत्रि (सस्कार) १६
(१४५)	पाहाणलेवकट्ठ दतमया	चित्तलिहिअ जा पडिमा
	अपरिगर माणाऽहिआ ११	न सुदरा पुअमाण गिहे १७
(१४४)	इक्कगुलाइ पडिमा	इक्कारसजाव गेहि पुइज्भा
(आ० वि०)	उड्ढ पासाइ पुणो	इअभणिअ पूव्वसूरिहिं १८
(१४२)	नह अगुलिअ बाहा	नासा पयभंगिऽणुक्कमेण
	फलंसत्तुभय वेसभग	धधणं कुलनास दव्व क्खय १९
(१४३)	पय पीढ चिन्ह परिगर	भगेजाण भिच्चहाणिकम्मे

	एक हस्तेतु प्रासादे	दड पादोन मगुल	
	कुर्याद्र्षांगुरावृद्धि—	यावत्पं चाशद्धस्तक	४२
	सुध्रा सारदारुच	ग्र थि कोटर वर्जित	
	पर्वभिर्विषमै कार्य	समग्र थि सुखावह	४३

त्रिपमाम थयो कणानि प्रथमावृपदो(कोलामा)परि अत्यामर्कटाघ

	दडदैर्घ्य षडंशोना ३	मर्कटयर्धेन विस्तृता १½	
	अर्धचद्राकृति ¼ पार्श्वे	घटोर्ध्वे कलशास्तथा	४४
	ध्वजादडप्रमाणेन—	दीर्घाष्टांशेन विस्तरा	४५
शिखर युक्ततु—	दड कार्यस्तृतीयाश	शिलातः कलशावधे	
	मध्योऽष्टांशेन हीनोसौ	ज्येष्ठात्पादोनयन्यश	४६
आवादिाकरे—	त्रिवेंयफशिखर.	प्रमाणमानो ध्वजस्य वेदट ३ +	
(विनाकठ)—	दडस्तृतीयांशोनो	ध्वजपटोडुंमरमितथार्ध ३ पृथु +	

वेदिका-गभारामा ३ भागे उंची करवी, दृष्टिद्वारना ३½ भागे राखवी

३ वारसांगीवो वेदिका उपरत्पुनेडक उपरमूर्ति, जिमदृष्टि वारना ५½ भागे

—•○○—

परिशिष्ट—१, सुधारसरचनसंग्रहमाथी—

भगवाननी बेठी अथवा उभी बन्ने प्रकारनी प्रतिमा यौवन अवस्थायुक्त होवी जोइए तेमा पहेली (बेठी) प्रतिमा पर्यकासन वाळी होवी जोइए ।

प्रथम जमणी जांघ अने जमणा साथळ उपर डाबो पग तथा डाबो हाथ स्थापन करवो पछी डाबी जांघ अने डाबा साथळ उपर जमणो पग अने जमणो हाथ मूकवो एने पडित पुरुषो पर्यकासन माने छे ।

भगवाननी प्रतिमा उभी होयतो तेना वेभुज ढींचण सुधी लांबा जोइए बन्ने प्रतिमाओ श्री वत्स, उष्णीष, त्रण छत्र इत्यादि परिवार युक्त जोइए ।

नासिकाना अग्रभाग उपर त्रण छत्रना अग्रभागनी समरेखा आवे तो ते त्रण छत्र सजातम आणवा नेमज नासिका अने कपाळ एना मध्य भागमा आडी रेखाथी कपोळनो वेध थवो जोइए ।

वे दीवणनी वच्चे आडु सूत्र देवु अने सूत्रथी नाभि सुधी एक कंबिका राखवी ए रीते करता नाभिथी सुत्र सुधी अढार आगळनु प्रमाण जोइए।

प्रतिमानु ऊंचाइनु प्रमाण नव ताल जाणवु चार आगुळनो एक ताळ थाय छे अहीं आगळा करावा न लेता प्रतिमाना लेवा।

पूजा वगर घणो काळ एमने एम पडेली प्रतिमा ज्या त्याथी ग्रहण करवी नहीं।

प्रासादना चोथा भाग जेटली प्रतिमा करवो पण उत्तम लाभ प्राप्तिने अर्थे ते चोथा भागमा एक आगुल ओछी अथवा वधारे करवी।

प्रसादना चोथा भागना दश भाग करवा अने ते दशिओ एक भाग प्रासादना चोथा भागमा ओछो करी, अथवा तेमा एक दशिओ भाग उमेरी, तेटला प्रमाणनी प्रतिमा कारिगरोए करवी।

सर्व धातुओनी, रत्ननी, स्फटिकनी अथवा प्रवाळनी प्रतिमा होय तो त्या प्रतिमाना प्रमाण उपर प्रसादनु प्रमाण न लेता इच्छा माफक लेवु।

गभाराना अर्धभागना पाच भाग भितिथी करवा तेमा प्रथम भागमा यक्षादिकनी स्थापना करवी, बीजा भागमा सर्वे देवीओनी स्थापना करवी त्रीजा भागमा जिन, सूर्य, कार्तिकेय तथा कृष्ण एमनी प्रतिमा स्थापन करवी, चोथा भागमा ब्रह्मानी प्रतिमा अने पाचमा भागमा शिवलिंगनी प्रतिमा राखवी।

सामाद्वारनी शाखाना निचेथी आठ भाग करवा, तेमा जे आठमो भाग वधा करता उपर आवेलो ते मूकी देवो अने तेना निचेनो जे सातमो भाग तेना पाछा निचेथी सात भाग करवा तथा ते सातमाना छ भाग मूको देवा उपरनो जे सातमो भाग रह्यो तेमा गजारा (अष्टमारा) समने छे ते गजाशने विषे कारीगरोए प्रासादनो अदर रहेला प्रतिमा नीदृष्टि राखवी।

स्पष्ट दिशा ज्ञान करावनारी, अ-गोळ, चोरसडी, त्रण दिवसमा धान्य उगावनारी तथा पूर्व उत्तर-ईशान दिशामा उतरती भूमि मदिर माटे श्रेष्ठ छे।

राफडा-पोल-फाट के शल्यवाळी भूमि अशुभ।

खाण्नी काची माटीना कोडीयामा चार दिवा करवा जे दिशानो दिवो घणी वार प्रकाशे ते दिशानी ते भूमि सारी।

भुमि मापना दोरीतुटे तो धणीनु मृत्यु, ठोकता खीलो वळी जाय तो रोग घडो पडे फुटे तो स्मृतिनाश।

જ્યા માન અક્ષરા ન અક્ષરો છે ત્યા ત્ર ઋ સિવાયના સ્વર સમજવા, જ્ઞ ઞ, ક્ષ, ઙ ત્ર અને હ્રસ્વ દીર્ઘ અલગ અલગ નથી, તે એકજ સમજવા (૮ થી ૧૮)

નક્ષત્રો યોન અનુક્રમે—ઘોડા, હાથી અજ (બકરો), સર્પ, સર્પ, શ્વાન (કુતરો), બિડાલ, અજ, બિડાલ ઉંદર, ઉંદર, ગાય, મહિષ (પાડો), વાઘ, મહિષ, વાઘ, હ ણ, હરણ શ્વાન વાદર, નકુલ (નોળીઓ) નકુલ, વાદર, સિંહ, અશ્વ, સિંહ, ગાય અને હસ્તિ છે તેમા હાથી—સિંહ શ્વાન—હરિણ અશ્વ—મહિષ, અજ—વાદર, નકુલ—સર્પ, ગાય—વાઘ તથા બિડાલ- ઉંદરને પરસ્પર વેર છે કેટલાક આચાર્યો આ વેર કલ્પનાને નિરર્થક માને છે (૧૯ ૨૧)

જન્મ નક્ષત્ર તથા નામ નક્ષત્રથી અનુક્રમે નવ નવ તારા ઓ છે જે નવનાર ગણવી સાધકથી સાધ્ય રાશી ૩ ૫ ૭ મી તારા અશુભ છે વરક યા વિગેરેમા તારા લેવી કિ તુ પ્રતિષ્ઠાપક પ્રતિમામા તારા લેવી નહી રાશિ પતિ-ગ્રહની મૈત્રી હોય એકતા હોય કે શુભવશ્યતા હોય તો પણ નેષ્ટ તારા વર્જવી (૨૨ ૨૩)

અશ્વિની, મૃગશર, પુનર્વસુ, પુષ્ય, હસ્ત, સ્વાતિ, અનુરાધા, શ્રવણ અને રેવતીનો દેવ ગણ છે ભ ણી, રોહિણી, આદ્રા, ત્રણપૂર્વા, ત્રણઉત્તરાનો મનુષ્ય ગણ છે (અભિજિત્‌નો વિદ્યાધર ગણ છે) બાકીના નવ નક્ષત્રોનો રાક્ષસ ગણ છે

સ્વગણમા પ્રીતિ, દેવ મનુષ્યમા મધ્યમતા, દેવ રાક્ષસમા વૈર અને મનુષ્ય રાક્ષસમા મૃત્યુ થાય છે રાશિકૂટ યોનિ તથા ગ્રહમૈત્રી શુભ હોય સાધ્યમા મનુષ્ય ગણ હોય તો સાધકનો રાક્ષસ ગણ પણ અશુભ નથી (૨૪ ૨૭)

અશ્વિનીથી ક્રમે અને ઉત્ક્રમે સ્થાપેલા ત્રણ ત્રણ નક્ષત્રોની ત્રણ નાડી થાય છે સાધક સાધ્યના નક્ષત્રો એક નાડીમા આવે તો એકદમ અશુભ છે ગુરુશિષ્યના નક્ષત્રો એક નાડીમા આવે તે શુભ છે આ રીતે થયેલ નાડીવેધ સારામા સારા મળેલાનેપણ નાશ કરે છે જ્યારે ગુરુ શિષ્યનો નાડીવેધ દુષ્ટ યોનિના બળનો નાશ કરે છે સ્વામી, પણ્યસ્ત્રી, મિત્ર, દેશ ગામ, પુર તથા ઘર એક નાડીમા હોય તો શુભ છે વેધ રહિત હોય તો અશુભ છે (૨૮ ૩૦) એક નક્ષત્રમા જન્મેલ બીજાઓમા સારો પ્રેમ રહે છે પણ વર કન્યાને હાનિ થાય છે વર કન્યાને રાશિભેદ હોય તો એક [illegible] નથી (૩૧) અન્યમા નાડીવેધ અશુભ છે, રાશિ ભેદ હો [illegible] છે પણ બાર પ ક્તિવાળા નાડીચક્રમા [illegible] વેધ થા [illegible])

રેવતીથી પ્રાર ભીને અનુક્રમે [illegible]
પશ્ચિમ યોગ થાય છે જે વિવા [illegible]
(૩૩)

અધ્યાય ૩, અક્ષર પ્રકરણ

પરમેષ્ઠીને નમસ્કાર કરીને શિઘ્રબોધ માટે સાધક સાધ્ય સબંધી અક્ષર સ્થાપના કરૂ છુ. (૧) નામનિ શરૂઆતમા સ્વરો કે બારાક્ષરી વ્યંજનો હોય છે જેનો રાશિ નક્ષત્ર અને વર્ગનામેળ પ્રમાણે જુદો જથ્થો કરવા આવી રીતે અલગ રાશિ નક્ષત્ર વર્ગના યોગથી જે સમૂહ થાય તને સ્થાપી તેના દરેક અક્ષરની પક્તિમા તેનાજ નક્ષત્ર વિગેરે સમજી શકાય તેમ લખવા (૨ ૩) આ રીતે અ ઇ ઓ કા કુ કે આ ખી ગ ગુ ગો ઘા ચ ચુ છ જ ઝ ટા ટે ટો ઠ ડા ડી ધ ણુ તા તિ તો થા દ દિ દુ દે ધા ન નો પ પુ પે ફ ણા બે ભા ભુ ભે ભો મ મો ય યે ર રૂ લા લી વા વે શ ષા સ સે હા હિ હુ એ ૬૪ અક્ષરો થાય છે અહીં નહીં કહેલ અક્ષરો પૂર્વના (કથિત) અક્ષરો સાથે જાણવા. હ્રસ્વ દીર્ઘ એકજ છે જે દરેકના નામોમા રહેલા છે (૫૭) સાધક સાધ્યનો યોગ જોવાની ઇચ્છા થતા આ કોઠાથી જલ્દી જ્ઞાન થાય છે (૮) અધ્યાય ૩ જો સમાપ્ત (૯)

અધ્યાય ૪, અ ઉ ઓ ક ચક્ર પ્રકરણ

પરેશને નમીને સાધક સાધ્યની સિદ્ધિ માટે માત્ર અક્ષરનુ અ ઉ ઓ ક ચક્ર કહુ છુ (૧) દરેકે ચાર કોઠામા અ ક ડ મ ચક્ર માન્યુ છે, તે જ નણે ભાગે નાનુ કરી આ ચક્ર બનાવુ છુ (૨) ચાર કોઠામા અનુક્રમે ઋ ૠ ઌ ૡ સિવાયના સ્વરો અને મૂળ વ્યંજનો લખવા ઋ ૠ ને રમા અને ઌ ૡ ને લમા લેવા (૩૪)

આ રીતે પ્રત્યેક કોઠામા ચાર અક્ષરો આવશે, તેથી સાધક સાધ્યનો યોગ કરવો આ ચક્ર ખાસ કરીને દેશ કિલ્લો પુર ગામ હવા મંત્ર દેવ શેઠ નોકર જમીન અને શત્રુ માટે જોવુ (૫૬) વિવાહ શુભકાર્ય લાભકાર્ય અને ગ્રહ ગોચરમા જન્મનુ નામ જોવુ અને ઘર ગામ ખણી ખેતર વ્યાપાર તથા રાજ દર્શનમા હુલાપનનુ નામ જોવુ (૭૮) સાધકને ૧૨૩૪ કોઠાના અક્ષરો સાથે અનુક્રમે સિદ્ધિ સાધ્ય સુસિદ્ધિ અને શત્રુ યોગ છે જેના ફળો અનુક્રમે દીર્ઘકાળે સિદ્ધિ સંશય શિઘ્રસિદ્ધિ અને કાર્ય વિનાશ છે. (૯૧) અધ્યાય ૪ થો સમાપ્ત (૧૧)

અધ્યાય ૫, પૂર્ણભગ પ્રકરણ.

સર્વજ્ઞ પરમેશ્વરને શુદ્ધ પ્રેમથી નમુ છુ પૂર્વજ્ઞાની કલિકાલ સર્વજ્ઞ શ્રી હેમચદ્ર સૂરિને સ્તવુ છુ પરમ પવિત્ર ગુરૂ શ્રીમદ્ ચારિત્રવિજયજીને પ્રેમથી નમીને સપૂર્ણ ભાગવાળો તીર્થ કરનો ધારણા યત્ર કોઠો કરૂ છુ (૧૨) આ સ્થાપક આચાર્ય મુનિ, શ્રાવક કે નગરને કયા તીર્થ કર શ્રેષ્ઠ છે ? એ પ્રશ્નનો ઉત્તર પ્રસ્તુત કોઠાથી દેવો અમુક સઘને કયા તીર્થ કર શુભ છે એ જોવુ નહીં (૩, હીર પ્રશ્ન) ભિન્ન ભિન્ન રાશિ નક્ષત્ર અને વર્ગથી તારવેલા સાધકના ૬૪ અક્ષરો તથા યોનિ વિગેરે એકેક પત્રમા લખવા, પછી દરેક પત્રમા ૨૪ તીર્થ કર અને તેના યોનિ વિગેરે ગોઠવવા આ રીતે ૧૫૩૬ કોઠા થાય છે તેથી વિવેકિએ સાધક જિનનો યોગ સાધવો (૪૬) નવીન જિન બિબ જોવામા ઉત્તરોત્તર બલ વાળી યોનિ વર્ગ લેણદેણી ગણ રાશિ અને નાડીવેધ એ છ બાબતો તપાસવી તારા જોવાની ખાસ જરૂર નથી વૈરમા કુવેર બળવાન છે, ભ(નક્ષત્ર)વેધ મધ્યમ છે, પાદવેધ અતિ દુષ્ટ છે પછી પછીના ખરાબ હોય તો તે યોગ વર્જવો માટે પરોપકારી પુરૂષો એ શસ્તયોગ લેવો (૭૯) દરેક તીર્થ કરો શ્રેષ્ઠ છે ભાવ વૃદ્ધિના હેતુ રૂપ છે તોપણ શ્રેષ્ઠ નિમિત્તોથી ઇષ્ટ કાર્ય અધિક ગુણ વાળુ બને છે (૧૦) અધ્યાય ૫ મો સમાપ્ત (૧૧)

પ્રશસ્તિ

મારા હૃદયમા વીર હો મહાવીર હો વીરતા હો (૧૨) ગુણુની ખાણરૂપ તપગચ્છના આચાર્ય પરમપવિત્ર ચારિત્રદેશક લોકમાન્ય શાત મૂર્તિ શ્રી વિજયકમલસૂરિ હતા (૧૩) તેની પાટપર શ્રી વિજયકેશરસૂરિ છે જેના લઘુ ગુરૂ બધુ શાતમૂર્તિ શ્રી વિનયવિજયજી મહારાજ છે (૧૪) શ્રી વિનયવિજયજી મહારાજના શિષ્ય શ્રી યશોવિજયજી જૈન ગુરૂકુલના સસ્થાપક બાલ બ્રહ્મચારી સ્વર્ગસ્થ પૂજ્ય મુનીશ્વર શ્રીમદ્ ચારિત્રવિજયજી મહારાજ થયા (૧૫) તેમના પદકમલમા શમામૃતને પીનાર ભમર સ જ્ઞાન રક્ત ભિક્ષુ દર્શનવિજયે સરલ બનાવી શ્લોક અને

વાળો આ બૃહદ્ શાંતિધારણાયંત્ર બનાવ્યો છે (૧૮) મનુષ્યોને આ યંત્રથી અનુક્રમ જ્ઞાન વિધિવાદ જિન પ્રતિષ્ઠા જિન પૂજા સમ્યગ્દર્શન ભાવના ચારિત્ર અને નિર્જરા પ્રાપ્ત થાઓ (૧૯) વી નિર્વાણ સં૦ ૨૪૫૬ ની આસો પુનમે સમ્મેતશિખરતીર્થમાં આ યંત્ર પૂરો કર્યો છે આ શાસ્ત્ર મુનિ જ્ઞાન વિજય મુનિ ન્યાય વિજયના મદદકારથી સફળ બન્યું છે તે જ્ઞાનિઓના આનંદ માટે જ્યાં સુધી મેરૂ પૃથ્વી અને ચંદ્ર છે ત્યાં સુધી ચિરકાલ રહો (૧૮૧૯)

દિનશુદ્ધિ દીપિકાની વિશ્વપ્રભા વિશ્વરચનાપ્રબંધ એકાક્ષરીકોષ વિનયસામુદ્રિક અને પૂજાઓ પછી આ ૧૨૦ શ્લોક પ્રમાણ ધારણાયંત્ર રચ્યો છે (૨૦) સંઘનું કલ્યાણ હો જૈન ધર્મનું મંગળ હો જ્ઞાનનું શ્રદ્ધાનું ભદ્ર હો દરેકનું શિવ હો (૨૧) ઇતિ બૃહદ્ધારણાયંત્ર શાસ્ત્ર સમાપ્ત

તા૦ ૨૬ ૧૦ ૩૧
શરદ પુનમ
૯૬, કેનીંગ સ્ટ્રીટ કલકત્તા

લી૦
મુનિ દર્શન વિજય